द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (**B.Ed.**) पाठ्यक्रम

शैक्षणिक सत्र 2015–2017

(As per NCTE Two Years B.Ed. Programme norms-2014)

(पाठ्यक्रम उद्देश्य, पाठ्यक्रम के मुख्य आधार, पाठ्यक्रम अभिकल्प, पाठ्यक्रम स्वरूप, संचालन नियम, क्रियान्वयन विधि, परीक्षा योजना, प्रश्न पत्र निर्माण एवं पाठ्य वस्तु)

शिक्षा संकाय

जगद्गुरू रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर

ग्राम–मदाऊ पो. भांकरोटा, जयपुर–302026

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (B.Ed.) पाठ्यक्रम उद्देश्य

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (बी.एड) पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य उच्च प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तरों की शिक्षा हेतु भाषा एवं विषय दक्षताओं व शिक्षाशास्त्रीय कौशलों से युक्त संस्कृत अध्यापकों को सृजित करना है। इस पाठ्यक्रम के अन्य कतिपय महत्वपूर्ण उद्देश्य निम्नलिखित हैं:–

- शिक्षा की प्रकृति एवं शिक्षाशास्त्रीय प्रक्रियाओं का ज्ञान प्रदान करना।
- शिक्षा के विविध परिप्रेक्ष्यों से परिचित कराना।
- संस्कृत वाङ्मयनिहित शिक्षणशास्त्रीय अवधारणाओं को स्पष्ट करना।
- विकास की प्रक्रिया तथा विभिन्न अवस्थाओं की आवश्यकताओं को पहचानने की योग्यता उत्पन्न करना।
- अधिगम की प्रक्रिया तथा अधिगमकर्ता के मनोविज्ञान को समझने की योग्यता विकसित करना।
- आवश्यकता के अनुरूप विभिन्न अधिगम विधियों के प्रयोग की दक्षता उत्पन्न करना।
- सामाजिक, सांस्कृतिक तथा भाषायी विविधता की दृष्टि से विभिन्न शैक्षिक–सन्दर्भों को समझने की योग्यता उत्पन्न करना।
- समसामयिक शैक्षिक नीतियों एवं समस्याओं के प्रति विवेचनात्मक दृष्टि विकसित करना।
- शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के प्रभावी संचालन तथा अपेक्षित सुधार के योग्य बनाना।
- शैक्षिक–प्रौद्योगिकी का ज्ञान प्रदान करना।
- भाषा कौशलों को विकसित करना।
- संस्कृत भाषा शिक्षण विधियों, प्रविधियों, युक्तियों एवं नवाचारों का ज्ञान प्रदान करना।
- विद्यालयीय शिक्षण विषयों–अंग्रेजी, हिन्दी, सामाजिक अध्ययन आदि के उपागमों प्रविधियों युक्तियों एवं नवाचारों का ज्ञान प्रदान करना।
- पाठ्यक्रम संचालन में भाषा–महत्ता को स्पष्ट करना।
- पाठ्यक्रम निर्माण प्रक्रिया का ज्ञान प्रदान करना।
- शिक्षण–अधिगम एवं विद्यालय प्रशासन सम्बन्धी समस्याओं के समाधानार्थ क्रियात्मक अनुसन्धान प्रक्रिया का ज्ञान कराना।
- नेतृत्व क्षमता का विकास करना।
- विद्यालय एवं क्षेत्र सम्बद्धता हेतु सह शैक्षणिक एवं सामाजिक गतिविधियों के आयोजन की योग्यता विकसित करना।
- राष्ट्रीय अभियान में प्रतिभागिता की प्रवृत्ति विकसित करना।

- पर्यावरण संरक्षण सम्प्रत्ययों से अवगत कराना तथा पर्यावरणीय संवेदनाओं को जाग्रत करना।
- सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी के प्रयोग का अभ्यास करवाना।
- शारीरिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में योग एवं स्वास्थ्य शिक्षा का अवबोध विकसित करना।
- शान्ति की अवधारणा का अवबोध विकसित करना, तथा मानवाधिकारों के प्रति संवेदशीलता उत्पन्न करना।
- अध्यापक शिक्षा के सिद्धान्त एवं प्रयोग की दूरियों को कम करने की योग्यता उत्पन्न करना।
- व्यावसायिक क्षमताओं का विकास करना।
- छात्राध्यापक व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास करना।

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री पाठ्यक्रम अभिकल्प के मुख्याधार

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री पाठ्यक्रम का अभिकल्पन मुख्य रूप से राष्ट्रीय अध्यापक परिषद् (NCTE) द्वारा प्रदत्त द्विवर्षीय बी.एड पाठ्यक्रम निर्माणकार्य (Curriculum Frame Work) के आधार पर किया गया है, जो निम्नलिखित हैः–

(अ) शैक्षिक परिपेक्ष्य (Perspectives in Education)

Course1	Childhood and Growing Up
Course2	Contemporary India and Education
Course3	Learning and Teaching
Course6	Gender, School and Society (1/2)
Course8	Knowledge and Curriculum
Course10	Creating an Inclusive School (1/2)

(ब) पाठ्यक्रम एवं शिक्षणशास्त्र अध्ययन (Curriculum and Pedagogic Studies)

Course4	Language across the Curriculum (1/2)
Course5	Understanding Disciplines and Subjects (1/2)
Course7(a & b)	Pedagogy of a School Subject
Course9	Assessment for Learning
Course11	Optional Course*(1/2)

(स) क्षेत्र सम्बद्धता–आत्मबोध, छात्रबोध, समाज एवं विद्यालय (Engagement with the field - the self, the child community and school)

* Tasks and Assignments that run through all the courses as indicated in the year wise distribution of the syllabus
* School Internship
* Courses on Enhancing Professional Capacities (EPC)

Course EPC 1:	Reading and Reflecting on Texts (1/2)
Course EPC 2:	Drama and Art in Education (1/2)
Course EPC 3:	Critical Understanding of ICT (1/2)
Course EPC 4:	Understanding the Self (1/2)

Note- (I) उपर्युक्त तीनों पाठ्यक्रम अभिकल्पन आधारों पर निर्दिष्ट अध्येयांशों (Courses) में पाठ्यक्रम को अभिकल्पित किया गया है।

(II) इनके अलावा पाठ्यक्रम में अनिवार्य शिक्षणशास्त्र के रूप में ''संस्कृत शिक्षण'' तथा संकेन्द्रिक परिप्रेक्ष्य के रूप में ''शिक्षा का दार्शनिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य'' व संकेन्द्रिक अनिवार्य विषय के रूप में'' विद्यालय प्रबंधन एवं नेतृत्व'', ''शैक्षिक तकनीकी'' और ''क्रियात्मक अनुसंधान'' नाम के प्रश्न पत्र सैद्धान्तिक भाग में समाहित किये गए हैं।

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (बी.एड.) पाठ्यक्रम अभिकल्प

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (बी.एड.) पाठ्यक्रम 2200 अंकों का है। इसकी क्रियान्विति दो शिक्षण सत्रों (प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष) में होगी। प्रत्येक वर्ष 1100 अंकों का होगा। इस पाठ्यक्रम के मुख्य घटक सैद्धान्तिक, विद्यालय सम्बद्धता (प्रायोगिक) तथा व्यावसायिक अभिक्षमता विकास (ई.पी.सी) है। इन मुख्य घटकों के कोर्स उनकी संख्या तथा कुल अंक निर्धारण – निम्नलिखित तालिका में वर्णित है :–

कुल अंक – 2200

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (बी.एड.) पाठ्यक्रम अभिकल्प

मुख्य घटक	कोर्स का नाम	कोर्स की संख्या	कुल अंक
(अ) सैद्धान्तिक (Theory)	(1) संकेन्द्रिक परिप्रेक्ष्य (Core Perspective-CP)	3	300
	(2) संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory-CC)	10	700
	(3) वैकल्पिक शिक्षणशास्त्र (Elective Pedagory-EP)	2	200
	(4) अनिवार्य शिक्षणशास्त्र (Compulsory Pedagogy)	1	100
(ब) विद्यालय–सम्बद्धता (School Internship)	(I) शिक्षणाभ्यास – (प्रायोगिक) (Teaching Practic)(Practical)	–	500
	(I I) विद्यालयीय गतिविधियाँ (School activities)	–	200
(स) प्रायोगिक–ई. पी.सी. (Practicum-E.P.C.)	प्रयोगिक कार्य (Practical)	–	200

पाठ्यक्रम स्वरूप

<table>
<tr><td colspan="7">शिक्षाशास्त्री (बी.एड) प्रथम वर्ष पाठ्यक्रम का स्वरूप
कुल अंक – 1100</td></tr>
<tr><td rowspan="2">प्रश्न पत्र सं. Paper No.</td><td rowspan="2">अध्येयांश कूट Course Code</td><td rowspan="2">प्रश्नपत्रों के नाम Title of the Papers</td><td rowspan="2">अध्येयांश श्रेणी Course Category</td><td colspan="3">मूल्यांकन Evalution</td></tr>
<tr><td>बाह्य External</td><td>आन्तरिक Internal</td><td>पूर्णांक Total Marks</td></tr>
<tr><td>I</td><td>s.s. 101</td><td>बाल्यावस्था एवं विकास प्रक्रिया</td><td>संकेन्द्रिक परिप्रेक्ष्य (Core Perspective)</td><td>80</td><td>20</td><td>100</td></tr>
<tr><td>II</td><td>s.s. 102</td><td>समसामयिक भारत एवं शिक्षा</td><td>संकेन्द्रिक परिप्रेक्ष्य (Core Perspective)</td><td>80</td><td>20</td><td>100</td></tr>
<tr><td>III</td><td>s.s. 103</td><td>अधिगम एवं शिक्षण प्रक्रिया</td><td>संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)</td><td>80</td><td>20</td><td>100</td></tr>
<tr><td>IV</td><td>s.s. 104</td><td>भाषा एवं पाठ्यक्रम</td><td>संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)</td><td>40</td><td>10</td><td>50</td></tr>
<tr><td>V</td><td>s.s. 105</td><td>अध्ययन क्षेत्र एवं विषय अवबोध</td><td>संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)</td><td>40</td><td>10</td><td>50</td></tr>
<tr><td>VI</td><td>s.s. 106</td><td>जेंडर विद्यालय एवं समाज</td><td>संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)</td><td>40</td><td>10</td><td>50</td></tr>
<tr><td>VII</td><td>s.s. 112</td><td>शिक्षा का दार्शनिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य</td><td>संकेन्द्रिक परिप्रेक्ष्य (Core Perspective)</td><td>80</td><td>20</td><td>100</td></tr>
<tr><td>VIII</td><td>s.s. 113</td><td>संस्कृत शिक्षण (अनिवार्य शिक्षणशास्त्र)</td><td>अनिवार्य शिक्षणशास्त्र (Compulsory Pedagogy)</td><td>80</td><td>20</td><td>100</td></tr>
<tr><td colspan="2" rowspan="2">विद्यालय सम्बद्धता (School Internship)</td><td colspan="2">(I) शिक्षण अभ्यास</td><td>125</td><td>125</td><td>250</td></tr>
<tr><td colspan="2">(II) विद्यालय गतिविधियाँ</td><td>50</td><td>50</td><td>100</td></tr>
<tr><td rowspan="2">ई.पी.सी. (EPC)–1</td><td colspan="3">(अ) संस्कृत संभाषण कौशल विकास</td><td>20</td><td>20</td><td>40</td></tr>
<tr><td colspan="3">(ब) पाठ्यवस्तु पठन एवं चिन्तन (ध्येय बिन्दुओं से सम्बद्ध)</td><td>20</td><td>20</td><td>40</td></tr>
<tr><td>ई.पी.सी. (EPC)–2</td><td colspan="3">शिक्षा में नाट्य एवं कला (शैक्षिक गतिविधियाँ)</td><td>10</td><td>10</td><td>20</td></tr>
</table>

* **EPC** (ई.पी.सी.) –**Enhancing Processional Capacities (व्यावसायिक अभिक्षमता विकास)।**

शिक्षाशास्त्री (बी.एड) द्वितीय वर्ष पाठ्यक्रम का स्वरूप

कुल अंक – 1100

प्रश्न पत्र सं. Paper No.	अध्येयांश कूट Course Code	प्रश्नपत्रों के नाम Title of the Papers	अध्येयांश श्रेणी Course Category	मूल्यांकन Evolution		
				बाह्य External	आन्तरिक Internal	पूर्णांक Total Marks
IX	s.s.107 (अ)–(ब)	विद्यालय विषय शिक्षण (छात्राध्यापकों को इनमें से किसी एक विद्यालय शिक्षण विषय का चयन करना होगा।	'चयनित शिक्षणशास्त्र' (Elective Pedagogy)	80	20	100
	1	हिन्दी शिक्षण		80	20	100
	2	अंग्रेजी शिक्षण		80	20	100
	3	सामाजिक अध्ययन शिक्षण		80	20	100
	4	नागरिक शास्त्र शिक्षण		80	20	100
	5	भूगोल शिक्षण		80	20	100
	6	इतिहास शिक्षण		80	20	100
	7	अर्थशास्त्र शिक्षण		80	20	100
	8	गृह विज्ञान शिक्षण		80	20	100
	9	गणित शिक्षण		80	20	100
X	S.S. 108	ज्ञान एवं पाठ्यक्रम	संकेन्द्रित अनिवार्य (Core Compulsory)	80	20	100
XI	S.S. 109	अधिगम आकलन	संकेन्द्रित अनिवार्य (Core Compulsory)	80	20	100
XII	S.S. 110	समावेशी शिक्षा	संकेन्द्रित अनिवार्य (Core Compulsory)	40	10	50
XIII	S.S. 111	विशिष्ट ऐच्छिक विषय (छात्राध्यापकों को इनमें से किसी एक विषय का चयन करना होगा)	विशिष्ट चयनित शिक्षण शास्त्र (Elective Special Pedagogy)	80	20	100
	1	शैक्षिक निर्देशन एवं उपबोधन		80	20	100
	2	मूल्य शिक्षा		80	20	100
	3	योग शिक्षा		80	20	100
	4	स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा		80	20	100
	5	शान्ति शिक्षा		80	20	100
	6	मानवाधिकार शिक्षा		80	20	100
	7	पर्यावरण शिक्षा		80	20	100
	8	ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड		80	20	100
XIV	S.S. 114	विद्यालय प्रबन्धन एवं नेतृत्व	संकेन्द्रित अनिवार्य (Core Compulsory)	80	20	100
XV	S.S. 115	शिक्षण अधिगम की तकनीकी	संकेन्द्रित अनिवार्य (Core Compulsory)	40	10	50
XVI	S.S. 116	शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान	संकेन्द्रित अनिवार्य (Core Compulsory)	40	10	50
विद्यालय सम्बद्धता (School Internship)		(I) शिक्षण अभ्यास		125	125	250
		(II) विद्यालय गतिविधियाँ		50	50	100
ई.पी.सी. (EPC)–3	सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी का अवबोध			20 (प्रायो.)	20	40
ई.पी.सी. (EPC)–4	(अ) छात्र व्यक्तित्व अवबोध			15	15	30
	(ब) आत्मबोध			15	15	30

*** EPC (ई.पी.सी.) – Enhancing Processional Capacities (व्यवसायिक अभिक्षमता विकास)।**

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (बी.एड.) पाठ्यक्रम संचालन सम्बन्धी नियम :–

1. **पाठ्यक्रम की प्रकृति :**– जगद्गुरू रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा संचालित द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री पाठ्यक्रम नियमित प्रकृति का है, इसे केवल नियमित छात्र के रूप में अध्ययन कर पूर्ण किया जा सकेगा।

2. **पाठ्यक्रम में प्रवेश** – जगद्गुरू रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा संचालित द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री पाठ्यक्रम में प्रवेश राजस्थान सरकार के आदेशानुसार प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली प्रवेश पूर्व शिक्षाशास्त्री परीक्षा (PSST) उत्तीर्ण अभ्यर्थियों को वर्गवार वरीयता के आधार पर ही दिया जा सकेगा।

   पाठ्यक्रम अवधि :– शिक्षाशास्त्री पाठ्यक्रम की अवधि दो अकादमिक वर्षों (Two Academic Years) की होगी।

3. **कार्य दिवस :**– नामांकन एवं परीक्षा अवधियों को छोड़कर दो सौ (200) कार्य दिवस प्रतिवर्ष होंगे।

4. **छात्र उपस्थिति :**– द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री पाठ्यक्रम के सभी अध्येयांशों (Courses) में 75% तथा विद्यालय सम्बद्धता, क्षेत्र सम्बद्धता एवं व्यासायिक अभिक्षमता विकास से सम्बन्धित गतिविधियों में 80% उपस्थिति अनिवार्य होगी।

5. **अध्यापन एवं परीक्षा का माध्यम :**– द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री पाठ्यक्रम में अध्येयांश कूट (Course Code) S.S. 113 के अन्तर्गत निर्दिष्ट अनिवार्य शिक्षणशास्त्र (Compulsory Pedagogy) अर्थात 'संस्कृत शिक्षण' विषय के अध्यापन एंव परीक्षा का माध्यम संस्कृत होगा। अन्य सभी अध्येयांशों (Courses) (अंग्रेजी शिक्षण को छोड़कर) का अध्यापन एवं परीक्षा माध्यम हिन्दी होगा।

6. **शिक्षण विषय :**–

   (i) द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री पाठ्यक्रम में तीन शिक्षण विषय होगें– (अ) संस्कृत शिक्षण, 'अनिवार्य शिक्षण–शास्त्र' (Compulsory Pedagogy), (ब) विद्यालय विषय शिक्षण 'वैकल्पिक शिक्षण–शास्त्र' (Elective Pedagogy) तथा (स) विशिष्ट चयनित शिक्षणशास्त्र (Spacial Elective Pedagogy)।

   (ii) संस्कृत शिक्षण सभी प्रशिक्षणार्थियों के लिए अनिवार्य होगा।

   (iii) विद्यालय विषय शिक्षण के अन्तर्गत परिगणित शिक्षण विषयों में से किसी एक का चयन चयनित शिक्षण शास्त्र के रूप में करना होगा।

   (iV) चयनित शिक्षण शास्त्र/विद्यालय शिक्षण विषय का चयन निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकेगा –

(v) शिक्षण विषय से अभिप्राय है, ऐसा विषय जो प्रशिक्षाणार्थीयों ने स्नातक/शास्त्री/बी.ए/अथवा स्नातकोत्तर/आचार्य परीक्षा में निरन्तर दो वर्ष तक (न्यूनतम दो वर्ष) अनिवार्य विषय/वैकल्पिक विषय अथवा सब्सिडरी विषय के रूप में पढ़ा हो। विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित परीक्षा भी दानों वर्षों में निरन्तर उत्तीण की हो। शिक्षण विषयों में ऐसे विषय सम्मिलित नहीं किये जायेंगे जिनका छात्र ने डिग्री पाठ्यक्रम के लिये आंशिक रूप से अध्ययन किया हो जैसे– सामान्य अंग्रेजी, सामान्य हिन्दी, सामान्य शिक्षा, भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास, प्रारम्भिक गणित आदि।

(vi) ऑनर्स स्नातक उत्तीर्ण विद्यार्थी के लिये भी संस्कृत ऑनर्स विषय के साथ सब्सिडरी विषय भी दो वर्ष तक पढ़ा होना चाहिये और विश्वविद्यालय ने प्रतिवर्ष इस विषय की परीक्षा ली हो।

(vii) जिन छात्रों ने स्नातक उपाधि अथवा शास्त्री उपाधि परीक्षा इतिहास, राजनीति–विज्ञान, लोक प्रशासन, अर्थशास्त्र, भूगोल, समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र, और मनोविज्ञान विषयों में से कोई दो विषय लेकर उत्तीर्ण की है उन्हें शिक्षाशास्त्री परीक्षा हेतु समााजिक–अध्ययन विषय लेने की अनुमति होगी।

(viii) बी.ए., शास्त्री अथवा स्नातकोत्तर उपाधि परीक्षा में जिन्होंने राजनीति–विज्ञान अथवा लोक प्रशासन विषय लिया हो, ऐसे अभ्यर्थी शिक्षाशास्त्री परीक्षा हेतु नागरिक शास्त्र विषय अपने शिक्षण विषय के रूप में लेने के पात्र होंगे ।

(ix) विशिष्ट चयनित शिक्षणशास्त्र के अन्तर्गत परिगणित विषयों में से किसी एक विषय का चयन विशिष्ट शिक्षणशास्त्र के रूप में प्रत्येक छात्र को करना होगा।

(x) अनिवार्य शिक्षणशास्त्र तथा चयनित शिक्षणशास्त्र(अर्थात् संस्कृत शिक्षण एवं चयनित विद्यालय विषय) इन दोनों विषयों में दैनिक शिक्षण अभ्यास एवं वाह्य प्रायोगिक परिक्षा होगी, किन्तु विशिष्ट चयनित शिक्षणशास्त्र से सम्बन्धित विषय में दैनिक शिक्षण अभ्यास एवं वाह्य प्रायोगिक परिक्षा नहीं होगी।

7. वार्षिक परीक्षा में प्रवेश अर्हता :– जिन शिक्षाशास्त्री प्रशिक्षणार्थियों ने द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री पाठ्यक्रम के सभी अध्येयांशो (Courses) को वर्षवार 80% एवं विद्यालय सम्बद्धता, क्षेत्र सम्बद्धता व व्यासायिक अभिक्षमता विकास से सम्बन्धित प्रायोगिक कार्यों को वर्षवार 90% उपस्थिति के साथ पूर्ण किया हो तथा समस्त सत्रीय कार्य/दत्त कार्य आदि यथासमय पूर्ण कर प्रतिवेदन प्रस्तुत किये हों, ऐसे प्रशिक्षणार्थी ही द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री के प्रथम वर्ष या द्वितीय वर्ष की वार्षिक परीक्षा में प्रवेश के लिए अर्ह (पात्र) होंगे।

8. **परीक्षा व स्वरूप** :– द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री पाठ्यक्रम की परीक्षा प्रतिवर्ष दो भागो में आयोजित होगी। प्रथम भाग सैद्धान्तिक प्रश्न पत्रों का होगा तथा द्वितीय भाग

विद्यालय सम्बद्धता, क्षेत्र सम्बद्धता तथा व्यावसायिक अभिक्षमता विकास, (E.P.C), से सम्बन्धित प्रायोगिक होगा।

9. **<u>अनुत्तीर्णता एवं अनुपस्थिति</u>** :–

(अ) यदि कोई छात्र सैद्धान्तिक प्रश्नपत्रों में से किसी एक विषय में प्रथम वर्ष में अनुत्तीर्ण हो जाता है और उसके अन्य विषयों के प्राप्तांक 48% या उससे अधिक हैं तो वह उस एक विषय की परीक्षा द्वितीय वर्ष की वार्षिक परीक्षा के साथ दे सकेगा। प्रशिक्षणार्थी के इस प्रश्न पत्र में उत्तीर्ण होने पर 45% अंक ही उसकी अंकतालिका में जोड़े जायेगें, वास्तविक प्राप्तांक नहीं जोड़े जायेगें। प्रशिक्षणार्थी के इस प्रश्न पत्र में पुनः अनुत्तीर्ण रहने की स्थिति में अगले सत्र में विभक्त छात्र के रूप में एक और प्रयास का अवसर दिया जा सकेगा।

(ब) यदि कोई छात्र विद्यालय सम्बद्धता से सम्बन्धित अध्यापन अभ्यास प्रायोगिक परीक्षा में या अन्य गतिविधियों में अनुत्तीर्ण हो जाता है तो वह आगामी सत्र में सम्बन्धित वर्ष के छात्रों के साथ दो माह (08 सप्ताह) तक नियमित छात्र के रूप में उपस्थिति देकर समस्त प्रायोगिक कार्यो को सम्पन्न करने के पश्चात् ही आगामी सत्र की प्रायोगिक परीक्षा में प्रविष्ट हो सकेगा।

(स) यदि कोई शिक्षाशास्त्री प्रथम वर्ष या द्वितीय वर्ष का छात्र नियमित रूप से पाठ्यक्रम पूर्ण कर लेता है, किन्तु अपरिहार्य कारण से सैद्धान्तिक परीक्षा में सम्मिलित नहीं हो पाता या द्वितीय वर्ष की सैद्धान्तिक परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाता है तो वह आगामी सत्र के सम्बन्धित वर्ष (प्रथमवर्ष/द्वितीयवर्ष) की सैद्धान्तिक परीक्षा में भूतपूर्व छात्र (Ex-Student) के रूप में सम्मिलित हो सकता है।

(द) कोई भी छात्र भूतपूर्व छात्र के रूप में दो प्रयासों के बाद शिक्षाशास्त्री की परीक्षा में प्रविष्ट नहीं हो सकेगा। दोनों प्रयासों में असफल तथा शिक्षाशास्त्री अनुत्तीर्ण छात्रों को शिक्षाशास्त्री प्रवेश पूर्व परीक्षा (P.S.S.T.) के माध्यम से पुनः द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्र पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष में प्रवेश दिया जा सकेगा।

पाठ्यक्रम क्रियान्वयन विधि :—

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री (बी.एड.) पाठ्यक्रम के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु निम्नलिखित विधियों का यथा अवसर प्रयोग किया जाएगा :—

(i) **व्याख्यान विधि** (Lecture Method) :— इस विधि का प्रयोग संवादपरकता के साथ किया जाएगा। जिससे अध्यापन में छात्र केन्द्रिता बनी रहे तथा छात्रों की विषय—विश्लेषण योग्यता एवं अभिव्यक्ति कौशल का विकास किया सके।

(ii) **संगोष्ठी** :— (Seminar) इस विधि द्वारा पाठ्क्रम में निर्धारित विभिन्न विषय सन्दर्भ तथा विद्यालयस्तरीय समसामयिक समस्याओं पर छात्रों के स्वतंत्र चिन्तन शक्ति तथा अभिव्यक्ति कौशल का विकास किया जायेगा।

(iii) **परिचर्चा (Discussion)** :— इस पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन में परिचर्चा विधि का भी प्रयोग दो प्रकार से किया जायेगा—युग्म परिचर्चा एवं समूह परिचर्चा युग्म परिचर्चा के अन्तर्गत छात्रों के युग्म (जोड़े) बनाकर तथा समूह परिचर्चा में कक्षा को छोटे समूहों में बाँटकर शिक्षक द्वारा दिये गये विषय पर चर्चा सम्पन्न करवायी जायेगी। इससे छात्रों में विषय का संश्लेषण, एवं मूल्यांकन करने से सम्बन्धी दक्षताओं का विकास होगा।

(iV) **दत्त कार्य (Assignment)** :— इस विधि का प्रयोग छात्रों की लिखित अभिव्यक्ति—मुख्य रूप से विषय का अवबोध, विश्लेषण, संश्लेषण मूल्यांकन तथा समीक्षा से सम्बन्धित क्षमताओं के विकास करने हेतु किया जायेगा।

(V) **प्रश्नोत्तरी (QUIZ)** :— इस विधि का प्रयोग इकाई समापन एवं कक्षा शिक्षण के समय किया जायेगा। इसमें कक्षा छात्रों के विभिन्न समूहों के समक्ष शिक्षण विषय की इकाईयों से सम्बन्धित वस्तुनिष्ठ प्रश्न अध्यापक द्वारा प्रस्तुत करके प्रश्नोत्तरी के रूप में इसे सम्पन्न किया जायेगा।

(VI) **विचारावेश (Brinstorming)** :— इस रचनाकौशल का प्रयोग छात्रों के सृजनात्मक समाधान योग्यता विकास हेतु किया जाता है। अतः कक्षा स्तर पर पाठ्यक्रम में निर्धारित विभिन्न विषयों से सम्बन्धित समस्याओं का समाधान ढूंढने हेतु इसका प्रयोग किया जायेगा।

(VII) **इकाई परीक्षण (Unit Test)** :— पाठ्यक्रम में निर्धारित विभिन्न विषयों से सम्बन्धित इकाईयों के समापन के पश्चात वस्तुनिष्ठ एवं लघूत्तरीय प्रश्नों पर आधारित मौखिक या लिखित परीक्षण छात्र के अवबोध परीक्षण हेतु किया जायेगा।

(VIII) **परियोजना विधि (Project Method) :–** इस विधि द्वारा पाठ्यक्रम में निर्धारित विभिन्न विषयों से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान पर आधारित परियोजना निर्माण व कार्य करवाये जायेंगे।

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री परीक्षा योजना

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री परीक्षा प्रत्येक वर्ष के दो भागों में आयोजित होगी। भाग प्रथम सैद्धान्तिक प्रश्न पत्रों का तथा भाग द्वितीय प्रायोगिक होगा। प्रायोगिक भाग में (अ) विद्यालय सम्बद्धता–के दो भाग होंगे– (I) शिक्षण अभ्यास प्रायोगिक (II) विद्यालयीय गतिविधियाँ तथा (ब) व्यावसायिक अभिक्षमता विकास से सम्बन्धित प्रायोगिक होगा।

भाग प्रथम

1 **सैद्धान्तिक** :–

(अ) द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री सैद्धान्तिक परीक्षा के प्रथम वर्ष में आठ (08) प्रश्न पत्र और द्वितीय वर्ष में भी आठ (08) प्रश्न पत्र होंगे ।

(ब) सैद्धान्तिक प्रश्न–पत्रों में से एक सौ (100) पूर्णांक वाले प्रत्येक प्रश्न–पत्रों में अस्सी (80) अंक बाह्य लिखित परीक्षा हेतु तथा बीस (20)अंक आन्तरिक मूल्यांकन हेतु निर्धारित होंगे।

(स) सैद्धान्तिक प्रश्न पत्रों में से पचास (50) पूर्णांक वाले प्रत्येक प्रश्न–पत्रों में चालीस (40) अंक बाह्य लिखित परीक्षा हेतु तथा दस (10)अंक आन्तरिक मूल्यांकन हेतु निर्धारित होंगे।

(द) एक सौ (100) पूर्णांक वाले प्रश्न–पत्रों की लिखित परीक्षा अवधि तीन (03) घंटे होगी तथा पचास (50) पूर्णांक वाले प्रश्न–पत्रों की लिखित परीक्षा अवधि दो (02) घंटे होगी।

स्पष्टता हेतु वर्षवार सैद्धान्तिक प्रश्न पत्रों का विवरण :–

शिक्षाशास्त्री (बी.एड) प्रथम वर्ष के सैद्धान्तिक प्रश्न पत्रों का विवरण							
प्रश्न पत्र सं. Paper No.	अध्येयांश कूट Course Code	प्रश्नपत्रों के नाम Title of the Papers	अध्येयांश श्रेणी Course Category	मूल्यांकन Evalution			
				लिखित परीक्षा अवधि Written EXM. TIME	बाह्य External	आन्तरिक Internal	पूर्णांक Total Marks
I	s.s. 101	बाल्यावस्था एवं विकास प्रक्रिया	संकेन्द्रिक परिप्रेक्ष्य (Core Perspective)	3.00 घंटे	80	20	100
II	s.s. 102	समसामयिक भारत एवं शिक्षा	संकेन्द्रिक परिप्रेक्ष्य (Core Perspective)	3.00 घंटे	80	20	100
III	s.s. 103	अधिगम एवं शिक्षण प्रक्रिया	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)	3.00 घंटे	80	20	100
IV	s.s. 104	भाषा एवं पाठ्यक्रम	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)	2.00 घंटे	40	10	50
V	s.s. 105	अध्ययन क्षेत्र एवं विषय अवबोध	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)	2.00 घंटे	40	10	50
VI	s.s. 106	जेंडर विद्यालय एवं समाज	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)	2.00 घंटे	40	10	50
VII	s.s. 112	शिक्षा का दार्शनिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य	संकेन्द्रिक परिप्रेक्ष्य (Core Perspective)	3.00 घंटे	80	20	100
VIII	s.s. 113	संस्कृत शिक्षण (अनिवार्य शिक्षणशास्त्र)	अनिवार्य शिक्षणशास्त्र (Compulsory Pedagogy)	3.00 घंटे	80	20	100
						कुल योग	650

शिक्षाशास्त्री (बी.एड) द्वितीय वर्ष के सैद्धान्तिक प्रश्न पत्रों का विवरण

प्रश्न पत्र सं. Paper No.	अध्येयांश कूट Course Code	प्रश्नपत्रों के नाम Title of the Papers	अध्येयांश श्रेणी Course Category	लिखित परीक्षा अवधि Written EXM. TIME	मूल्यांकन Evolution		
					बाह्य External	आन्तरिक Internal	पूर्णांक Total Marks
IX	s.s.107 (अ)–(ब)	विद्यालय विषय शिक्षण (छात्राध्यापकों को इनमें से किसी एक विद्यालय शिक्षणशास्त्र का चयन करना होगा।	'चयनित शिक्षणशास्त्र' (Elective Pedagogy)	3.00 घंटे	80	20	100
	1	हिन्दी शिक्षण		3.00 घंटे	80	20	100
	2	अंग्रेजी शिक्षण		3.00 घंटे	80	20	100
	3	सामाजिक अध्ययन शिक्षण		3.00 घंटे	80	20	100
	4	नागरिक शास्त्र शिक्षण		3.00 घंटे	80	20	100
	5	भूगोल शिक्षण		3.00 घंटे	80	20	100
	6	इतिहास शिक्षण		3.00 घंटे	80	20	100
	7	अर्थशास्त्र शिक्षण		3.00 घंटे	80	20	100
	8	गृह विज्ञान शिक्षण		3.00 घंटे	80	20	100
	9	गणित शिक्षण		3.00 घंटे	80	20	100
X	s.s. 108	ज्ञान एवं पाठ्यक्रम	संकेन्द्रित अनिवार्य (Core Compulsory)	3.00 घंटे	80	20	100
XI	s.s. 109	अधिगम आकलन	संकेन्द्रित अनिवार्य (Core Compulsory)	3.00 घंटे	80	20	100
XII	s.s. 110	समावेशित शिक्षा	संकेन्द्रित अनिवार्य (Core Compulsory)	2.00 घंटे	40	10	50
XIII	s.s. 111	विशिष्ट ऐच्छिक विषय (छात्राध्यापकों को इनमें से किसी एक विषय का चयन करना होगा)	विशिष्ट चयनित शिक्षण शास्त्र (Elective Special Pedagogy)	3.00 घंटे	80	20	100
	1	शैक्षिक निर्देशन एवं उपबोधन		3.00 घंटे	80	20	100
	2	मूल्य शिक्षा		3.00 घंटे	80	20	100
	3	योग शिक्षा		3.00 घंटे	80	20	100
	4	स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा		3.00 घंटे	80	20	100
	5	शान्ति शिक्षा		3.00 घंटे	80	20	100
	6	मानवाधिकार शिक्षा		3.00 घंटे	80	20	100
	7	पर्यावरण शिक्षा		3.00 घंटे	80	20	100
	8	ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड		3.00 घंटे	80	20	100
XIV	s.s. 114	विद्यालय प्रबन्धन एवं नेतृत्व	संकेन्द्रित अनिवार्य (Core Compulsory)	3.00 घंटे	80	20	100
XV	s.s. 115	शिक्षण अधिगम की तकनीकी	संकेन्द्रित अनिवार्य (Core Compulsory)	2.00 घंटे	40	10	50
XVI	s.s. 116	शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान	संकेन्द्रित अनिवार्य (Core Compulsory)	2.00 घंटे	40	10	50
					कुल योग		650

प्रश्न पत्र निर्माण–

(अ) 80 पूर्णांक वाले सैद्धान्तिक प्रश्न–पत्रों का निर्माण :–

(शि.शा.प्र.वर्ष में प्रश्न पत्र – I, II, III, VII व VIII **तथा शि.शा.द्वि.वर्ष में प्रश्न पत्र** – IX, X, XI, XIII व XIV 80 पूर्णांक के हैं।)

(I) प्रत्येक प्रश्न–पत्र के तीन भाग होंगे–अ,ब और स ।

(II) भाग 'अ' में 05 अतिलघूत्तरात्मक अनिवार्य प्रश्न होंगे । प्रत्येक प्रश्न 02 अंक का होगा।

(III) भाग 'ब' में 05 लघूत्तरात्मक अनिवार्य प्रश्न होंगे । प्रत्येक प्रश्न 04 अंक का होगा।

(IV) भाग 'स' में आंतरिक विकल्प वाले 05 निबन्धात्मक प्रश्न होंगे और प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का होगा। इस प्रकार 80 पूर्णांक वाले प्रश्न पत्रों में तीनों भागों को मिलाकर कुल 15 प्रश्न होंगे ।

(V) अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नों का उद्देश्य तथ्यात्मक ज्ञान की जाँच करना होगा। ऐसे प्रश्नों की उत्तर सीमा पन्द्रह से बीस (15–20) शब्दों की होगी।

(VI) लघूत्तरात्मक प्रश्नों का उद्देश्य सम्प्रत्यय, परिभाषा, नियम सिद्धान्तों के अनुप्रयोग आदि की जाँच करना होगा। ऐसे प्रश्नों की उत्तर सीमा एक पृष्ठ होगी।

(VII) निबन्धात्मक प्रश्नों का उद्देश्य प्ररिप्रेक्ष्य–ज्ञान, आलोचनात्मक दृष्टिकोण, सिद्धान्तों के अनुप्रयोग आदि की जाँच करना होगा। जो सैद्धान्तिक पक्ष से सम्बन्धित होंगे।

(VIII) केवल विषयवस्तु (Content) पर आधारित कोई भी प्रश्न नहीं होगा। प्रत्येक प्रश्न विधियों (Methodology) के अनुप्रयोग से जोड़कर बनाया जायेगा।

(IX) शिक्षाशास्त्री प्रथम वर्ष प्रश्न पत्र संख्या आठ (08) एवं शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष प्रश्न पत्र संख्या नौ (09) क्रमशः अनिवार्य शिक्षणशास्त्र तथा विद्यालय विषय शिक्षणशास्त्र के हैं। इनमें विषयवस्तु एवं शिक्षण विधियों को महत्व दिया जाएगा। विषयवस्तु माध्यमिक तथा उच्चमाध्यमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम के ज्ञान से सम्बद्ध होगा।

स्पष्टता हेतु प्रश्न पत्र का स्वरूप विवरण :–

सैद्धान्तिक पत्रों हेतु प्रश्नपत्र का स्वरूप

(Structure of the Question paper for Theory Papers)

कुल अंक = 100

(Totel Marks)

80 अंक = बाह्य (लिखित परीक्षा)

80 Marks = External (Written Examination)

20 अंक = आन्तरिक (सत्रीय कार्य)

20 Marks = Internal (Sessional Work)

समय – 3 घंटे

लिखित परीक्षा हेतु प्रश्न स्वरूप

पूर्णांक – 80

प्रश्न का स्वरूप (Form of the Question)	प्रश्न प्रकार (Type of Question)	प्रश्नों की संख्या (No.of Questions)	प्रश्न / अंक (Question /Marks)	कुल अंक (Total Marks)
(अ) अनिवार्य (Compulsory)	अतिलघूत्तरात्मक In (15–20) Words	5 (प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न) (One Question from each unit)	05 प्रश्न / 02 अंक	5 (प्रश्न)x2(अंक) = 10
(ब) अनिवार्य (Compulsory)	लघूत्तरात्मक (Short Answer)	5 (प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न) (One Question from each unit)	05 प्रश्न / 04 अंक	5 (प्रश्न)x4(अंक) = 20
(स) आन्तरिक विकल्प (Internal Choice)	निबन्धात्मक) (Essy Tipe)	5 (प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न) (Two Question from each unit)	05 प्रश्न / 10 अंक	5 (प्रश्न)x10(अंक) = 50
			कुल अंक (Total Marks)	80 अंक

(ब) चालीस (40) पूर्णांक वाले सैद्धान्तिक प्रश्न पत्रों का निर्माण :–

(शि.शा.प्र.वर्ष में प्रश्न पत्र – IV , V व VI **तथा शि.शा.द्वि.वर्ष में प्रश्न पत्र –** XII , XV व XVI 40 पूर्णांक के हैं।)

(I) प्रत्येक प्रश्न–पत्र के तीन भाग होंगे–अ,ब और स ।

(II) भाग 'अ' में 05 अतिलघूत्तरात्मक अनिवार्य प्रश्न होंगे । प्रत्येक प्रश्न 02 अंक का होगा।

(III) भाग 'ब' में 03 लघूत्तरात्मक अनिवार्य प्रश्न होंगे । प्रत्येक प्रश्न 03 अंक का होगा।

(IV) भाग 'स' में आंतरिक विकल्प वाले 03 निबन्धात्मक प्रश्न होंगे और प्रत्येक प्रश्न 07 अंक का होगा। इस प्रकार 40 पूर्णांक वाले प्रश्न पत्रों में तीनों भागों को मिलाकर कुल 11 प्रश्न होंगे ।

(V) अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नों का उद्देश्य तथ्यात्मक ज्ञान की जाँच करना होगा। ऐसे प्रश्नों की उत्तर सीमा पन्द्रह से बीस (15–20) शब्दों की होगी।

(VI) लघूत्तरात्मक प्रश्नों का उद्देश्य सम्प्रत्यय, परिभाषा, नियम सिद्धान्तों के अनुप्रयोग आदि की जाँच करना होगा। ऐसे प्रश्नों की उत्तर सीमा एक पृष्ठ होगी।

(VII) निबन्धात्मक प्रश्नों का उद्देश्य विषय बोध, आलोचनात्मक दृष्टिकोण, सिद्धान्तों के अनुप्रयोग आदि की जाँच करना होगा। जो सैद्धान्तिक पक्ष से सम्बन्धित होंगे ।

(VIII) केवल विषयवस्तु (Content) पर आधारित कोई भी प्रश्न नहीं होगा–प्रत्येक प्रश्न विधियों (Methodology) के अनुप्रयोग से जोड़कर बनाया जायेगा।

सैद्धान्तिक पत्रों हेतु प्रश्नपत्र का स्वरूप

(Structure of the Question paper for Theory Papers)

कुल अंक = 50

(Totel Marks)

40 अंक = बाह्य (लिखित परीक्षा)

40 Marks = External (Written Examination)

10 अंक = आन्तरिक (सत्रीय कार्य)

10 Marks = Internal (Sessional Work)

समय – 2 घंटे **लिखित परीक्षा हेतु प्रश्न स्वरूप** पूर्णांक – 40

प्रश्न का स्वरूप (Form of the Question)	प्रश्न प्रकार (Type of Question)	प्रश्नों की संख्या (No.of Questions)	प्रश्न/अंक (Question /Marks)	कुल अंक (Total Marks)
(अ) अनिवार्य (Compulsory)	अतिलघूत्तरात्मक In (15–20) Words	5 (प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न) (One Question from each unit)	05 प्रश्न/02 अंक	5 (प्रश्न)x2(अंक) = 10
(ब) अनिवार्य (Compulsory)	लघूत्तरात्मक (Short Answer)	3 (प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न) (One Question from each unit)	03 प्रश्न/03 अंक	3 (प्रश्न)x3(अंक) = 09
(स) आन्तरिक विकल्प (Internal Choice)	निबन्धात्मक) (Essy Tipe)	3 (प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न) (One Question from each unit)	03 प्रश्न/07 अंक	3 (प्रश्न)x07(अंक) = 21
कुल अंक (Total Marks)				40 अंक

भाग द्वितीय

2 . प्रायोगिक :–

द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री पाठ्यक्रम के प्रायोगिक भाग में आयोज्य विद्यालय सम्बद्धता सम्बन्धी कार्य एवं व्यवसायिक अभिक्षमता विकास (ई.सी.पी.) कार्य संगठन एवं कियान्वयन :–

(अ) विद्यालय सम्बद्धता

(I) शिक्षण अभ्यास सम्बन्धी निर्देश :–

- राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के निर्देशानुसार विद्यालय सम्बद्धता (School Internship) कार्यक्रम का आयोजन चार माह (16सप्ताह) की अवधि के लिए किया जाएगा।
- इसे क्रमशः द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री के प्रथम वर्ष में दो माह (8सप्ताह) तथा द्वितीय वर्ष में दो माह (8सप्ताह) की अवधि में आयोजित किया जाएगा।
- शिक्षाशास्त्री प्रथम एंव द्वितीय दोनों ही वर्षो में प्रथम दो (02) सप्ताह तथा अन्तिम दो (02) सप्ताह विद्यालयीय गतिविधियों से सम्बन्धित कार्य करवाये जाएगें तथा मध्य के चार (04) सप्ताह में दैनिक शिक्षण अभ्यास एंव समालोचना पाठ सम्पन्न करवाये जाएगें।
- प्रत्येक प्रशीक्षणार्थी को अनिवार्य शिक्षणशास्त्र (संस्कृत शिक्षण) के पैंतीस (35) पाठों और चयनित विद्यालय विषय शिक्षणशास्त्र के पैंतीस (35) पाठों का दैनिक शिक्षण अभ्यास करना अनिवार्य होगा। तथा दोनों शिक्षण विषयों में एक–एक समालोचना पाठ भी देने होंगे।
- दोनों शिक्षण विषयों में पचीस–पचीस (25–25) पाठ पर्यवेक्षित होना अनिवार्य है।
- इस प्रकार कुल सत्तर (70) दैनिक पाठों का शिक्षण अभ्यास आठ (08) सप्ताह के विद्यालय सम्बद्धता अवधि में अर्थात् शिक्षाशास्त्री प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष में क्रमशः चार–चार (04–04)सप्ताह के अवधियों में पूर्ण किया जा सकेगा।
- दोनों शिक्षण विषयों का पृथक–पृथक दैनिक शिक्षण अभ्यास एवं बाह्य प्रायोगिक परीक्षा अनिवार्य होगी तथा शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष में ई.पी.सी.–3 की भी बाहय प्रायोगिक परीक्षा अनिवार्य होगी।
- संस्कृत शिक्षणशास्त्र के दैनिक शिक्षण अभ्यास एवं बाह्य प्रायोगिक परीक्षा का आयोजन शिक्षाशास्त्री प्रथम वर्ष में तथा विद्यालय विषय शिक्षणशास्त्र के दैनिक शिक्षण अभ्यास एवं बाह्य प्रायोगिक परीक्षा तथा ई.पी.सी.–3 की बाहय प्रायोगिक परीक्षा का आयोजन शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष में किया जा सकेगा।
- सम्पूर्ण प्रायोगिक कार्य का आन्तरिक मूल्यांकन विभागाध्यक्ष/महाविद्यालय का प्राचार्य अपने वरिष्ठ सहयोगी सदस्यों के सहयोग से तैयार करेगा तथा आंतरिक मूल्यांकन के अंक विश्वविद्यालय को प्रतिवर्ष बाह्य प्रायोगिक परीक्षा से पूर्व प्रेषित करेगा।
- आन्तरिक प्रायोगिक कार्य सम्पन्न करवाने का सम्पपूर्ण उत्तरदायित्व विभागाध्यक्ष/प्राचार्य का होगा।
- बाह्य प्रायोगिक परीक्षा हेतु प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को दोनों शिक्षण विषयों के पाठ सहायक सामग्री सहित तैयार करने होंगे।
- बाह्य परीक्षक की नियुक्ति संकाय सदस्यों के परामर्श से तैयार की गई **बाह्य परीक्षक सूची** में से माननीय कुलपति महोदय की अनुशंसा पर की जा सकेगी।
- **बाह्य प्रायोगिक परीक्षा का आयोजन** :– बाह्य प्रायोगिक परीक्षा चार कार्य दिवसों में वर्षवार(प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष में) निम्नलिखित प्रकार से आयोजित की जाएगी –
  प्रथम दिवस – शिक्षणाभ्यास तथा पाठों का प्रायोगिक परीक्षण (अधिकतम 40 पाठों का प्रायो.परीक्षण)।
  द्वितीय दिवस – शेष पाठों की प्रायोगिक परीक्षण एवं मूल्यांकन।
  तृतीय दिवस – विद्यालय गतिविधि सम्बन्धी अभिलेख परीक्षण एवं मौखिकी तथा मूल्यांकन।
  चतुर्थ दिवस – ई.पी.सी. – 1, 2 एवं 4 सम्बन्धी अभिलेख परीक्षण एवं मौखिकी तथा मूल्यांकन।

नोट : – शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष में ई.पी.सी.–3 की प्रायोगिक परीक्षा पृथक् से (विद्यालय विषयों की प्रायोगिक परीक्षा दिवसों को छोड़कर) आयोजित की जा सकेगी।

(II) विद्यालयीय गतिविधियों का विवरण :–

- विद्यालय सम्बद्ध गतिविधियों के अन्तर्गत निम्नलिखित गतिविधियाँ आयोजित की जा सकती हैं।
- प्रातः कालीन सभा में भाग लेना।
- समय सारिणी का निर्माण।
- विद्यालय अभिलेख पञ्जिकाओं का निर्माण।
- शिक्षक अभिभावक सम्मेलन में सहभागिता एवं प्रतिवेदन।
- विद्यालयीय प्रशासन एंव प्रबन्धन में सहयोग तथा स्वानुभव अभिलेख।
- विविध राष्ट्रीय अभियानों में सक्रिय प्रतिभागिता।
- विद्यालय पुस्तकालय संधारण एवं संचालन व प्रतिवेदन।
- संस्कृत संभाषण शिविर आयोजन।
- विद्यालयीय उत्सवों एंव समारोहों सहभागिता व प्रतिवेदन।
- वृक्षारोपण कार्यक्रम में सहभागिता ।
- विद्यालयीय/विश्वविद्यालयीय/महाविद्यालयीय स्वच्छता एवं सौन्दर्यीकरण कार्यक्रमों में सहभागिता।
- विश्वविद्यालयीय/महाविद्यालयीय/विभागीय उत्सवों एवं कार्यक्रमों में सहभागिता व प्रतिवेदन लेखन।
- छात्र निर्देशन एंव उपबोधन कार्यक्रम में सहभागिता।
- विश्वविद्यालयीय/महाविद्यालयीय/विभागीय स्तर पर राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रमों में सहभागिता एवं प्रतिवेदन लेखन।
- शिक्षण सामग्री आधारित प्रदर्शनी का आयोजन।
- जन जागरूकता हेतु नाट्य कार्यक्रमों का आयोजन।
- राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम संचालन एंव प्रतिवेदन लेखन।
- वार्षिक खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन एवं प्रतिवेदन लेखन।

विद्यालयीय गतिविधियों का चयन एवं मूल्यांकन :—

(I) उपर्युक्त गतिविधियों में से पाँच (05) गतिविधियों में सम्बद्ध विद्यालय स्तर तथा पाँच (05) गतिविधियों में सम्बद्ध विश्वविद्यालय/विभाग/महाविद्यालय स्तर पर सक्रिय सहभागिता तथा प्रतिवेदन लेखन सभी प्रशिक्षणार्थियों के लिए अनिवार्य होगा।

(II) गतिविधियों का निर्धारण सम्बद्ध शिक्षा विभाग/ शिक्षा महाविद्यालय के अध्यक्ष/प्राचार्य अपने वरिष्ठ सहयोगी अध्यापक तथा अन्य सम्बद्ध शिक्षकों के परामर्श से करेगें व आन्तरिक मूल्यांकन भी अपने वरिष्ठ सहयोगी अध्यापक एवं अन्य सम्बद्ध शिक्षकों के परामर्श से करेगें।

(III) विद्यालयीय गतिविधियाँ प्रतिवर्ष 100 अंको की होंगी। 50 अंक आन्तरिक अंक और 50 अंक बाह्य। इनका मूल्यांकन गतिविधियों के वीक्षण, सम्बन्धित पञ्जिकाओं एवं अभिलेखों के अवलोकन व मौखिक परीक्षा द्वारा किया जाएगा।

(ब) व्यावसायिक अभिक्षमता विकास (ई.पी.सी.) का विवरण :–

- व्यावसायिक अभिक्षता विकास (ई.पी.सी.) हेतु ई.पी.सी.– 1 (EPC-1), ई.पी.सी.– 2 (EPC-2), ई.पी.सी.–3 (EPC-3) व ई.पी.सी.– 4 (EPC-4) से परियोजना कार्य तथा सत्रीय कार्य दिये जाएंगे तथा इनसे सम्बद्ध गतिविधियों को छात्र सहभागिता से आयोजित करना अनिवार्य होगा।
- व्यावसायिक अभिक्षता विकास (ई.पी.सी.) निर्धारित गतिविधियों के अनुरूप प्रतिवर्ष प्रतिवर्ष 100 अंको का होगा। इनका मूल्यांकन गतिविधियों के वीक्षण, सम्बन्धित पञ्जिकाओं एवं अभिलेखों के अवलोकन व मौखिक परीक्षा द्वारा किया जाएगा।
- इसका मूल्यांकन प्रशक्षिणार्थियों के क्षेत्र सम्बद्ध गतिविधियों के प्रेक्षण, सम्बन्धित पञ्जिकाओं, अभिलेखों एवं प्रतिवेदन के अवलोकन व मौखिक परीक्षा द्वारा किया जा सकेगा।

प्रयोगिक कार्य का अंक विभाजन :–

(अ) विद्यालय सम्बद्धता (school Internship)

(I) **शिक्षण अभ्यास**	**500 अंक**
शिक्षाशास्त्री प्रथम वर्ष –	**250 अंक**
आंतरिक मूल्यांकन –	125 अंक
बाह्य प्रयोगिक परीक्षा –	125 अंक

आन्तरिक मूल्यांकन का अंक विभाजन

सूक्ष्म शिक्षण (05 कौशल – श्यामपट्ट, प्रस्तावना, प्रश्न, उद्दीपन परिवर्तन एवं दृष्टान्त)	05 अंक
पाठ योजना निर्माण (इकाई, दैनिक व वार्षिक)	05 अंक
शिक्षण सामग्री निर्माण	05 अंक
दैनिक अभ्यास पाठ (35 X 02)	70 अंक
समीक्षा पाठ	10 अंक
नियमित शिक्षकों की कक्षा का पर्यवेक्षण (न्यूनतम 10 कक्षाओं का)	10 अंक
सहपाठी के पाठों का निरीक्षण (न्यूनतम 10 पाठों का)	10 अंक
विद्यालयीय गतिविधियाँ (प्रतिभागिता, पञ्जिका संधारण एवं प्रतिवेदन लेखन)	10 अंक
कुल	125 अंक

शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष –		**250 अंक**
आंतरिक मूल्यांकन	–	125 अंक
बाह्य प्रयोगिक परीक्षा	–	125 अंक

आन्तरिक मूल्यांकन का अंक विभाजन

पाठ योजना निर्माण (इकाई, दैनिक व वार्षिक)	05 अंक
शिक्षण सामग्री निर्माण	05 अंक
दैनिक अभ्यास पाठ (35 X 02)	70 अंक
समालोचना पाठ	10 अंक
सहपाठी के पाठों का निरीक्षण (न्यूनतूम 10 पाठों का)	10 अंक
क्षेत्र सम्बन्धी गतिविधियाँ (प्रतिभागिता, अनुभव आधारित प्रतिवेदन लेखन)	10 अंक
समूह परिचर्चा (विद्यालय संचालन सम्बन्धी समस्याओं पर परिचर्चा एवं प्रतिवेदन लेखन)	10 अंक
राष्ट्रीय अभियानों में प्रतिभागिता	05 अंक
कुल	125 अंक

(II) विद्यालय गतिविधियाँ	**200 अंक**
शिक्षाशास्त्री प्रथम वर्ष –	**100 अंक**
आंतरिक मूल्यांकन	**50 अंक**
बाह्य मूल्यांकन	**50 अंक**
शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष	**100 अंक**
आंतरिक मूल्यांकन	**50 अंक**
बाह्य मूल्यांकन	**50 अंक**
(ब) व्यवसायिक अभिक्षमता विकास (Enhancing Processional Capacities)	**200 अंक**
शिक्षाशास्त्री प्रथम वर्ष	**100 अंक**
ई.सी.पी. –1	**50 अंक**
आंतरिक मूल्यांकन	**25 अंक**
बाह्य मूल्यांकन	**25 अंक**
ई.सी.पी. –2	**50 अंक**
आंतरिक मूल्यांकन	**25 अंक**
बाह्य मूल्यांकन	**25 अंक**
शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष	**100 अंक**
ई.सी.पी. –3	**50 अंक**
आंतरिक मूल्यांकन	**25 अंक**
बाह्य मूल्यांकन	**25 अंक**
ई.सी.पी. –4	**50 अंक**
आंतरिक मूल्यांकन	**25 अंक**
बाह्य मूल्यांकन	**25 अंक**

परीक्षा परिणाम, श्रेणी विभाजन एंव अंक योजना–

(1) द्विवर्षीय शिक्षाशास्त्री परीक्षा में परीक्षार्थी को सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक परीक्षा में पृथक्–पथक् उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।

(2) सैद्धान्तिक परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए परीक्षार्थी को प्रत्येक प्रश्न पत्र में 40% अंक लाने होंगे और समस्त सैद्धान्तिक प्रश्नपत्रों के सम्पूर्ण अंकों का योग 45% होना चाहिये।

(3) प्रायोगिक परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए 50% अंक आन्तरिक मूल्यांकन एवम् 50% अंक बाह्य प्रायोगिक परीक्षा में लाने होंगे।

(4) परीक्षा में सफल प्रशिक्षणार्थियों की श्रेणीयों का विभाजन (सैद्धान्तिक एवं प्रयोगिक में) निम्नलिखित प्रकार से होगा–

श्रेणी	सैद्धान्तिक	प्रायोगिक
प्रथम	60 प्रतिशत या अधिक	60 प्रतिशत या अधिक
द्वितीय	50 प्रतिशत या अधिक किन्तु 60 से कम	55 प्रतिशत से अधिक किन्तु 60 से कम
उत्तीर्ण	45 प्रतिशत से अधिक किन्तु 50 से कम	50 प्रतिशत से अधिक किन्तु 55 से कम

शिक्षाशास्त्री (बी.एड.) पाठ्यक्रम
प्रथम वर्ष

प्रथम वर्ष का पाठ्यक्रम

शिक्षाशास्त्री (बी.एड) प्रथम वर्ष पाठ्यक्रम कुल अंक – 1100						
प्रश्न पत्र सं. Paper No.	अध्येयांश कूट Course Code	प्रश्नपत्रों के नाम Title of the Papers	अध्येयांश श्रेणी Course Category	मूल्यांकन Evalution बाह्य External	आन्तरिक Internal	पूर्णांक Total Marks
I	s.s. 101	बाल्यावस्था एवं विकास प्रक्रिया	संकेन्द्रिक परिप्रेक्ष्य (Core Perspective)	80	20	100
II	s.s. 102	समसामयिक भारत एवं शिक्षा	संकेन्द्रिक परिप्रेक्ष्य (Core Perspective)	80	20	100
III	s.s. 103	अधिगम एवं शिक्षण प्रक्रिया	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)	80	20	100
IV	s.s. 104	भाषा एवं पाठ्यक्रम	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)	40	10	50
V	s.s. 105	अध्ययन क्षेत्र एवं विषय अवबोध	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)	40	10	50
VI	s.s. 106	लिंग विद्यालय एवं समाज	संकेन्द्रिक अनिवार्य (Core Compulsory)	40	10	50
VII	s.s. 112	शिक्षा का दार्शनिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य	संकेन्द्रिक परिप्रेक्ष्य (Core Perspective)	80	20	100
VIII	s.s. 113	संस्कृत शिक्षण (अनिवार्य शिक्षणशास्त्र)	अनिवार्य शिक्षणशास्त्र (Compulsory Pedagogy)	80	20	100
विद्यालय सम्बद्धता (School Internship)		(I) शिक्षण अभ्यास		125	125	250
		(II) विद्यालय गतिविधियाँ		50	50	100
ई.पी.सी. (EPC)–1	संस्कृत संभाषण कौशल विकास			20	20	40
	पाठ्यवस्तु पठन एवं चिन्तन (ध्येय बिन्दुओं से सम्बद्ध)			20	20	40
ई.पी.सी. (EPC)–2	शिक्षा में नाट्य एवं कला (शैक्षिक गतिविधियाँ)			10	10	20

* **EPC** (ई.पी.सी.) –**Enhancing Processional Capacities (व्यावसायिक अभिक्षमता विकास)।**

शिक्षाशास्त्री प्रथवर्ष

प्रथम प्रश्नपत्र

बाल्यावस्था एवं विकास प्रक्रिया

Course Code S.S. 101 **पूर्णांक 100**

(बा.80+ आ. 20)

उद्देश्य –

- छात्राध्यापकों / छात्राध्यापिकाओं में विविध कार्य वयवर्ग के बालक–बालिकाओं को उनकी,सामाजिक,आर्थिक,शारीरिक,मानसिक एवं संवेगात्मक, क्षमता की पृष्ठभूमि में समझने की योग्यता उत्पन्न।
- बाल–विकास प्रक्रिया एवं सिद्वान्तों को समझने योग्यता उत्पन्न करना। (बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था के सन्दर्भ में)
- अभिवृद्धि एवं विकास के मनोवैज्ञानिक सिद्वान्तों का ज्ञान कराना।
- बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था के छात्रों के सन्दर्भ में बाल–विकास सिद्वान्तों के अनुप्रयोग की योग्यता उत्पन्न करना।
- छात्राध्यापकों को अधिगम नियमों एवं सिद्वान्तों का ज्ञान प्रदान करना तथा शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के मनोवैज्ञानिक पक्ष को समझते में सहायता प्रदान करना।
- अभिप्रेरणा के स्वरूप एवं प्रक्रिया ज्ञान कराना तथा अधिगम और अभिप्रेरणा के सम्बन्ध को स्पष्ट करना।
- बुद्दि स्वरूप बुद्दि सिद्वान्त तथा बुद्दि मापन को समझते तथा विशिष्ट बालकों की शिक्षण व्यवस्था को समझते में सहायता प्रदान करना।
- व्यक्तित्व की अवधारणा, प्रकार एवं प्रभाव के कारणों के सन्दर्भ में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना।

पाठ्यवस्तु – **80 अंक**

इकाई –1 बालक के अवबोध में मनोविज्ञान की भूमिका

- मनोविज्ञान :– अर्थ, परिभाषा, प्रकृति एवं शाखाएं।
- मनोविज्ञान की विधियां :– व्यक्ति अध्ययन विधि तथा प्रयोगात्मक विधि – अर्थ, प्रकृति, क्षेत्र, नवीन युग में भौक्षिक अनुप्रयोग।
- बाल मनोविज्ञान :– अर्थ, परिभाषा, अवधारणा एवं क्षेत्र।

इकाई – 2 विकास के सिद्धान्त एवं कारक

- वृद्धि और विकास :– अवधारणा, सिद्धान्त, चरण एवं दिशाएं।
- विकास के सिद्धान्त :–
  - प्याजे का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त।
  - फ्रायड का मनोलैगिंक विकास का सिद्धान्त।
  - इरिक्सन का मनो–सामाजिक विकास का सिद्धान्त।
  - नॉम चोमन्स्की भाशायी विकास।
  - लारेन्स कोहलबरी एवं कैरोल गिलिन का नैतिक विकास का सिद्धान्त।
  - बन्डूरा का सामाजिक विकास का सिद्धान्त।
- विकास को प्रभावित करने वाले कारक :– वंशानुगत, जैविक, पर्यावरणीय एवं शारीरिक कारक।

इकाई – 3 बालक का विकास

- बालक का शारीरिक, मानसिक, भाषायी, तार्किक योग्यता, समस्या समाधान योग्यता एवं सर्जनात्मक योग्यता का विकास।
- बाल्यावस्था :– अर्थ, परिभाषा, अवधारणा और विशेषताएं। विविध सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में बालविकास। बालक के विकास में परिवार, विद्यालय, आस–पड़ौस और समाज का प्रभाव।
- किशोरावस्था – अर्थ, परिभाषा, अवधारणा और विशेषताएं, किशोरों के विकास में परिवार, विद्यालय, साथी–समूह, सामाजिक वातावरण और संचार का प्रभाव।
- व्यक्तित्व :– अर्थ, परिभाशा, अवधारणा, प्रकृति, व्यक्तित्व का मूल्याकंन एवं सिद्धान्त।
- व्यक्तिगत भिन्नताएं :– अवधारणा, क्षेत्र(विशेष शिक्षा के सन्दर्भ में) एवं शैक्षिक निहितार्थ।
- तनाव :– अर्थ, प्रकार, किशोरों के व्यक्तित्व के सन्दर्भ में तनाव मुक्ति के उपाय।

इकाई – 4 अधिगम

- सीखने की अवधारणा एवं विकास :– मिथ्याधारणा, परिभाशा, सीखने में मस्तिश्क की भूमिका।
- स्मृति एवं विस्मृति : सीखने के व्यवहारवादी सिद्धान्त(थार्नडाईक, स्किनर, पॉवलव) गेस्टाल्टावाद, संज्ञानात्मक एवं क्षेत्रीय सिद्धान्त, सूचना प्रक्रिया सिद्धान्त, सामाजिक संरचनात्मक उपागम, गेने के अनुसार सीखने के प्रकार।
- अभिप्रेरणा :– मेस्लो का पदानुक्रम का सिद्धान्त एवं अवधारणा
- कक्षाकक्ष वातावरण :– समकालीन भारतीय समाज एवं शिक्षा मनोविज्ञान के सन्दर्भ में परिवर्तित विभिन्न संस्कृतियों की भूमिका एवं जिम्मेदारियां।

इकाई – 5 व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक विशेशताएँ

- बुद्धि – अर्थ, प्रकार – सामाजिक, संवेगात्मक, आध्यात्मिक बुद्धि
- बुद्धि के सिद्धान्त – गार्डनर का बहुबुद्धि सिद्धान्त, बुद्धि का मापन
- सृजनात्मकता – अर्थ, घटक, सृजन ीलता को बढ़ाने के तरीके, बुद्धि का अन्य कारको के साथ सम्बन्ध, सृजनशीलता का मापन।
- चिन्तन के उच्चस्तरीय कौशल–समालोचनात्मक चिन्तन, तर्क, समस्या, समाधान, निर्णय निर्धारण।
- सामाजिकता एवं मानसिक स्वास्थ्य।
- सामाजिकता की प्रक्रिया – समूह गतिशीलता का सिद्धान्त, कर्टलेविन, नेतृत्व एवं उसके तरीके –किम्बाल युंग सामाजिक पूर्वाग्रह।
- मानसिक स्वास्थ्य :–
- बच्चों की स्वास्थ्य सम्बन्धी सामान्य समस्याएं – ध्यान में कमी एवं सक्रियता विकार(ADHD) तनाव, सीखने की अयोग्यता, समस्यात्मक बालकों के साथ व्यवहार।

सत्रीय कार्य **20 अंक**

- लिखित परीक्षण – 10 अंक
- कोई एक प्रायोगिक परीक्षण – 10 अंक
  - विभिन्न प्रकार के बालकों (असाधारण) के विकास का तुलनात्मक अध्ययन।
  - बालिका, लिंगानुपात को ध्यान में रखते हुए आंकड़ो का एकत्रीकरण एवं विश्लेषण।
  - सीखने का प्रयोगात्मक प्र ाासन, ध्यान की अवधि, बुद्धि, व्यक्तिगत समूह परीक्षण एवं स्मृति प्रबन्धन की विवेचना।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. डॉ. रीता अरोड़ा, डॉ. ओ.पी.शर्मा – मापन व मूल्यांकन, राजस्थान
2. जौहरी एवं पाठक – शिक्षा मनोविज्ञान
3. माथुर एस.एस. – शिक्षा मनोविज्ञान
4. भटनागर सुरेश – शिक्षा मनोविज्ञान
5. वर्मा रामपालसिंह – मनोविज्ञान के सम्प्रदाय
6. जायसवाल सीताराम, भारतीय मनोविज्ञान एवं शिक्षा, आर्य बुक डिपो, दिल्ली।
7. पाण्डेय के.पी. (2005), नवीन शिक्षा मनोविज्ञान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
8. चौबे एस.पी. (1965) शिक्षा मनोविज्ञान, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल एण्ड सन्स, आगरा।
9. हरलाक, ई.बी., विकासात्मक मनोविज्ञान।
10. सिंह, अरूण कुमार (1995) शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन, आगरा।
11. शर्मा, आर.ए. (2005), शिक्षण अधिगम में नवीन प्रवर्तन, आर.लाल.बुक डिपो, मेरठ।
12. पाठक, आर.पी. (2009), शिक्षा मनोविज्ञान– एक परिचय राधा प्रकाशन, नई दिल्ली।
13. पाठक, आर.पी. (2011), शिक्षा मनोविज्ञान, पियर्सन एजुकेशन नालेज पार्क, नोएडा।
14. पाठक, आर.पी. एवं भारद्वाज अमिता पाण्डेय (2013), शिक्षा मनोविज्ञान के मूलतत्त्व, कनिस्का प्रकाशन, नई दिल्ली।
15. मित्तल सन्तोष एवं मित्तल दीपशिखा, बाल विकास एवं पारिवारिक सम्बन्ध, यूनिवर्सिटी बुक हाउस, चौड़ा रास्ता, जयपुर।
16. Agarwal, Reetu, Shukla Geeta(2014). Bal Vikas Evam Manovigyan, Rakhi Prakshan, Arga.
17. Agarwal J.C.(1981). Essential Of Education Of Educational Psychology, Delhi, Doaba Book.
18. Arora, Dr. Saroj, Bhargava, Rajshri(2014). Bal Manovigyan. Rakhi Prakashan, Agra.
19. Bigge, M.L.(1982). Learning Theories For Teacher. New York: Harper And Row.
20. B.P.(2000) Personality Theories, Bosten: Allyn And Bacon House.
21. Chauhan, S.S.(2001), Adanaced Educational Psychology, New Delhi: Vikas Publishing House.
22. Diane E. Papalia, Sally Wendkos Olds, Ruth Durkin Feldman, Ninth Edition, Human Development, Tata Mcgraw Hill Publishing Company Limited New Delhi.
23. Helen Bee Denise Boyd, First Indian Reprint 2004. The Developing Child, Published By Pearson Education Pre. Ltd. Indian Branch Delhi, India.
24. Jack Snooman, Robert Biehler Ninth Edition. Psychology Applied To Teaching, Houghton Miflin Company, Bosten New York(Http://www.Coursewise.Com)
25. Ormrod Ellis Lenne, Third Edition Educational Psychiology Developing Learners Multimedia Edition(Http://www.Prenhall.Com/Ormrod)
26. Sarswat Kuldeep(2015). Bal Vikas Evam Bachpan, Published By Rakhi Prakashan, Agra.
27. Woolfolk, A. (2004), Educational Psychology Published By Dorling Kindersley(India) Pvt. ltd., Licensees Of Pearson Education In South Asia.

शिक्षाशास्त्री प्रथम वर्ष

द्वितीय प्रश्नपत्र

समसामयिक भारत एवं शिक्षा

कोर्स कोड – S.S.102 **पूर्णांक – 100**

(बा.80+ आ. 20)

उद्देश्य (Objectives) :–

पाठ्यचर्या पूर्ण होने पर छात्राध्यापक इन विषयों पर समर्थ होंगे –

1. शिक्षा के उद्देश्य और उसके समाज एवं मानवता के साथ के सम्बन्ध के गहरे ज्ञान को विकसित करना।
2. समकालीन भारत और शिक्षा का प्रासंगिकीकरण।
3. सामाजिक सन्दर्भ के रूप में कक्षा की समझ।
4. बातचीत, संवाद एवं समान मुद्दों पर विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने को अवसर सर्जित करने हेतु व्यवस्था करना।
5. मानवाधिकार एवं बाल–अधिकार का समीक्षणात्मक विश्लेषण।
6. शिक्षकों को सक्रिय दृष्टिकोण से और माध्यम होने के अहसास से युक्त करना।
7. विभिन्न वर्गों से आहरित अवधारणाओं का ज्ञान कराना।

पाठ्यवस्तु – **80 अंक**

इकाई –1

सामाजिक अनेकता एवं शिक्षा

- शिक्षा – अर्थ, अवधारणा एवं स्वरूप।
- सामाजिक एवं सांस्कृतिक अनेकता – अर्थ, अवधारणा और शिक्षा पर उसका प्रभाव।
- समाज एवं शिक्षा पर सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनैतिक दृष्टिकोण।
- शिक्षण/शास्त्र के अनेक वर्ग :– अर्थ एवं अवधारणा (समाजशास्त्र, इतिहास, दर्शन, सामाजिकविज्ञान और अर्थशास्त्र के विशेष सन्दर्भ में)।

इकाई–2

समसामयिक भारतीय समाज के मुद्दे और संवैधानिक प्रावधान

- बहुलतावादी संस्कृति, पहचान, लैंगिक समानता, गरीबी एवं लैंगिक संवेदीकरण और उनका शिक्षा के साथ सम्बन्ध का अर्थ और अवधारणा।
- असमानता, भेदभाव, पृथक्करण (गोविन्द, 2011) की अवधारणा और इनका शिक्षा व समाज पर प्रभाव (PROBE Kam, 1999)।
- प्रस्तावना, प्रजाओं का मौलिक अधिकार और कर्तव्य और राष्ट्रनीतियों का निर्देशात्मक सिद्धान्त।
- मानव एवं बाल अधिकार एवं मूल्यों पर संवैधानिक प्रावधान।
- NCPCR की भूमिका NCPCR – National Commission on Protection of Child Right) बाल अधिकार रक्षार्थ राष्ट्रिय आयोग)
- राष्ट्रिय एकता और राष्ट्रिय सुरक्षा।

इकाई – 3

सामाजिक प्रसंग में विद्यालय

- सामाजिक व्यवस्था – अर्थ, अवधारणा और विद्यालय पर उसका प्रभाव।
- लोकतांत्रिक समाज–व्यवस्था को बनाए रखने में शिक्षा की भूमिका।
- समाजवादी प्रतिमानों के विकास में शिक्षा की भूमिका।
- लैंगिक समानता का अधिकार तथा सामाजिक परिवर्तन हेतु उसकी क्रियान्विति।
- विद्यालयीय संस्कृति और सामाजिक मुद्दे।
- सामाजिक सन्दर्भ में कक्षा – 1990 से वर्तमान तक।
- शिक्षा और पाठ्यक्रम में परिवर्तन, मध्याह्नकालीन भोजन योजना और उच्चतम न्यायालय क आदेश द्वारा वैधानिक कार्यवाही की भूमिका।

इकाई – 4

उदीयमान भारतीय मुद्दे और उनका शैक्षिक नीहितार्थ

- उदारीकरण, वैश्वीकरण और निजीकरण का अर्थ और अवधारणा तथा उनका शिक्षा पर प्रभाव।
- शिक्षा का स्तर–विभाजन – अवधारणा एवं प्रक्रिया।
- उपनिवेशवादी शिक्षा की राष्ट्रवादी आलोचना और विकल्पों के साथ परीक्षण (Kumar 2013, Ghosh 2007, Zastoyril & Moir 1999)
- पृथक्कृत वर्ग जैसे महिलाएं, दलित, आदिवासी लोगों के लिए शिक्षा (Chakravarti 1998)

इकाई–5

पाठ्यपुस्तक व पाठ्यक्रम

समसामयिक मुद्दे और नीतियाँ

- स्वतन्त्रता पूर्वकाल में नीति सम्बन्धित समकालीन मुद्दे।
- शिक्षा का अधिकार अधिनियम (GOI 2009, Rainia 2010), SSA (UEE हेतु नीतियाँ, नई तालीम)।
- योजनाबद्ध औद्योगिकीकरण एवं शिक्षा के सन्दर्भ में कोठारी आयोग की अनुशंसाएं और उनका कार्यान्वयन।
- शिक्षा पर राष्ट्रिय नीति 1986, उसकी समीक्षा 1992 (Context of Liberalization and globalization of Indian icononic)

सत्रीय कार्य – **20 अंक**

- लिखित परीक्षण – 10 अंक
- किसी एक विद्यालय का सर्वेक्षण एवं प्रतिवेदन – 10 अंक

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. सिंह, डॉ. एम.के. (2009) 'शिक्षा के दार्शनिक व सामाजिक आधार', इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।
2. रूहेला, प्रो. एस.पी. (2009) 'शिक्षा के दार्शनिक व समाजशास्त्रीय आधार' अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा।
3. चौबे, डॉ. सरयूप्रसाद (2009) 'शिक्षा के दार्शनिक, ऐतिहासिक व समाजशास्त्रीय आधार, इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।
4. सोनी, डॉ. रामगोपाल 'उदयोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक', एच.पी.भार्गव बुक हाउस, आगरा।
5. पाण्डेय, डॉ. रामशकल (2007) 'शिक्षा के दार्शनिक व समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि, अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा।
6. पचौरी, डॉ. गिरीश, पचौरी रितु (2010) 'उभरते भारतीय समाज में शिक्षक की भूमिका), आर.लाल. बुकि डिपो, मेरठ।

7. सक्सेना, एन.आर.स्वरूप (2010) 'शिक्षा सिद्धान्त' आर.लाल. बुकि डिपो, मेरठ।
8. पाठक, आर.पी. (2010), शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, पियर्सन एजुकेशन, नालेज पार्क, नोएडा (उ.प्र.)
9. पाठक, आर.पी. एवं चौधरी रजनी जोशी (2013) शिक्षा सिद्धान्त, कानिष्का प्रकाशन, नई दिल्ली।
10. रूहेला, प्रो. एस.पी. (2008) 'विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा' अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा।
11. सिंह, डॉ. रामपाल सिंह, श्रीमती उमा, शिक्षा तथा उदीयमान भारतीय समाज, 2008, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2।
12. त्यागी, ओंकार सिंह, उदीयमान भारतीय समाज और शिक्षा, अरिहंत प्रकाशन, जयपुर।
13. Saxena, N.R. Swaroop, Principles of Education, International Publishing House, Merrut (U.P.)
14. पाठक, पी.डी. शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

शिक्षाशास्त्री प्रथम वर्ष

तृतीय प्रश्नपत्र

अधिगम एवं शिक्षण प्रक्रिया

कोर्स कोड – S.S.103 **पूर्णांक – 100**

(बा.80+ आ. 20)

उद्देश्य (Objectives) :–

1. शिक्षण एवं अधिगम की अवधारणा, सिद्धान्त और प्रकृति से परिचित होगें।
2. विभिन्न प्रकार के तरीकों से छात्र परिचित होगें।
3. सीखने और सीखने के सम्बन्धों का अध्ययन तथा सीखने को प्रभावित करने वाले तथ्यों से परिचित होगें।
4. आधुनिक तकनीकी एवं संचार तकनीकी का सीखने में प्रयोग करने में दक्ष होगें।
5. सामाजिक सांस्कृतिक तथ्यों को पढ़ना एवं विश्लेषण करना तथा सीखने को प्रभावित करने वाले तथ्यों से अवगत होगें।

पाठ्यवस्तु – 80 अंक

इकाई – 1 अधिगम एवं शिक्षण प्रक्रिया :–

* शिक्षण – अर्थ, प्रकृति, सिद्धान्त, स्तर, चरण एवं शिक्षण के नियम
* प्रशिक्षण व अनुदे ान में अन्तर
* शिक्षण व अधिगम में सम्बन्ध, स्त्रोत और शिक्षण को प्रोत्साहित करने वाले कारक, शिक्षण में अभिवृद्धि, सीखने की प्रक्रिया
* सीखने की प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए परम्परागत एवं परिवर्तित दृष्टिकोण

इकाई – 2 प्रभावी शिक्षण एवं अधिगम के स्त्रोत :–

* प्रभावी शिक्षण – अर्थ, परिभाशा, घटक एवं प्रभावी शिक्षण के मापदण्ड
* कक्षाकक्ष प्रबन्धन एवं निर्देशन की व्यूहरचना शिक्षक का व्यवहार, कक्षा–कक्ष वातावरण (फ्लेण्डर अन्तः क्रिया विश्लेषण श्रेणी)
* ब्लूम के अनुसार प्रबन्धन के शैक्षिक उद्देश्य
* अभिक्रमित अनुदेशन – अर्थ, अवधारणा, सिद्धान्त, प्रकार
* सूक्ष्म शिक्षण – अवधारणा, विभिन्न शिक्षण कौशल

इकाई – 3 शैक्षिक तकनीकी

* शैक्षिक तकनीकी – अर्थ, महत्व एवं दृष्टिकोण
* सीखने के प्रतिमान – अर्थ, परिकल्पना, एवं आधारभूत तत्व सचमैन का जॉंच प्रशिक्षण प्रतिमान।
* सम्प्रेषण – अवधारणा, तत्व, एवं सम्प्रेशण कौशल, शिक्षण अधिगम में सम्प्रेषण प्रक्रिया

इकाई – 4 शिक्षण अधिगम की नवीन अवधारणाऍं :–

* विभिन्न कक्षाकक्ष परिस्थियों का विश्लेषण एवं संस्थागत अधिगम का स्वरूप : चिन्ता एवं निवारण
* समूह शिक्षण, पैनल चर्चा, सम्मेलन, संगोष्ठी, कार्यशाला, तुलनात्मक अध्ययन, समूह परिचर्चा, मतिष्क उप्लवन (Brain Storming), चिन्तन, आदतें, स्व–अधिगम, शिक्षण कौशल, रूचि, क्षमता एवं प्रतिभा।

इकाई – 5 शिक्षण एक व्यवसाय के रूप में

* शिक्षणनीति, शिक्षक का व्यावसायिक विकास
* शिक्षक एक पेशेवर व्यवसायी, पहचान का प्रदर्शन, क्षमता एवं शिक्षक के लिए प्रतिबद्धता क्षेत्र। शिक्षक की व्यावसायिक समद्धि।
* व्यावसायिक नीति और उसका विकास

सत्रीय कार्य **20 अंक**

- लिखित परीक्षण – 10 अंक
- अधोलिखित पर आधारित दत्त कार्य – 10 अंक
  * किसी एक अधिगम स्त्रोत का प्रायोगिक आशय एवं निर्माण(ट्रासपेरेन्सी, पॉवर पोईट प्रजेन्टेशन, एनीमेशन फिल्म)।
  * विविध कक्षाकक्ष परिस्थिति के अनुसार सीखने की आव यकताओं की पहचान – योग्यता, सीखने के तरीके सामाजिक सांस्कृतिक भिन्नताएं, सीखने की भिन्नताएं और कक्षाकक्ष शिक्षण का आशय।
  * शिक्षक के व्यावसायिक कौशल की पहचान एवं रिपार्ट निर्माण। शिक्षण संस्था द्वारा आयोजित व्यावसायिक विकास के कोई दो कार्यक्रमों की रिपोर्ट का निर्माण।
  * विविध भाषी पृष्ठभूमि वाले दो बालकों का साक्षात्कार आयोजन की रिपोर्ट का निर्माण एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में आने वाली समस्याओं की समीक्षात्मक रिपोर्ट।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. भटनागर, ए.बी. (2010) शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबन्धन, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.)
2. पाठक, रमेश प्रसाद (2014) शैक्षिक तकनीकी के आयाम, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि., नई दिल्ली।
3. शर्मा, आर.ए. (2005) सूचना सम्प्रेषण एवं शैक्षिक तकनीक, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.)
4. शर्मा, आर. ए., सफल शिक्षण कला, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
5. पाण्डेय, के.पी. (1992) अभिक्रमित अधिगम की टेक्नोलाजी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी (उ.प्र.)।
6. पाठक, आर.पी. (2011) शैक्षिक प्रौद्योगिकी, पियर्सन एजुकेशन, नालेज पार्क, नोएडा (उ.प्र.)
7. पाठक, आर.पी. (2011) शैक्षिक प्रौद्योगिकी के नवीन आयाम, राधा प्रकाशन, असांरी रोड, दरियागंज, दिल्ली।
8. Aggarwal J.C.(2004) "Educational Psychology", Vikas Publishing House Pvt. Ltd., New Delhi.
9. Berk Laura (2007), "Child Development", Prentice Hall Of India, New Delhi.
10. Biehler Robert And Snowman Jack(1991)," Psychology Applied To Teaching", Houghton Mifflin Company, Boston.
11. Buzan Tony(2003),"Brain Child", Thorsons, An Imprint Of Harper Collins, Londan.
12. Coleman Margarat(1996)," Emotional And Behavioran Disorders", Allyn And Bacon, Boston.
13. Erickson Marian(1967),"The Mentally Retarded Child In The Classroom,"The Macmillan Company.
14. Goleman Daniel(1995),"Emotional Intelligence", Bantom Books, N.Y.
15. Goleman Daniel(2007),"Social Intelligence", Arrow Books, Londan.
16. Henson Kenneth(1999),"Educational Psychology For Effective Teaching", Wadsworth Publishing Co. Belmont California.
17. Khandelwala Pradip(1988),"Fourth Eye", A.H. Wheeler, Allahabad.
18. Mangal S.K.(1993)," Advanced Educational Psychology", Prentice Hall Of India Pvt. Ltd., New Delhi.
19. National Curriculum Framework 2005, N.C.E.R.T., New Delhi.
20. Osborn Alex(1971),"Your Creative Power", Saint Paul Society, Allahabad, India.
21. Pringle M.K. And Varma V.P.(Ed)(1974),"Advances In Educational Psychology",University And Londan Press, Lodan.
22. Shaffer David(1999)," Social And Personality Development", Wadsworth Thomson Learning, U.S.A.
23. Sharma Tara Chand(2005),"Reading Problems Of Learners",Sarup And Sons, New Delhi.
24. Sousa David(2001),"How The Brain Learns", Cowin Press, Inc. A Sage Publication Company, California.

शिक्षाशास्त्री प्रथम वर्ष

चतुर्थ प्रश्न पत्र

भाषा एवं पाठ्यक्रम

कोर्स कोड – S.S.104 **पूर्णांक – 50**

(वा.40+ आ. 10)

उद्देश्य –

1. भाषा के स्वरूप को समझ सकेगें।
2. पाठ्यक्रम विकास से सिद्धान्तों तथा सम्प्रत्ययों को समझ सकेगें।
3. भाषा की अलग–अलग भूमिकाओं को जान सकेगें।
4. भाषा सीखने के तरीके एवं प्रक्रिया को जान सकेगें।
5. भाषायी अभिव्यक्ति के प्रकारों को जान सकेगें।
6. भाषायी सर्जनात्मक क्षमता को पहचान सकेगें तथा इसे विकसित कर सकेगें।
7. पठन, लेखन, श्रवण, वाचन क्षमताओं का विकास कर सकेगें।
8. साहित्य व भाषा के सम्बन्ध को समझ सकेगें।

पाठ्यवस्तु – **40 अंक**

इकाई –1

भाषा का अर्थ, महत्व, भाषा समस्या तथ शिक्षण उद्देश्य

- भाषा का अर्थ, महत्व, लक्षण तथा मातृभाषा एवं मानक भाषा की समझ।
- संविधान और शिक्षा समितियों के प्रतिवेदनों में भाषा की स्थिति।
- भारत की भाषिक समस्या, त्रिभाषा सूत्र तथा गांधी जी द्वारा भाषा के सम्बन्ध में व्यक्त किये गये विचार।
- भाषा शिक्षण के उद्दे य एवं व्यवहारगत परिवर्तन।
- भाषा के विविध रूप :– राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सम्पर्कभाषा, प्रादेशिक भाषा, सांस्कृतिक भाषा, अन्तर्राष्ट्रीय भाषा एवं विदेशी भाषा।
- बाल साहित्य का अर्थ एवं विधाएं तथा पाठ्यक्रम में साहित्य को पढ़ना, पढ़ाना एवं अनुवाद करना।

इकाई–2

भाषा का वैज्ञानिक स्वरूप तथा भाषा व्यवहार के विविध पहलू

- भाषा का वैज्ञानिक स्वरूप (वर्ण विचार, शब्द विचार एवं वाक्य विचार की दृष्टि से)।
- भाषा कौशलों के विकास हेतु मौखिक, लिखित एवं सर्जनात्मक अभिव्यक्ति का विकास।
- भाषा अर्जन एवं अधिगम का दार्शनिक, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक आधार।
- भाषा सीखने एवं सिखाने की बहुआयामी दृष्टि।
- भाषायी व्यवहार के विविध पहलू (विभिन्न बोलियाँ–क्षेत्रीय भाषा एवं मानक भाषा)।

इकाई – 3

पाठ्यक्रम एवं विकास

* पाठ्यचर्या का अर्थ, परिभाषा एवं उद्देश्य।
* पाठ्यक्रम का अर्थ, परिभाषा, उद्देश्य एवं पाठ्यक्रम विकास के आधार।

* पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम में अन्तर।
* पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धान्त एवं प्रकार (विषय केन्द्रित पाठ्यक्रम, शिक्षक केन्द्रित पाठ्यक्रम, बाल केन्द्रित पाठ्यक्रम, क्रिया केन्द्रित पाठ्यक्रम, अनुभव केन्द्रित पाठ्यक्रम, शिल्प केन्द्रित पाठ्यक्रम, कॉर पाठ्यक्रम (NPE 1986), एकीकृत पाठ्यक्रम)।
- पाठ्यक्रम निर्माण के प्रतिमान – हिल्दा ताबाँ का प्रतिमान, उद्देश्य प्रतिमान, प्रक्रिया प्रतिमान, परिस्थिति प्रतिमान।

इकाई – 4

भाषा कौशल एवं उनका विकास

- भाषा कौशल का अर्थ, महत्व, उद्देश्य।
- श्रवण कौशल का अर्थ, महत्व, उद्देश्य तथा विधियाँ।
- पठन – कौशल का अर्थ, महत्व, उद्देश्य, विधियाँ, पठन के रूप – स्वरवाचन तथा मौन–वाचन।
- लेखन–कौशल का अर्थ, महत्व, उद्देश्य, विधियाँ, सुलेख, अनुलेख, प्रतिलेख तथा श्रुतिलेख।
- वाचन–कौशल का अर्थ, महत्व, उद्देश्य, विधियाँ तथा प्रकार।
- स्वर, व्यंजन, बलाघात, स्वराघात, आरोह–अवरोह एवं लय।

इकाई–5

भाषा विज्ञान एवं भाषा में सहायक सामग्री तथा नवाचार :–

- भाषा विज्ञान का अर्थ, अंग, प्रासङगिकता।
- ऐतिहासिक, भाषावैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में विविध भाषा परिवारो की भूमिका।
- भाषा का वर्गीकरण – आकृतिमूलक एवं पारिवारमूलक।
- दृश्य – श्रव्य सामग्री (रेडियो, टेलीविजन, ओ.एच.पी., लिंग्वा फोन, चित्रकथा, टेपरिर्काडर आदि)।
- भाषा प्रयोगशाला – आवश्यकता, महत्व तथा शिक्षक के प्रशिक्षण में प्रयोग।
- भाषा के विकास में नवाचार (अभिनयीकरण, समस्यापूर्ति, काल्पनिक लेख)
- सहसंज्ञानात्मक गतिविधियों की रूपरेखा (चर्चा, वाद–विवाद, अन्ताक्षरी, निबन्ध, नाटक, एंकाकी, समूहकार्य)

सत्रीय कार्य – **10 अंक**

- लिखित परीक्षण – 5 अंक
- निम्नलिखित में किसी एक विषय पर दत्त कार्य – 5 अंक

1. विद्यालय की साहित्यिक गतिविधि की योजना निर्माण, क्रियान्विति करना तथा प्रतिवेदन तैयार करना।
2. भाषा के सन्दर्भ में राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा बनाना।
3. भाषा विकास के दौरान आने वाली समस्याओं पर क्रियात्मक अनुसंधान का क्रियान्वयन कर प्रतिवेदन तैयार करना।
4. भाषायी कौशलों (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) के सीखने सम्बन्धित 4–4(चार–चार) गतिविधियां लिख प्रतिवेदन तैयार करना।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1. द्विवेदी कपिलदेव :– भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र, त्रयोदस संस्करण, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2012
2. शर्मा लक्ष्मीनारायण – भाषा की शिक्षणविधियां एवं पाठ नियोजन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
3. श्रीवास्तव, रवीन्द्रनाथ, भाषा शिक्षण, वाणी प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली।
4. डॉ. तिवारी भोलानाथ, भाषा विज्ञान।
5. डॉ. बाहरी हरदेव , हिन्दी भाषा अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद – 4
6. डॉ. बाहरी हरदेव , उच्चारण, वर्तनी, व्याकरण लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद – 4
7. डॉ. बाहरी हरदेव , हिन्दी शब्द–अर्थ–प्रयोग अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद – 4

8. पाठक, आर.पी. (2012) हिन्दी भाषा शिक्षण, कनिस्का प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली।
9. पाठक, आर.पी. (2010) हिन्दी शिक्षण, कनिस्का प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली।
10. Agnihotri. R.K. (1995) Multilingualism As A Class Room Resource. In K. Heugh. A Siegruhn. P. Pluddemann(Eds) Multilingual Education For South Africa 9pp. 3 Heinernann Educational Books.
11. Anderson R.C.(1984) Role Of The Readers Schema In Comprehension. Learning And Memory In R.C. Anderson. J. Aslrom& R.J. Tierney(Edu) Learning To Read In American Schools: Based Readers And Content Tears Psychology.
12. Bansal R.K. And Harrisson J.B.(1990) Spoken English For Indian Orient Longmar LTD Macras
13. Ladson Billings G(1995) Toward A Theory Of cultwally Relevant Pedagogy American Educational Research Journal.
14. NCERT(2006) Position Paper National Focus Group On Teaching Of Indian Language(NCF 2005) New Delhi
13. Paiiwai Dr. A.K. (2002) Communication Language Teaching Sumtri Publication Jaipur.

शिक्षाशास्त्री प्रथम वर्ष

पंचम प्रश्न पत्र

अध्ययन क्षेत्र एवं विषय अवबोध

कोर्स कोड – S.S.105 **पूर्णांक – 50**

(बा.40+ आ. 10)

उद्‌देश्य –

1. विद्यालय पाठ्यक्रम की प्रकृति और समझ का विकास कर सकेगें।
2. विद्यालय विषयों के बारे में वैचारिक समझ अर्जित कर सकेगें।
3. पाठ्यक्रम निर्माण की रूपरेखा को ध्यान में रखकर रुचि, मनोभाव और ज्ञान का विकास कर सकेगें।
4. व्यावसायिक, अनुशासनात्मक और पाठ्यक्रम सम्बन्धी कार्यक्रमों का निर्माण कर सकेगें।
5. विद्यालयीय विषयों के परस्पर अन्तरविषयी सम्बन्धों को समझ सकेगें।
6. क्षेत्र विशेष में अर्जित ज्ञान को दूसरे क्षेत्र में प्रयोग कर सकेगें।

पाठ्यवस्तु – **40 अंक**

इकाई –1

अनुशासनात्मक ज्ञान का अर्थ एवं संकल्पना :–

- ज्ञान एवं अवबोध का स्वरूप एवं अन्तर । (अनुशासन के परिप्रेक्ष्य में)
- विद्यालय पाठ्यक्रम में अनुशासनात्मक ज्ञान की भूमिका एवं प्रकृति।
- विद्यालय विषयों का अनुशासनात्मक क्षेत्र के साथ सम्बन्ध।
- शिक्षण विषयों एवं अन्तः अनुशासनात्मक विषयों के मध्य अन्तर।

इकाई–2

विद्यालय विषयों की समझ :–

- संस्कृत भाषा की प्रकृति संरचना एवं वाङ्मय का अवबोध, त्रिभाषा सूत्र में स्थान, पराम्परागत एवं आधुनिक विधियों अवबोध तथा संस्कृत सम्भाषण कौशल में निपुणता।
- सामाजिक विज्ञान – शिक्षण विधि – व्याख्यान विधि, प्रोजेक्ट विधि, परिवेक्षण विधि, कहानी विधि, जीवनवृत विधि, स्रोत विधि, चिन्तन, नाटकविधि, सहयोगपूर्वक सीखना, प्रायोगिक अधिगम।
- हिन्दी भाषा की विविध विधाएँ – कहानी, उपन्यास, कविता, व्यक्तिगत निबन्ध, वृत्ति चित्र, यात्रास्मरण, आत्मकथा, संस्मरण।

इकाई – 3

विविध विद्यालयीय विषयों से सम्बद्ध विधियाँ –

- व्याख्यान, आगमनात्मक, विश्लेषणात्मक, संश्लेषणात्मक, ह्यूरिक्टिक (अनुभवी), प्रोजेक्ट, समस्या–समाधान, प्रयोगशाला विधि, गणित शिक्षण में तकनीक, प्रश्नावली, चिन्तन, वार्तालाप गतिविधि, अनुकरण, गणित अधिगम की अनौपचारिक विधियाँ।

इकाई – 4

सामाजिक न्याय के सन्दर्भ में विद्यालयीय विषयों की पुनर्व्याख्या।

- शान्ति का सम्प्रत्यय, शान्ति स्थापना में विद्यालयीय विषयों के निहितार्थ का व्यावहारिक प्रयोग।
- विद्यालय विषयों में समाहित सहास्तित्व एवं सदाचार के संदेशों का व्यावहारिक जीवन में अनुप्रयोग।
- सर्वव्यापी शिक्षा के सन्दर्भ में सामाजिक सांस्कृतिक सम्भावना का अर्थ।

इकाई–5

विभिन्न विषय एवं उनकी समझ की प्रक्रिया तथा स्वरूप निर्धारण

- पाठ्यसामग्री के सिद्धान्त, पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धान्त, पाठ्यसामग्री तथा पाठ्यक्रम निर्माण की प्रक्रिया।
- अनुशासन के सन्दर्भ में व्यावहारिक ज्ञान, परिवार, समुदाय और पाठ्यसहगामी क्रियाओं का ज्ञान एवं प्रभाव।
- आथित्य की समझ का सर्जनात्मक विकास।

सत्रीय कार्य – **10 अंक**

- लिखित परीक्षण – 5 अंक
- निम्नलिखित से सम्बन्धित प्रायोगिक कार्य – 5 अंक
  - ➢ सम्बन्धित भाषा (संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी) के चार्ट तैयार करें।
  - ➢ बागवानी और आथित्य से सम्बन्धित समाचार पत्र के लेखों का संग्रहण।
  - ➢ गणित एवं विज्ञान प्रयोगशाला का निर्माण और उसका संचालन।
  - ➢ दो भारतीय वैज्ञानिक एवं समाजशास्त्री के जीवनवृत का संक्षिप्त वर्णन एवं उनका योगदान।
  - ➢ कोई एक सामाजिक मुद्दे का अध्ययन कर प्रतिवेदन तैयार करें।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1. प्रसाद भुवनेश्वर, भारतीय स्कूलों में समाज अध्ययन का शिक्षण।
2. सिंह रामपाल, सामाजिक अध्ययन शिक्षण।
3. शर्मा, एम.वी., सामाजिक अध्ययन की शिक्षण विधि।
4. त्यागी, जी.एस.डी., नागरिक शास्त्र का शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
5. वर्मा, रामचन्द्र आचार्य, मानक हिन्दी व्याकरण।
6. वाजपेयी दास किशोरी, हिन्दी शब्दानुशासन।
7. बाहरी हरदेव, व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण।
8. पाठक, आर.पी. (2012) हिन्दी भाषा शिक्षण, कनिस्का प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली।
9. पाठक, आर.पी. (2010) सामाजिक अध्ययन शिक्षण, कनिस्का प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली।
10. Apple m.w. (2008) can school contribute to a more just society education citizenship and social justice, 3(3) 239-261.
11. brantom F.K. : The teaching of social studies in changing world.
12. Chash, S.C. (2007) history of education in India, NCERT (2005) national curriculum frameword, NCERT.
13. Clanton golding of the center for study of higher education integrating of disciplines.
14. Daman C. howard, rastman, mail (1965) “The use of language” NewYork. Hold rinchyan and winstan. Inc.
15. Dengz Z. 92013 school subject and academic and discipline in a luke a woods, B.K. Weir(eds) curriculum, syllabus design and equity : a printer and model routledge.
16. Egen. Marlow & roa, D.B. (2003) teaching successfully, discovery pub. House New Delhi.
17. Freeman diane-larsen (2000) technigues and principle in language teaching, oxford 049.
18. Sharma. L.M. 1977 (teaching of science & life science Dhanpat Rai & sons Delhi.
19. Wesley, edger brose : Social studies for school.

शिक्षाशास्त्री प्रथम वर्ष

षष्ठ प्रश्न पत्र

जेन्डर, विद्यालय एवं समाज

कोर्स कोड – S.S.106 **पूर्णांक – 50**

(बा.40+ आ. 10)

उद्देश्य : –

1. जेन्डर तथा काम के विषय में अन्तर करने में सक्षम हो सकेगें।
2. जेन्डर सम्बन्धी अध्ययन के विभिन्न मुख्य सम्प्रत्ययों की समझ विकसित कर सकेगें।
3. विद्यालय, पाठ्यक्रम, अनुशासनात्मक कार्यवाही, शैक्षणिक प्रक्रिया तथा जाति, वर्ग, धर्म तथा विभिन्न क्षेत्रों के साथ अन्तः क्रिया में लिंग सम्बन्धी मुद्दों को सीखने में समर्थ हो सकेगें।
4. समाज के सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक विकास में महिलाओं के योगदान के प्रति समझ विकसित कर सकेगें।
5. मूलपाठ पुस्तकों तथा विविध पाठ्यक्रमों में लिंग सम्बन्धी विविध पहलुओं का अध्ययन कर सकेगें।
6. कार्यस्थलों पर काम उत्पीड़न से सम्बन्धित मुद्दों को समझने तथा लिंग और कामुकता के सम्प्रत्यय को सीखने में वैचारिक उपकरणों का अनुप्रयोग कर सकेगें।

पाठ्यवस्तु – **40 अंक**

इकाई – 1

जेन्डर सम्बन्धी मुद्दें एवं मुख्य सम्प्रत्यय

- जेन्डर अध्ययन से अभिप्राय, आवश्यकता एवं क्षेत्र। अध्यापक शिक्षा में महत्व। जेन्डर आधारित संकल्पनाएं, जेन्डर, पितृसत्ता, नारी समता, नारीवादिता
- जेन्डर तथा काम – अर्थ, परिभाषा, विभिन्न सामाजिक समूहों, क्षेत्रों तथा समयों में जेन्डर तथा काम की परिभाषा।
- विविध सांस्कृतिक विचारों के परिप्रेक्ष्य में जेन्डर, काम, कामुकता, पितृसत्ता, पुरुषत्व तथा नारीवाद।
- जेन्डर –भेंद, जेन्डर –रूढ़िवादिता तथा सशक्तिकरण।
- जाति, वर्ग, धर्म, जातियता, निर्योग्यता के सम्बन्ध में निष्पक्षता तथा समानता।
- समाज में जेन्डर सम्बन्धी मुद्दों की चुनौतियां तथा विभिन्न संस्थाओं (यथा – परिवार जाति, धर्म, संस्कृति, मीडिया एवं लोकप्रिय संस्कृति (फिल्म, विज्ञापन, संगीत, आदि) की कानून तथा राज्य में भूमिका।

इकाई – 2

विद्यालयों में लिंगीय असमानता

- विद्यालय तथा कक्षा–कक्ष, रीति–रिवाज तथा विद्यालयीय दिनचर्या, कक्षा–कक्ष अन्तःक्रिया तथा महिलाओं तथा पुरुषों में अनुशासनात्मक भेद करने की प्रक्रिया में जेन्डर सम्बन्धी मुद्दों की भूमिका तथा उत्तरदायित्व।
- ज्ञान की संरचना के सम्बन्ध में जेन्डर सम्बन्धी असमानता।
- यौन शिक्षा में भ्रान्तियॉं।
- कक्षा–कक्ष एवं विद्यालय के प्रबन्ध में असमानता।
- चुनौतीपूर्ण जेन्डर सम्बन्धी असमानता एवं जेन्डर सम्बन्धी समानता में विद्यालय, समूह, अध्यापक, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों की भूमिका।

- शिक्षक :– परिवर्तन के कारक के रूप में।

इकाई – 3

भारतीय समाज में महिलाएं

- भारतीय समाज में महिलाओं की विश्लेषणात्मक स्थिति (काम, शिक्षा, स्वास्थ्य, कार्यसहभागिता के सम्बन्ध में)
- औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा में महिलाओं की अभिगम्यता एवं सहभागिता (नामाकंन, पाठ्यक्रम, विषयवस्तु में लिंग–भेद)।
- योजना एवं निर्णय लेने में महिलाओं की सहभागिता।
- मानवाधिकार एवं नारी सशक्तिकरण।

इकाई – 4

लिंग सम्बन्धी सिद्धान्त और शिक्षा :– भारतीय सन्दर्भ में

- समाजीकरण सिद्धान्त (Socialization Theory)
- लिंग भेद सिद्धान्त (Gender Difference Theory)
- संरचनात्मक सिद्धान्त (Structural Theory)
- अरचनात्मक सिद्धान्त (Deconstruction Theory)
- लिंग संवेदनशीलता और समाज के लिए इसका महत्व
- परिवार में लिंग भेद–भाव
- समाज में लिंग भेद–भाव
- विद्यालय में लिंग भेद–भाव
- लिंग समतुल्यता विकसित करने में शिक्षा, परिवार, मीडिया तथा संस्थाओं की भूमिका।

इकाई – 5 महिला शिक्षा एवं उनका योगदान

- महिला शिक्षा, साक्षरता दर तथा लैंगिक अनुपात और इनको प्रभावित करने वाले कारक। महिला सशक्तिकरण : अवधारणा, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, संकेत, राष्ट्रीय योजनाएं तथा नीतियाँ।
- महिलाओं का योगदान (वर्तमान संदर्भ में) : समाज, राजनीति, विज्ञान, तकनीकी प्रबन्धन में। भारत की प्रसिद्ध महिलाएँ एवं उनका योगदान (भारतीय प्राचीन साहित्य के विशेष संदर्भ में)।
- परिवार, पड़ौस तथा अन्य औपचारिक एवं अनौपचारिक संस्थाओं में काम उत्पीडन
- यौन उत्पीड़न के सुधारने में संस्थाओं की भूमिका
- सामाजिक और संवेगात्मक विकास में लिंग तथा काम उत्पीड़न का प्रभाव

सत्रीय कार्य :– 10 अंक

लिखित परीक्षण – 5 अंक

निम्नलिखित में से किसी एक पर दत्त कार्य – 5 अंक

- विद्यालय के विद्यार्थियों या शिक्षकों या अन्य कर्मचारियों के लिंग संवेदीकरण हेतु विचारों का संकलन (प्रश्नावली)।
- साहित्य में से किसी आदर्श महिला का व्यक्तित्व एवं कृतित्व तैयार करना।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1. वासु (1990) एजुकेशन इन मॉडर्न इण्डिया ओरिएण्ड बुक कम्पनी, नई दिल्ली।?
2. भगवान दयाल (2005) दी डेवलमेंट ऑफ मार्डर्न इण्डियन एजूकेशन ओरियण्ट – लोंगमास, नई दिल्ली।
3. गुप्ता, एस.पी. (2010) भारतीय शिक्षा का इतिहास व समस्याएं, शारदा पुस्तक मन्दिर, इलाहाबाद (उ.प्र.)।
4. कबीर, हुमायूँ (2000) एजुकेशन इन न्यू इण्डिया, एशिया बुक हाउस, मुम्बई।
5. रस्तोगी, के.जी. (2000) भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्याएं, नमन प्रकाशन नई दिल्ली।
6. सिंहल, एम.पी. (1995) भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्याएं, मान्यता प्रकाशन नई दिल्ली।
7. पाठक, आर.पी. (2005) एजुकेशन इन दि एमरजिंग इंडिया, अटलांटिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली
8. सच्चिदानन्द, ए.पी. एवं देवनाथ, आर. (2010) आधुनिकशिक्षायाः विकासः नवशिक्षानीतिश्च।
9. प्राथमिक शिक्षा में अभिनव प्रयोग, एन.सी.ई.आर.टी., भारत सरकार, नई दिल्ली।
10. मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन, रिपोर्ट ऑफ दि सेकेण्डरी एजुकेशन (2010), भारत सरकार, नई दिल्ली।
11. पाठक, आर.पी. (2011) भारतीय समाज में शिक्षा, पिर्यसन एजुकेशन, नालेज पार्क, नोएडा, उ.प्र.।

शिक्षाशास्त्री प्रथवर्ष

सप्तम प्रश्नपत्र

शिक्षा का दार्शनिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य

Course Code S.S. 112 **पूर्णांक 100**

(बा.80+ आ. 20)

उद्देश्य –

1. छात्र शिक्षा के विषय में तीन आधारभूत प्रश्नों– क्या, क्यों, तथा कैसे का उत्तर देने में समर्थ हो सकेंगें।
2. भारतीय तथा पाश्चात्य दार्शनिकों के योगदान के विषय में समझ विकसित कर सकेगे।
3. आधुनिक भारतीय समाज आधारित – दार्शनिक सामाजिक सांस्कृतिक परम्पराओं के आदर्शों एवं मूल्यों को समझ सकेगें।
4. भारतीय शिक्षा में संवैधानिक व्यवस्थाओं को समझ सकेगें।
5. विभिन्न दार्शनिक एवं सामाजिक विषय क्षेत्रों के बारे में अपने आत्म दृष्टिकोण का निर्माण कर सकेगें।
6. ऐच्छिक सामाजिक परिवर्तन तथा सामाजिक आर्थिक विकास में शिक्षा की भूमिका का वर्णन कर सकेगें।
7. शिक्षा के अन्तर्गत समसामयिक अवधारणाओं के महत्व को जान सकेगें।
8. स्वस्थ भविष्य के निर्माण के विषय में तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों के विषय में आत्मज्ञान विकसित कर सकेगें।

पाठ्यवस्तु – **80 अंक**

इकाई – 1 शिक्षा एवं दर्शन

* शिक्षा – अर्थ, परिभाषा, प्रकृति, प्रकार (औपचारिक, अनौपचारिक, निरौपचारिक) तथा शिक्षा के कार्य।
* शिक्षा के उद्देश्य – वैयक्तिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय।
* दर्शन – अर्थ, परिभाषा, प्रकृति तथा दर्शन का क्षेत्र।
* शिक्षा के अभिकरण – परिवार, विद्यालय, धार्मिक संस्था, समुदाय, जनसंचार माध्यम, मुक्त विद्यालय, समवयस्क वर्ग, अराजकीय संस्थाएँ।

इकाई – 2 दर्शन के पाश्चात्य एवं भारतीय सम्प्रदाय

* पाश्चात्य दर्शन – अर्थ, परिभाषा, तथा स्वरूप
* आदर्शवाद, प्रकृतिवाद, प्रयोजनवाद, यथार्थवाद, अस्तित्ववाद तथा शिक्षा में उनके भौक्षिक निहितार्थ।
* भारतीय दर्शन – अर्थ, परिभाषा तथा स्वरूप
* सांख्य, योग, न्याय, वेदान्त, वैषेशिक – मीमांसा दर्शन तथा शिक्षा में उनके शैक्षिक निहितार्थ।
* चार्वाक, बौद्ध, जैन दर्शन तथा शिक्षा में उनके शैक्षिक निहितार्थ।
* पाश्चात्य एवं भारतीय दर्शन में समानता एवं असमानता।

इकाई – 3 शिक्षा एवं समाज

* भौक्षिक समाजशास्त्र – अर्थ, परिभाषा, प्रकृति, स्वरूप तथा बालक का सामाजीकरण।
* समाजशास्त्र तथा शिक्षा का सम्बन्ध, सामाजिक व्यवस्था की उपप्रणाली के रूप में शिक़्षा, भौक्षिक समाजशास्त्र तथा शिक्षा के समाजशास्त्र का स्वरूप एवं अर्थ।
* सामाजिक परिवर्तन एवं सामाजिक कल्याण के साधन के रूप में शिक्षा।
* मानवीय एवं आर्थिक विकास के साधन के रूप में शिक्षा।

* नई सामाजिक व्यवस्था का अर्थ एवं शिक्षा का आधुनिकीकरण।

इकाई – 4 शैक्षिक विचार :– भारतीय एवं पाश्चात्य विचारक

* स्वामी विवेकानन्द, टैगोर, महात्मा गांधी, अरविन्दों घोष, गीजू भाई और स्वामी दयानन्द का शिक्षा विषयक चिन्तन में योगदान एवं उनके शैक्षिक निहितार्थ।
* प्लेटो, अरस्तू, सुकरात, रूसों, जॉन डीवी फ्रोबेल, पेश्टोलॉजी, तथा मोन्टेसरी का शिक्षा विशयक चिन्तन में योगदान एवं उनके शैक्षिक निहितार्थ।

इकाई – 5 शिक्षा एवं सामाजिक प्रक्रिया

* सामाजिक परिवर्तन का अर्थ :– सामाजिक परिवर्तन का स्वरूप, सामाजिक परिवर्तन और शिक्षा।
* सामाजिक गतिशीलता :– अर्थ, स्वरूप, एवं शिक्षा की भूमिका।
* सामाजिक स्तरीकरण तथा सामाजिक गति ीलता से सम्बद्ध शिक्षा – सामाजिक सम दृष्टि एवं शैक्षिक अवसरों की समानता से सम्बद्ध शिक्षा (विशेषकर समाज के कमजोर वर्ग के सन्दर्भ में)
* भारत में सामाजिक परिवर्तन पर बाधाऐं (जाति, नृजातीयता, वर्ग, भाषा, धर्म, क्षेत्रवाद)
* भारतीय संविधान में शिक्षा, शैक्षिक अवसर एवं विभिन्न वंचित वर्गो (अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा असक्षम वर्ग) के लिए उनकी भूमिका।
* भारतीयकरण, आधुनिकीकरण, सामाजीकरण, सामाजिक नियंत्रण एवं शिक्षा की भूमिका।

सत्रीय कार्य **20 अंक**

- लिखित परीक्षण – 10 अंक
- निम्नलिखित में से किसी एक बिन्दु पर दत्त कार्य – 10 अंक

1. भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन।
2. किन्हीं दो दार्शनिकों के शैक्षिक विचारों की तुलना करना।
3. सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा के प्रभावों का सर्वेक्षणात्मक अध्ययन तथा उसका 8 या 10 पृष्ठों में संक्षिप्त प्रतिवेदन प्रस्तुत करना।
4. सामाजिक परिवर्तन तथा समाज के विभिन्न वर्गों पर शिक्षा के प्रभावों का अध्ययन करना।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. पाण्डेय रामशकल – शिक्षा दर्शन
2. उपाध्याय भुवनेश – भारतीय शिक्षा दर्शन
3. निगम शोभा – भारतीय दर्शन
4. सक्सेना एन. आर. स्वरूप – शिक्षा दर्शन तथा महान शिक्षा शास्त्री
5. भार्मा डी. एल. – शिक्षा और भारतीय समाज
6. भार्मा रामनाथ – भारतीय शिक्षा दर्शन
7. सेवानी अशोक – शिक्षा दर्शन तथा उभरता भारतीय समाज
8. सक्सेना एन. आर. स्वरूप – शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार
9. ओड़. एल. के. – शिक्षा के दार्शनिक समाजशास्त्रीय पीठिका
10. पाण्डेय के. पी. – शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार
11. भार्मा ओ. पी. – शिक्षा के दार्शनिक आधार
12. पाठक, आर.पी. (2010) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धान्त, पिर्यसन एजुकेशन, नालेज पार्क, नोएडा।
13. जायसवाल सीताराम – भौक्षिक समाजशास्त्र
14. पाण्डेय आर. एस. – शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि
15. सिकरवार प्रेमसिंह – वैश्विकचिन्तकाः
16. सक्सेना एन. आर. स्वरूप – शिक्षा सिद्धान्त
17. सिंह एन. पी. – शिक्षा के दार्शनिक आधार

18. पाठक, आर.पी. (2011) भारत के महान शिक्षाशास्त्री, पिर्यसन एजुकेशन, नालेज पार्क नोएडा (उ.प्र.)
19. पाण्डेय राम शकल – पाश्चात्य तथा भारतीय शिक्षा दर्शन
20. लाल रमन विहारी – विश्व के श्रेष्ठ शैक्षिक चिन्तक
21. पाठक, आर.पी. (2012) विश्व के महान शिक्षाशास्त्री, पिर्यसन एजुकेशन, नालेज पार्क, नोएडा (उ.प्र.)
22- Choube S.P. And – Choube Akhilesh Philosophical And Sociological Basis of Education
23- Chouhan Briy and Others – Scheduled Caste Education
24- Kuppuswami B – Social Change In India
25- Mani And Sharma – Classical Indian Philosophies And their Practice In Education
26- Sharma Ramnath – Textbook Of Education Philosophy
27- Panday R.S. – Education And Emerging Indian Society
28- Ottaway – Education And Society
29- Mathur S.S – A Sociological Approach To Indian Education
30- Panday R.S. – Principles Of Education
31- Taneja V.R. – Education Thought And Practice.
32- Altekar A.S. Education In Ancient India
33- Mukherjee – Education In Ancient India

शिक्षाशास्त्री प्रथवर्ष

अष्टम प्रश्न पत्र

संस्कृत शिक्षणम् (अनिवार्य–शिक्षण–शास्त्रम्)

Course Code S.S. 113 **पूर्णांकाः 100**

(बा.80+ आ. 20)

उद्देश्यानि –

1. छात्राध्यापकाः संस्कृतभाषायाः विकासस्य सांस्कृतिकपरिवेशस्य च अवगमने समर्थाः स्युः।
2. संस्कृतमाध्यमेन अभिव्यक्तान् विचारान् ग्रहितुं समर्थाः स्युः।
3. सम्प्रदाय–सभ्यता–संस्कृति–देशभक्ति–आस्तिक्यभावनेत्यादीनानाम् अवबोधे समर्थाः स्युः।
4. माध्यमिकस्तरस्य पाठ्यचर्यायां संस्कृतस्य स्थाननिर्धारणे सक्षमाः स्युः।
5. संस्कृतशिक्षणस्य विधीनाम् उपागमाना च अवगमने, प्रयोगे च दक्षता प्राप्नुयुः।
6. संस्कृतशिक्षण कौशलानामभ्यासे समर्थाः भवेयुः।
7. विविधपाठयोजनानाम् अवगमने, निर्माणे च योग्याः स्युः।
8. संस्कृतशिक्षणस्य सिद्धान्तानां सूत्राणा च अवगमने प्रयोगे च सामर्थ्यं प्राप्नुयुः।
9. विविधशिक्षणोपकरणानां निर्माणे प्रयोगे च प्रबुद्धाः भवेयुः।
10. मौखिकरूपेण संस्कृते अभिव्यक्तान् विचारान् श्रुत्वा भावं ग्रहीतुं छात्राः शक्ताः भवेयुः।
11. संस्कृते लिखितान् विचारान् पठित्वा अर्थं ज्ञातुं छात्राः समर्थाः भवेयुः।
12. माध्यमिकस्तरे संस्कृतपाठ्यपुस्तकानाम् अध्ययने, विश्लेषणे च योग्यतां प्राप्नुयुः।
13. मूल्याङ्.कनोपकरणानां निर्माणे, प्रयोगे च दक्षाः भवेयुः।

पाठ्यवस्तु – **80 अंकाः**

अन्वितिः – 1 संस्कृतभाषायाः सम्प्रत्यात्मक–पृष्ठभूमिः, ऐतिहासिक–पृष्ठभूमिः उद्देश्यानि च।

* संस्कृतभाषायाः प्रकृतिः।
* संस्कृतस्य भाषावैज्ञानिकम् ऐतिहासिकं, सांस्कृतिकं, राष्ट्रीयं, वैज्ञानिकं, आध्यात्मिकं च महत्वम्।
* आधुनिकभारते संस्कृताध्यापनस्य आवश्यकता महत्वञ्च।
* पाठ्यचर्यायां संस्कृतस्य स्थानं प्रभावश्च।
* विविध पाठ्यक्रमेषु संस्कृतस्य स्थानम् (आधुनिकमेवं परम्परागतधारायाम्)
* संस्कृतशिक्षणस्य समस्या
* संस्कृताध्यापकगुणाः उत्तरदायित्व च।

संस्कृतशिक्षणस्योद्देश्यानि :– प्राथमिक–माध्यमिक–उच्चमाध्यमिकस्तरेषु संस्कृतशिक्षणस्योद्देश्यानि वैशिष्ट्यानि च

अन्वितिः– 2 भाषायाः कौशलानि, शिक्षणसूत्राणि सिद्धान्ताः शिक्षणपद्धतयश्च।

* कौशलानां प्रकाराः (श्रवण, भाशण, पठन, लेखन),
* विविध शिक्षणसूत्राणि (सरलात् कठिंनं प्रति, ज्ञातात् अज्ञातं प्रति, स्थूलात् सूक्ष्मं प्रति, पूर्णात् अंशं प्रति, विषेशात् सामान्यं प्रति, अनुभवात् तर्कं प्रति, अनिश्चिात् निश्चितं प्रति, मनोवैज्ञानिकात् तार्किकं प्रति, आगमनात् निगमनं प्रति)।
* संस्कृतशिक्षणस्य सामान्यसिद्धान्ताः (स्वाभाविकतायाः, अभ्यासस्य, रूचेः, सक्रियतायाः, मौखिककार्यस्य, अनुपातस्य, क्रमस्य, बहुमुखी, स्वतन्त्रतायाः वैयक्तिविभिन्नतायाश्च सिद्धान्तः)

संस्कृतशिक्षणपद्धतयः –पाठशालापद्धतिः, भण्डारकरपद्धतिः,पाठ्यपुस्तकपद्धतिः, प्रत्यक्षपद्धतिः, सम्भाषणपद्धतिः, समन्वयपद्धतिश्च।

अन्वितिः – 3 संस्कृतसाहित्यशिक्षणं विविधाः पाठयोजनाश्च

* पाठयोजनाया अर्थः, उद्देश्यानि, महत्वं, स्वरूपञ्च।
* गद्यशिक्षणम्
* पद्यशिक्षणम्
* नाटकशिक्षणम्
* कथाशिक्षणम्
* व्याकरणशिक्षणम्
* रचनाशिक्षणम्
* अनुवाद–शिक्षणम्
* इत्येतेषां प्रयोजनानि, लक्षणानि, उद्देश्यानि, महत्वं, शिक्षणविधयः सोपानानि, पाठयोजनाश्च।
* मूल्याकंनविधयः, आदर्शप्रश्नपत्रनिर्माणञ्च।

अन्वितिः – 4 संस्कृतशिक्षणे दृश्य–श्रव्योपकरणानि उपागमाः च।

* संस्कृतशिक्षणे मनोवैज्ञानिकपरिप्रेक्ष्ये दृश्य–श्रव्योपकरणानां उपयोगः।
* दृश्यश्रव्यसाधनानि।
* दृश्य श्रव्योपकरणानां उपयोगः– काव्यशिक्षणे, व्याकरणशिक्षणे च।
* शिक्षणे दृश्य–श्रव्यसाधनानां प्रयोगः लाभाश्च।
* शिक्षणोपागमाः– अर्थः, महत्वं, प्रकाराः शिक्षणस्योपागमविध्योरन्तरञ्च।
* शिक्षण कौशलानि (प्रश्न–व्याख्यान–दृष्टान्त–श्यामपट्ट–पुनर्वलन–उद्दीपन–परिवर्तनानि च)

अन्वितिः – 5 पाठ्यसहगामिक्रियाः

* भाषाकौशलानां विकासाय उपयुक्ताः पाठ्यसहगामिक्रियाः–(वादविवाद–वाक्–स्पर्धा–निबन्धलेखन–कथालेखन–कथाकथन–सङ्गोष्ठी–समस्यापूर्ति–गान–विनोदकणिका–प्रहेलिका–प्रदर्शिनी–प्रश्नोत्तरी–विद्यालयपत्रिका–भाषाक्रीडाश्च।)
* शब्दरूपाणां, धातुरूपाणां श्लोकानां च कण्ठस्थीकरणस्य महत्वम् उपायाश्च।
* संस्कृतशिक्षणे नवाचाराः नवाचाराणां प्रयोगश्च।

सत्रीय कार्यम् **20 अंकाः**

- लिखित–परीक्षणम् – 10 अंकाः
- अधोलिखितेषु कमप्येकमधिकृत्य दत्तकार्यम् – 10 अंकाः

1. समूहपरिचर्चा – संस्कृतसाहित्यस्य परिप्रेक्ष्ये।
2. वाद–विवादः – आधुनिक–संस्कृतशिक्षाशास्त्रिणां विचारान् अधिकृत्य।
3. शोधपत्र–लेखनम्–राजस्थानराज्ये संस्कृतभाषायाः स्थितिः।
4. कमप्येकं संस्कृतविद्यालयमधिकृत्य प्रतिवेदनलेखनम्।

सन्दर्भग्रन्थाः –

1. शर्मा, लक्ष्मीनारायण; सिंह, फतेह;, संस्कृतशिक्षणम् नवीनप्रविधय च, आदित्य प्रकाशन जयपुर।
2. मित्तल, सन्तोष;, संस्कृतशिक्षणम्, नवचेतना पब्लिकेशन्स्, जयपुर।
3. मिश्र, आजाद;,(प्रधानसम्पादक), संस्कृतभाषाशिक्षणम्, मध्यप्रदेशसंस्कृत बोर्ड, मध्यप्रदेश।
4. झा, उदयशंकरः, संस्कृतशिक्षणम्(शास्त्रशिक्षणसहितम्), चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
5. लता, एन, साहित्यशिक्षणम्, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, तिरूपति।
6. रमेश, वाई. एस. साहित्यशिक्षणविधि, हंसाप्रकाशन, जयपुर।
7. चौधरी, प्रभादेवी, साहित्यशिक्षणम्, भोपाल परिसर भोपाल।
8. पाण्डेय, लक्ष्मीनिवास, संस्कृतकाव्यशिक्षणम्, श्रीलक्ष्मीसरस्वतीप्रकाशन, वाराणसी।
9. रा, देवनाथ;, उपाध्याय, बी, व्याकरणशिक्षणविधयः भारतीयविद्या संस्थान, वाराणसी।
10. गायत्री, मुरलीकृष्ण, अध्यापक कौशल दीपिका, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।
11. विश्वास, कौशलबोधिनी, संस्कृत भारती, दिल्ली।
12. सफाया, रघुनाथ, संस्कृत शिक्षण, हरियाणा गन्थ अकादमी।
13. शास्त्री, वासुदेव, क्रियात्मक संस्कृत शिक्षण, राश्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नवदेहली।
14. पाण्डेय इन्दिराचरण, संस्कृत शिक्षण समीक्षण, सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय, वाराणसी।
15. चौबे, विजयनारायण, संस्कृत शिक्षण विधि, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
16. सिंह, कर्ण, संस्कृत शिक्षण विधि, एच, पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा।
17. पाण्डेय, अरविन्द कुमार, संस्कृत शिक्षा का विकास, आदित्य बुक सेंटर दिल्ली।
18. मित्तल सन्तोष भाषाशिक्षणे नवाचाराः नवचेतना पब्लिकेशन्स्, जयपुर।
19. मित्तल सन्तोष संस्कृत शिक्षण (हिन्दी माध्यम) आर.लाल.बुक डिपो मेरठ।

विद्यालयीय गतिविधियों, क्षेत्र सम्बद्ध गतिविधियों एवं ई.पी.सी. सम्बद्ध गतिविधियों का आयोजन

विद्यालयीय गतिविधियाँ एवं क्षेत्र सम्बद्ध आयोज्य गतिविधियाँ :–

- विद्यालय सम्बद्ध गतिविधियों के अन्तर्गत निम्नलिखित गतिविधियाँ आयोजित की जा सकती हैं।
- प्रातः कालीन प्रार्थना सभा में भाग लेना।
- समय सारिणी का निर्माण।
- विद्यालय अभिलेख पञ्जिकाओं का निर्माण।
- शिक्षक अभिभावक सम्मेलन में सहभागिता एवं प्रतिवेदन।
- विद्यालयीय प्रशासन एंव प्रबन्धन में सहयोग तथा स्वानुभव अभिलेख।
- विविध राष्ट्रीय अभियानों में सक्रिय प्रतिभागिता।
- विद्यालय पुस्तकालय संधारण एवं संचालन व प्रतिवेदन।
- संस्कृत संभाषण शिविर आयोजन।
- विद्यालयीय उत्सवों एंव समारोहों सहभागिता व प्रतिवेदन।
- वृक्षारोपण कार्यक्रम में सहभागिता ।
- विद्यालयीय / विश्वविद्यालयीय / महाविद्यालयीय स्वच्छता एवं सौन्दर्यीकरण कार्यक्रमों में सहभागिता।
- विश्वविद्यालयीय / महाविद्यालयीय / विभागीय उत्सवों एवं कार्यक्रमों में सहभागिता व प्रतिवेदन लेखन।
- छात्र निर्देशन एंव उपबोधन कार्यक्रम में सहभागिता।
- विश्वविद्यालयीय / महाविद्यालयीय / विभागीय स्तर पर राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रमों में सहभागिता एवं प्रतिवेदन लेखन।
- शिक्षण सामग्री आधारित प्रदर्शनी का आयोजन।
- जन जागरूकता हेतु नाट्य कार्यक्रमों का आयोजन।
- राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम संचालन एंव प्रतिवेदन लेखन।
- वार्षिक खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन एवं प्रतिवेदन लेखन।

उपर्युक्त गतिविधियों में से पाँच (05) गतिविधियों में सम्बद्ध विद्यालय स्तर तथा पाँच (05) गतिविधियों में सम्बद्ध विश्वविद्यालय / विभाग / महाविद्यालय स्तर पर सक्रिय सहभागिता तथा प्रतिवेदन लेखन सभी प्रशिक्षणार्थियों के लिए अनिवार्य होगा। चयनित गतिविधियों को क्रमशः शिक्षाशास्त्री के दोनों वर्षों (प्रथम व द्वितीय) में दोनों स्तरों (सम्बद्ध विद्यालय स्तर पर तथा विश्वविद्यालय / विभाग / महाविद्यालय स्तर पर) न्यूनतम 5–5 की संख्या में सभी छात्रों को अनिवार्य रूप से पूर्ण करना होगा।

व्यावसायिक अभिक्षमता विकास (E.P.C.) हेतु आयोज्य शैक्षिक गतिविधियाँ :–

ई.पी.सी.–1 (अ) संस्कृत सम्भाषण कौशल विकास

शिक्षाशास्त्री प्रथम वर्ष में ई.पी.सी.–1 (अ) को पूर्ण करने हेतु सत्रारम्भ में 15 दिवसों का संस्कृत सम्भाषण शिविर आयोजित करना अनिवार्य होगा। उक्त शिविर का आयोजन **संस्कृत–भारती के प्रशिक्षित प्रशिक्षकों एवं संस्कृत भाषा अध्यापकों** के निर्देशन में किया जा सकेगा। प्राचार्य / विभागाध्यक्ष अपने अन्य सभी सहकर्मियों के सहयोग से निष्ठापूर्वक उक्त शिविर आयोजन को सम्पादित करेंगे।

ई.पी.सी.–1 (ब) पाठ्यवस्तु पठन एवं चिन्तन

शिक्षाशास्त्री प्रथम वर्ष ई.पी.सी.–1 (ब) को पूर्ण करने हेतु **समूह परिचर्चा** का आयोजन एवं प्रतिवेदन लेखन। विषय अध्यापक, विषय निर्धारण एवं समूह, विभाजन कर इसे सम्पादित करवायेंगे।

ई.पी.सी.–2 शिक्षा में नाट्य एवं कला

शिक्षाशास्त्री प्रथम वर्ष ई.पी.सी.–2 को सम्पादित करने हेतु निम्नलिखित गतिविधियों में से दो में प्रत्येक छात्र की प्रतिभागिता अनिवार्य होगी –

- **सामाजिक बुराईयाँ** – दहेज प्रथा, छुआछूत, भ्रूणहत्या, मृत्युभोज एवं बाल–विवाह पर महाविद्यालय/शिक्षाविभाग से सम्बन्धित क्षेत्र में जनजागरण हेतु नुक्कड़ नाटक का आयोजन, नारों/श्लोगन का निर्माण तथा प्रतिवेदन लेखन।
- **राष्ट्रीय अभियान** – स्वच्छता अभियान, साक्षरता अभियान, स्वास्थ्य, सुरक्षा, यातायात नियम, आपदा प्रबन्धन आदि विषयों में से किसी एक पर नुक्कड़ नाटक का आयोजन, श्लोगन/नारों का निर्माण तथा प्रतिवेदन लेखन।
- **भारतीय शिक्षाशास्त्री** – गाँधी, टैगोर, विवेकानन्द, महर्षि, अरविन्द, जे.कृष्णमूर्ति तथा गीजूभाई के शैक्षिक विचारों पर नुक्कड़ नाटक आयोजन एवं प्रतिवेदन लेखन।
- **राजस्थान की कला एवं संस्कृति** – राजस्थान की कला एवं संस्कृति पर आधारित शैक्षिक गतिविधियों एवं नुक्कड़ नाटक का आयोजन एवं प्रतिवेदन लेखन।

शिक्षाशास्त्री (बी.एड.) पाठ्यक्रम

द्वितीय वर्ष

द्वितीय वर्ष का पाठ्यक्रम

शिक्षाशास्त्री (बी.एड) द्वितीय वर्ष पाठ्यक्रम का स्वरूप कुल अंक – 1100						
प्रश्न पत्र सं. Paper No.	अध्येयांश कूट Course Code	प्रश्नपत्रों के नाम Title of the Papers	अध्येयांश श्रेणी Course Category	मूल्यांकन Evolution		
				बाह्य External	आन्तरिक Internal	पूर्णांक Total Marks
IX	s.s.107 (अ)–(ब)	विद्यालय विषय शिक्षण (छात्राध्यापकों को इनमें से किसी एक विद्यालय शिक्षण विषय का चयन करना होगा।	'चयनित शिक्षणशास्त्र' (Elective Pedagogy)	80	20	100
	1	हिन्दी शिक्षण		80	20	100
	2	अंग्रेजी शिक्षण		80	20	100
	3	सामाजिक अध्ययन शिक्षण		80	20	100
	4	नागरिक शास्त्र शिक्षण		80	20	100
	5	भूगोल शिक्षण		80	20	100
	6	इतिहास शिक्षण		80	20	100
	7	अर्थशास्त्र शिक्षण		80	20	100
	8	गृह विज्ञान शिक्षण		80	20	100
	9	गणित शिक्षण		80	20	100
X	S.S. 108	ज्ञान एवं पाठ्यक्रम	संकेन्द्रित अनिवार्य (Core Compulsory)	80	20	100
XI	S.S. 109	अधिगम आकलन	संकेन्द्रित अनिवार्य (Core Compulsory)	80	20	100
XII	S.S. 110	समावेशी शिक्षा	संकेन्द्रित अनिवार्य (Core Compulsory)	40	10	50
XIII	S.S. 111	विशिष्ट ऐच्छिक विषय (छात्राध्यापकों को इनमें से किसी एक विषय का चयन करना होगा)	विशिष्ट चयनित शिक्षण शास्त्र (Elective Special Pedagogy)	80	20	100
	1	शैक्षिक निर्देशन एवं उपबोधन		80	20	100
	2	मूल्य शिक्षा		80	20	100
	3	योग शिक्षा		80	20	100
	4	स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा		80	20	100
	5	शान्ति शिक्षा		80	20	100
	6	मानवाधिकार शिक्षा		80	20	100
	7	पर्यावरण शिक्षा		80	20	100
	8	ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड		80	20	100
XIV	S.S. 114	विद्यालय प्रबन्धन एवं नेतृत्व	संकेन्द्रित अनिवार्य (Core Compulsory)	80	20	100
XV	S.S. 115	शिक्षण अधिगम की तकनीकी	संकेन्द्रित अनिवार्य (Core Compulsory)	40	10	50
XVI	S.S. 116	शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान	संकेन्द्रित अनिवार्य (Core Compulsory)	40	10	50
विद्यालय सम्बद्धता (School Internship)		(I) शिक्षण अभ्यास		125	125	250
		(II) विद्यालय गतिविधियाँ		50	50	100
ई.पी.सी. (EPC)–3	सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी का अवबोध			20 (प्रायो.)	20	40
ई.पी.सी. (EPC)–4	(अ) छात्र व्यक्तित्व अवबोध			15	15	30
	(ब) आत्मबोध			15	15	30

*** EPC (ई.पी.सी.) – Enhancing Processional Capacities (व्यवसायिक अभिक्षमता विकास)।**

शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष

नवम प्रश्न पत्र (चयनित शिक्षण शास्त्र)

विद्यालय शिक्षण विषय – 1. हिन्दी शिक्षण

Course Code S.S. 107 (अ)–(ब) **पूर्णांक 100**

(बा.80+ आ. 20)

उद्देश्य :

1. भाषा संरचना में हिन्दी भाषा तत्वों का ज्ञान देना श्रवण, भाषण, वाचन लेखन सम्बन्धी भाषायी कौशलों का ज्ञान देना।
2. माध्यमिक स्तर के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम एवं पाठ्यवस्तु के विश्लेषण एवं समीक्षा की कुशलता का विकास करना।
3. इकाई – दैनिक व सूक्ष्म पाठ योजनाओं के महत्व एवं पाठ निर्माण का ज्ञान देना।
4. हिन्दी भाषा शिक्षण पद्धतियों के उपयोग का ज्ञान कराना।
5. हिन्दी की विद्याओं एवं उनके व्यावहारिक शिक्षण की संस्थितियों का ज्ञान देना।
6. हिन्दी भाषा शिक्षण में श्रव्य, दृश्य उपकरणों के व्यावहारिक उपयोग का ज्ञान देना।
7. हिन्दी शिक्षण में मूल्यांकन के महत्व मूल्यांकन विधियों का ज्ञान देना।
8. निदानात्मक परीक्षण, एवं उपचारात्मक शिक्षण के अर्थ, स्वरुप, महत्व एवं उपयोग का ज्ञान देना।
9. मातृभाषा, राष्ट्रभाषा के रुप में हिन्दी की स्थिति से अवगत कराना।

पाठ्यवस्तु – **80 अंक**

इकाई–1

भाषा, मातृभाषा एवं राष्ट्रभाषा का अर्थ उद्देश्य एवं अर्थग्रहण। भारत में हिन्दी की स्थिति।

भाषायी कौशलों का विकास– निम्न पक्षों की दृष्टि से–

- श्रवण, उच्चारण, वर्तनी, वाचन, तथा अभिव्यक्ति–मौखिक व लिखित।

इकाई–2

हिन्दी का पाठ्यक्रम–

- भाषायी पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धान्त।
- पुस्तकीय पाठ्यवस्तु विश्लेषण सिद्धान्त।
- राजस्थान के प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण एवं समीक्षा।

इकाई–3

पाठ योजनाएँ एवं दृश्य–श्रव्य उपकरण आधार, प्रकार एवं निर्माण–

- कक्षा अध्यापन के सामान्य सिद्धान्त।
- भाषा शिक्षण सम्बन्धी समस्याओं का चयन, विश्लेषण एवं समाधान।
- इकाई, दैनिक व सूक्ष्म शिक्षण पाठ योजनाएँ – उद्देश्य, महत्व, निर्माण के सिद्धान्त एवं निर्माण प्रक्रिया।
- हिन्दी शिक्षण में दृश्य–श्रव्य उपकरणों का निर्माण महत्व एवं उपयोग (विभिन्न विधाओं की दृष्टि से)।

इकाई–4

हिन्दी की विभिन्न विधाएँ तथा शिक्षण विधियाँ–

- गद्य शिक्षण, पद्य शिक्षण, एकांकी शिक्षण, कहानी शिक्षण, व्याकरण शिक्षण एवं रचना शिक्षण
- हिन्दी शिक्षण में निम्नांकित विधियों का उपयोग –
  - ➢ प्रायोजना विधि, निर्देशित स्वाध्याय विधि तथा सूक्ष्म अध्यापन विधि

इकाई–5

हिन्दी शिक्षण में मूल्यांकन तथा उपचारात्मक शिक्षण –

- मूल्यांकन का अर्थ, महत्व एवं विशेषताएँ।
- मूल्यांकन विधियाँ मौखिक, लिखित।
- प्रश्नों के विभिन्न प्रकार एवं रचना की संस्थितियाँ।
- मूल्यांकन प्रश्न पत्र का निर्माण (ब्ल्यू प्रिन्ट सहित)।
- मूल्यांकन प्रश्न पत्र का विश्लेषण।
- हिन्दी भाषा में निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक शिक्षण –
  - ➢ अर्थ, स्वरुप, महत्व एवं उपयोग।

सत्रीय कार्य **20 अंक**

- लिखित परीक्षण – 10 अंक
- निम्नलिखित किसी एक विषय पर दत्त कार्य – 10 अंक

1. उच्चारण एवं वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों के कारण एवं सुझाव (निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक शिक्षण द्वारा)
2. विद्यालय में आयोजनीय सांस्कृतिक संध्या गतिविधियों का प्रारुप एवं क्रियान्विति
3. मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति का महत्व एवं विधायी रुपों का उपयोग यथा– वादविवाद, निबन्धलेखन, रचना कार्य, कविता पाठ, भाषण, आदि।
4. किन्हीं चार दृश्य सामग्रियों का निर्माण एवं उपयोग।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. हिन्दी शिक्षण – रमण बिहारी लाल
2. हिन्दी भाषा शिक्षण – भाई योगेन्द्र जीत
3. हिन्दी शिक्षण विधि – रघुनाथ सफाया
4. मातृभाषा का शिक्षण – के क्षत्रिय
5. भाषा शिक्षण – सीताराम चतुर्वेदी
6. माध्य. विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण निरंजन कुमार सिंह
7. हिन्दी–भाषा शिक्षण – भोलानाथ तिवारी तथा कैलाश चन्दभाटिया
8. हिन्दी शिक्षण पद्धति – बैजनाथ प्रसाद वर्मा
9. हिन्दी शिक्षण – बी. एन. शर्मा
10. हिन्दी शिक्षण – रामशकल पाण्डेय
11. हिन्दी शिक्षण – सावित्री सिंह
12. हिन्दी शिक्षण –शिखा चतुर्वेदी
13. मानक हिन्दी व्याकरण – आचार्य रामचन्द्र वर्मा
14. भाषा– ब्लूम फिल्ड
15. शुद्ध हिन्दी – डॉ. भागीरथ मिश्र
16. शुद्ध हिन्दी – मुरारी लाल
17. हिन्दी शब्दानुशासन – किशोरी दास वाजपेयी
18. पाठक, आर.पी. (2010) हिन्दी शिक्षण, कनिस्का प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली
19. हिन्दी उच्चारण एवं वर्तनी – भगवती प्रसाद शुक्ल
20. व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण – हरदेव बाहरी
21. हिन्दी ध्वनियाँ और उनकाशिक्षण के के सुखिया ।
22. हिन्दी शिक्षण त्रुटिनिदान एवं उपचारः डॉ. एल. के. ओड

शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष

नवम प्रश्न पत्र (चयनित शिक्षण शास्त्र)

विद्यालय शिक्षण विषय – 2. अंग्रेजी शिक्षण (English Teaching)

Course Code S.S. 107 (अ)–(ब) पूर्णांक 100

(बा.80+ आ. 20)

Objective :

1. To enable the student teachers to develop their own skills of listening, speaking, reading and writing required for effective teqaching of English at different school stages.
2. To enable the student – teachers to acquire qa knowledge of the objectives of teaching English as second language.
3. To enable them to develop a good under standing of the principles of language teaching.
4. To enable them to develop their own linguistic, grammatical and communicative. competencs within the Prescribed range.
5. To enable them to critically, review different approaches and methods of teaching English as a second. Language.
6. To enable the student- teachers to Prepare lesson Plans on different and Prescribed aspects of English as a Second, Language.
7. To enable them to use various techniques of testing English as a second language and develop remedial, material and conduct remedial teaching.

Syllabus **80 Marks**

Unit – I

General considerations in teaching English as a second, Lqanguage

- Concept of language, language, acquisition, language-learning
- Principles and psychology of teaching English as a second language.
- Principles of second, language teaching.
- Psychological factors affecting second language learning
  Attitude, Motivation, Anxiety, Interest
- Role and use of language drills and pattern practice.
- objectives of teaching English as a second language at differant lavels of school education.
- Problem of effective teaching of English as a second language and their possible and practical solutions

Unit – II

English grammer and usage

- Basic sentences, Types of sentences, Affirmative, Negative, Interrogative, Simple, Compound, Complex, Verb-Patterns, Question-Tag
- Usage – Determiners, Model Auxiliaries, Tenses, Infinitives, Gerunds, Phrasal VErbs and idioms, Advebials and Adverbial phrases, Prepositions, Active and Passive voice, Direct and Indirect speech , Punctuations.

Unit – III

Approaches and Methods

- Direct Method
- Structural Situational Approach
- Billingual Method
- Communicative Approach.
- Eclectic Approach
- Role play, simulation and group-work In the light of (a) Psychology of second language learning (b) nature of the English, language (c) classroom environment and conditions (d) Aim of language teaching role of mother-tongue, role of teaching, learners, text book and A.V. aids.

Unit – IV

The Teaching of prose, poetry & grammer

- The place of poetry teaching in the higher secondary school curriculum.
- Aims of teaching poetry lesson, It's differencs from prose lessons, principles and steps of preparing and teaching lessons on poetry.
- The aim of teaching English grammar
- Traditional versus functional grammar
- Principles of preparing and steps of a grammer lesson, Planning a lesson in grammar.

Unit – V

Teaching Aids & Testing in English

- Concept and use of A. V. aids in second language teaching
- Text book, work-book, teachers-book, chart, picture, flash cards, flannels board, blackboard, tape-recorder, Radio, O H P, substitution tables, language lab, computer, newspapers, Magazines real objects.
- Concept of testing in English as a second language.
- Testing language skills, lexical and structural items, poetry and grammer.
- Preparation of unit test, blue – print
- Error analysis, concept of remedial teaching and rematerial

Sessional Work **20 Marks**

- Written test =10 Marks
- Constructions of two teaching aids = 10 Marks

BIBLIOGRAPHY :

1. Bausal, R. K. and Harrison, J. B. (1972) – Spoken English for India madras – Orient Lougman. Ltd.
2. Baruah, T. C. (1985) : The English Teachers Handbook, New Delhi, Sterling publishing Pvt. Ltd.
3. Brumfit, C.J.(1984), Communicative methodology in language teaching. combridege. C. U.P.
4. Gimson A. C. (1980), An Introduction to the Pronunciation of English. Landan. Edword Arnold.
5. Lado, Robert (1971) : Language teaching, New Delhi, Tata Mc – GRAW Hill publishing House co. Ltd.
6. Paliwal, A.K. (1986) : English Language teaching, Jaipur : Surbhi Publication
7. Palmer, H. L. (1964-65) : The Principles of language study, London, O. U. P.
8. Ouirk, Randolph and greenboum (1973) A university grammer of English, Landon.
9. Roach, Peter (1991), English phoneties and phonology, cambridege, C. U. P.
10. Richards J. C. and Rodgers, T. S. Approaches and methods in language teaching cambridege C. U. P.
11. Leech, geofferey andavartivk, Jan (2000) Communicative grammar of English combridge C. U. P.
12. Thomson, A. J. and Martinet (1998) A Practical English grammer ELBS, O. U. P.
13. Bright and Me gregor : Teaching English as Second Language, Longman.
14. Hornby, A. S. (1998). Guide to Patterns and usage in English O. U. P.
15. Willis, Jane : Teaching English through English, O. U. P.
16. Collins cobuild English grammer (200) Harper collins publisher, India.
17. Venkateshworan, (1995) Principlews of teaching English Delhi, Vikas Publishing Hause Pvt. Ltd.

शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष

नवम प्रश्न पत्र (चयनित शिक्षण शास्त्र)

विद्यालय शिक्षण विषय – 3. सामाजिक अध्ययन शिक्षण

Course Code S.S. 107 (अ)–(ब) **पूर्णांक 100**

(बा.80+ आ. 20)

उद्देश्य :

1. विद्यार्थियों में सामाजिक–अध्ययन की विषयवस्तु को परिभाषित करने एवं विभेदीकरण की योग्यता विकसित करना तथा पाठ्यक्रम में उससे सम्बन्धित संदर्भों की व्याख्या करने की योग्यता विकसित करना।
2. विद्यार्थियों में सामाजिक अध्ययन शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्यों को समझने की योग्यता विकसित करना।
3. विद्यार्थियों में विभिन्न कक्षाओं हेतु इकाई योजना तथा दैनिक पाठयोजना बनाने की योग्यता विकसित करना।
4. विद्यार्थियों में विद्यालय स्तर के सामाजिक–अध्ययन की पाठ्यचर्या का आलोचनात्मक विवेचन करने की योग्यता विकसित करना।
5. विद्यार्थियों में सामाजिक–अध्ययन की पाठ्यपुस्तक का मूल्यांकन करने की योग्यता विकसित करना।
6. विद्यार्थियों में विभिन्न स्तर पर किसी विशिष्ट प्रकरण में संदर्भ में उपयुक्त शिक्षण विधियों एवं प्रविधियों के प्रयोग की योग्यता विकसित करना।
7. विद्यार्थियों में विभिन्न प्रकार की शिक्षण सहायक सामग्री के चयन, निर्माण एवं उपयोग की योग्यता विकसित करना।
8. छात्राध्यापकों में सामाजिक अध्ययन के बालकों का मूल्यांकन करने की योग्यता विकसित करना।

पाठ्यवस्तु – **80 अंक**

इकाई –1

- सामाजिक अध्ययन का अर्थ।
- विद्यालय पाठ्यक्रम में सा. अध्ययन का स्थान।
- माध्यमिक स्तर पर सामाजिक–अध्ययन शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्य।

इकाई–2

- सामाजिक–अध्ययन में पाठयोजनायें – इकाई योजना एवं दैनिक पाठ–योजना।
- सामाजिक–अध्ययन शिक्षण की सहायक–सामग्री–अर्थ, निर्माण एवं प्रयोग।
- सामाजिक–अध्ययन का शिक्षक–विशेषताएँ एवं कार्य।

इकाई – 3

- माध्यमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन की पाठ्यचर्या निर्माण के सिद्धान्त एवं उपागम।
- विद्यालय स्तर पर सामाजिक–अध्ययन की पाठ्यपुस्तक का मूल्यांकन।

  (क) अच्छी पाठ्यपुस्तक के मापदण्ड।

  (ख) पाठ्यपुस्तक में उदाहरण का स्थान।

  (ग) पाठ्यपुस्तक में निर्धारित कार्य, अभ्यासकार्य, तकनीकी, शब्दावली एवं सारांश।

इकाई – 4

- **सामाजिक–अध्ययन शिक्षण की विधियाँ एवं प्रविधियाँ –**

  (अ) विधियाँ – व्याख्यान विधि, समस्या समाधान विधि, योजनाविधि, दल–शिक्षणविधि, खोज–उपागम विधि, निरीक्षित–अध्ययन विधि।

  (ब) प्रविधियाँ – कथन प्रविधि, प्रश्न प्रविधि, निरीक्षण प्रविधि, उदाहरण प्रविधि।

  (स) शिक्षण में नवीन प्रवृत्तियाँ – अभिक्रमित अनुदेशन, कम्प्यूटर एवं दूरदर्शन का शिक्षण में प्रयोग। सूक्ष्म–शिक्षण एवं प्रमुख शिक्षण कौशल।

इकाई–5

सामाजिक–अध्ययन में मूल्यांकन

(अ) मूल्यांकन का अर्थ एवं उद्देश्य।
(ब) मूल्यांकन की रीतियाँ।
(स) विभिन्न प्रकार के परीक्षण, लाभ एवं सीमाएँ
(वस्तुनिष्ठ, लघूत्तरात्मक व निबन्धात्मक परीक्षण)
(द) नील–पत्र एवं प्रश्न का निर्माण

सत्रीय कार्य – सामाजिक–अध्ययन **20 अंक**

- लिखित परीक्षण – 10 अंक
- निम्नलिखित किसी एक विषय पर दत्त कार्य – 10 अंक
  1. दो सहायक सामग्रियों का निर्माण एवं कक्षा–कक्ष में उनका प्रयोग।
  2. सामुदायिक सेवा – प्रदर्शनी, मेला क्षेत्र पर्यटन आदि का आयोजन।
  3. प्रयोगशाला का निर्माण व रखरखाव।
  4. किसी सामाजिक समस्या का अध्ययन, सर्वेक्षण एवं प्रतिवेदन तैयार करना।

(सन्दर्भग्रन्थ सूची)

1. Bining and Bining : Teaching of social studies.
2. Brantom F.K. : The teaching of Social Studies in a Changing World.
3. Dray and David Jordon : A Hand Book of Social Studies.
4. Hemming James : The teaching of Social Studies in Secondary School.
5. Wesley Edgar Brose : Social Studies for Schools.
6. Taneja, V.R. : Teaching of Social Studies.
7. Horn. B.E. : Methods of instruction in the Social Studies.
8. Kochhar, S.K. : Teaching of Social Studies.
9. Pathak, R.P. (2012) : Teaching of Social Science Pearson Education, Knowledge Park, Noida.
10. भुवनेश्वर प्रसाद : भारतीय स्कूलों में समाज अध्ययन का शिक्षण।
11. शर्मा, एम.वी. : सामाजिक–अध्ययन की शिक्षण विधि।
12. रामपाल सिंह : सामाजिक–अध्ययन शिक्षण।
13. जैन अमीर चन्द : सामाजिक–अध्ययन शिक्षण।
14. पाठक, आर.पी. (2011) सामाजिक–अध्ययन शिक्षण, कनिस्का प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली।

शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष

नवम प्रश्न पत्र (चयनित शिक्षण शास्त्र)

विद्यालय शिक्षण विषय – 4. नागरिक शास्त्र शिक्षण

Course Code S.S. 107 (अ)–(ब) **पूर्णांक 100**

(बा.80+ आ. 20)

उद्देश्य :

1. कक्षा–कक्ष अध्यापन हेतु प्रभावी शिक्षक का निर्माण करना।
2. शिक्षक में उपयुक्त अभिव्रती एवं मूल्यों का विकास करना।
3. विद्यार्थियों में अनुदेशनात्मक उद्देश्यों की पहचान कर व्यवहारिक रूप में दिखाने की योग्यता विकसित करना।
4. विभिन्न स्तरों पर विशिष्ट प्रकरणों के शिक्षण हेतु उपयुक्त विधियों का प्रयोग करने की योग्यता विकसित करना।
5. सहायक सामग्रियों का चयन एवं उपयोग।
6. शिक्षण कौशलों का चयन एवं प्रयोग।
7. वार्षिक, इकाई एवं दैनिक पाठ योजनाओं का निर्माण।
8. निष्पत्ति एवं निदानात्मक परीक्षणों का वैज्ञानिक आधारों पर निर्माण।
9. विद्यालयी गतिविधियों का विषय के संदर्भ में संगठन करने की योग्यता का विकास।

पाठ्यवस्तु – **80 अंक**

इकाई –1

- नागरिक शास्त्र शिक्षण की अवधारणा एवं लक्ष्य।
- नागरिकशास्त्र शिक्षण अनुदेशनात्मक उद्देश्य का व्यवहारिक परिवर्तन।
- नागरिकशास्त्र शिक्षण की पद्धतियाँ –
  समस्या समाधान पद्धति, वाद–विवाद पद्धति, योजना पद्धति, भाषण (व्याख्यान) पद्धति, पर्यवेक्षित अध्ययन पद्धति, सामाजिकृत अभिव्यक्ति।

इकाई–2

- नागरिकशास्त्र शिक्षण तकनीक एवं युक्तियाँ –
  प्रश्न तकनीक, सहायक सामग्री, सहसम्बन्ध, भ्रमण/यात्रा (सैर–सपाटा), साक्षात्कार।
- निम्नलिखित गतिविधियों का संगठन व योजना निर्माण –
  1. चुनाव 2. मूक सत्र 3. नागरिकशास्त्र में उपयोगी स्थलों का भ्रमण

इकाई – 3

- सूक्ष्म–शिक्षण की सहायता से निम्नलिखित शिक्षण कौशलों का विकास करना –
  1. प्रस्तावना कौशल 2. प्रश्नकौशल 3. उदाहरण सहित दृष्टान्त कौशल
  4. श्यामपट्ट लेखनकौशल 5. उद्दीपन परिवर्तन कौशल 6. पुनर्बलन कौशल।

इकाई – 4

- नागरिकशास्त्र शिक्षण में पाठ्यक्रम निर्माण के मूलभूत सिद्धान्त और वर्तमान में निर्धारित पाठ्यक्रम का आलोचनात्मक मूल्यांकन, नागरिकशास्त्र शिक्षक के गुण।

इकाई–5

- मूल्यांकन के उपकरण व तकनीकें।

सत्रीय कार्य – नागरिकशास्त्र **20 अंक**

- लिखित परीक्षण – 10 अंक
- निम्नलिखित किसी एक विषय पर दत्त कार्य – 10 अंक
  (अ) दो सहायक सामग्रियों का निर्माण एवं कक्षा–कक्ष में उनका उपयोग।
  (ब) प्रयोगशाला का निर्माण एवं उनका रखरखाव।
  (स) स्थानीय संस्था/विधानसभा की कार्यवाही का सर्वेक्षण एवं प्रतिवेदन।
  (द) छद्म–अधिवेशन (मूक–सैशन) का नाटकीकरण।

(य) वर्तमान राजनीति से जुड़ी समस्या का वर्णन एवं समाधान हेतु सुझाव।

सन्दर्भग्रन्थ सूची –

1.	Bining and Bining	:	Teaching of social studies in secondary schools. New York, Mc, Graw Hill Book Co. 1952
2.	Harlikar	:	Teaching of civics in India, Bombay, Padma Publication Ltd.
3.	Crary Ryland, W.	:	Education for Democratic citizen & hip.
4.	Michaclies	:	Social Studies for Childran in a democratic New York, Practice Hall Ine. 1956.
5.	Bourne, H.E.	:	Teaching of History and civics, Bombay, Langmans 1972.
6.	त्यागी, जी.एस.डी.	:	नागरिकशास्त्र का शिक्षण, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
7.	Prescribed books of Board of Secondary Education for Higher Secondary classess.		
8.	रामपाल सिंह	:	नागरिकशास्त्र का शिक्षण

शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष

नवम प्रश्न पत्र (चयनित शिक्षण शास्त्र)

विद्यालय शिक्षण विषय – 5. भूगोल शिक्षण

Course Code S.S. 107 (अ)–(ब) **पूर्णांक 100**

(बा.80+ आ. 20)

उद्देश्य :

1. भूगोल की आधुनिक अवधारणा का अवबोधन कराना।
2. विभिन्न स्तर की कक्षाओं के लिये वार्षिक योजना, इकाई योजना, दैनिक पाठयोजना का निर्माण कराना।
3. मानचित्र और चार्ट्स का निर्माण कराना तथा विभिन्न कक्षाओं में विषयवस्तु के स्पष्टीकरण हेतु उनका प्रभावशाली ढंग से प्रयोग।
4. निष्पत्ति एवं निदानात्मक परीक्षणों का वैज्ञानिक आधारों पर निर्माण।
5. छात्राध्यापकों में मूल्यांकन करने की योग्यता का विकास करना व प्रश्न–पत्र तथा ब्ल्यू–प्रिन्ट का निर्माण।

पाठ्यवस्तु – **80 अंक**

इकाई –1

- भूगोल की आधुनिक अवधारणा, विद्यालय पाठ्यक्रम में इसका स्थान, दैनिकजीवन और अन्तराष्ट्रीय सद्भाव में भूगोल का महत्व।
- विभिन्न स्तरों – प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तर पर भूगोल शिक्षण के उद्देश्य एवं लक्ष्य।

इकाई–2

- प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक कक्षाओं में भूगोल शिक्षण की विधियाँ – योजना विधि, समस्या–समाधान विधि, प्रदर्शन विधि, प्रयोगशाला विधि, निरीक्षत–अध्ययन विधि, प्रत्यक्ष–अध्ययन विधि।
- गृह–प्रदेश का अध्ययन तथा भूगोल शिक्षण में स्थानीय भूगोल का स्थान। क्षेत्रीय भ्रमण तथा यात्राओं का महत्व।

इकाई – 3

- विभिन्न प्रकार की शिक्षण सहायक सामग्रियाँ – मानचित्र, चलचित्र, मॉडल, चित्र, दृश्य–श्रव्य सामग्री, एटलस, तथा भित्ति मानचित्र का कक्षा–कक्ष में प्रभावशाली उपयोग, भूगोल शिक्षण में फिल्म स्ट्रिप, स्लाइड्स, प्रोजेक्टर, एपिडायस्कोप, टेलीविजन तथा कम्प्यूटर का प्रयोग।

इकाई – 4

- वार्षिक योजना, इकाई योजना तथा दैनिक पाठयोजना, ब्ल्यू प्रिन्ट (नील प्रपत्र) भूगोल शिक्षक के गुण।
- भूगोल में पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धान्त, अधिगमकर्ता के स्तर के अनुसार विभिन्न पाठ्यवस्तु के चयन और संगठन के मूल सिद्धान्त।

इकाई–5

- भूगोल में प्रायोगिक कार्य का महत्व तथा विद्यालयी पाठ्यक्रम में प्रायोगिक कार्य का स्थान।
- भूगोल–कक्ष तथा प्रयोगशाला – प्रयोगशाला कार्य का महत्व, साधन, यन्त्र तथा सामग्री, भौगोलिक पुस्तकालय तथा संग्रहालय।
- भूगोल में उपलब्धियों का मूल्यांकन – मूल्यांकन महत्वपूर्ण उपकरण तथा प्रविधियाँ।

सत्रीय कार्य – भूगोल–शिक्षण **20 अंक**

- लिखित परीक्षण – 10 अंक
- निम्नलिखित किसी एक विषय पर दत्त कार्य – 10 अंक
  - (अ) दो सहायक सामग्रियों का निर्माण एवं कक्षा–कक्ष में उनका उपयोग।
  - (ब) प्रयोगशाला का निर्माण एवं उनका रखरखाव।
  - (स) भौगोलिक दृष्टि से अपने क्षेत्र का सर्वेक्षण एवं प्रतिवेदन तैयार करना।
  - (द) भौतिक भूगोल के अध्ययन हेतु चार्ट्स, मॉडल, मानचित्र आदि का निर्माण।
  - (य) आधुनिक भौगोलिक समस्याओं पर एक निबन्ध।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1. वर्मा जगदीश : भूगोल शिक्षण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. शर्मा डॉ. जी. आर. : भूगोल शिक्षण, मार्डन पब्लिशर्स, मेरठ
3. सिंह एस.एन. : भूगोल शिक्षण
4. अरोड़ा के.एल. : भूगोल शिक्षण, प्रकाश ब्रदर्स, लुधियाना।
5. Singh L.R. : Practical Geography, Allied Publishers, Meerut.
6. Barhard : Principles and Practice of teaching Geography
7. Source Book of the teaching of Geography UNESCO publication.

शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष

नवम प्रश्न पत्र (चयनित शिक्षण शास्त्र)

विद्यालय शिक्षण विषय – 6. इतिहास शिक्षण

Course Code S.S. 107 (अ)–(ब) **पूर्णांक 100**

(बा.80+ आ. 20)

उद्देश्य :

1. छात्राध्यापकों में इतिहास को विकास एवं परिवर्तन की सतत प्रक्रिया के रूप में समझने की योग्यता विकसित करना।
2. छात्राध्यापकों में माध्यमिक स्तर पर इतिहास शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्यों की समझ विकसित करना।
3. छात्राध्यापकों को इकाई योजना, पाठयोजना तथा शिक्षण सहायक सामग्री निर्माण की योग्यता विकसित करना।
4. छात्राध्यापकों में विभिन्न स्तर पर इतिहास की पाठ्यचर्या विकसित करने एवं आलोचनात्मक विवेचन करने की योग्यता विकसित करना।
5. विद्यार्थियों में माध्यमिक स्तर पर इतिहास शिक्षण की विभिन्न विधियों एवं प्रविधियों के प्रयोग करने की योग्यता विकसित करना।
6. विद्यार्थियों में माध्यमिक स्तर पर इतिहास की पाठ्यपुस्तक की समीक्षा करने की योग्यता विकसित करना।
7. विद्यार्थियों में माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों का मूल्यांकन करने की योग्यता विकसित करना।

पाठ्यवस्तु – **80 अंक**

इकाई –1 इतिहास शिक्षण अर्थ महत्व एवं उद्देश्य

- इतिहास शिक्षण का अर्थ, क्षेत्र व महत्व।
- अन्तर्राष्ट्रीय समझ व राष्ट्रीय एकीकरण के सन्दर्भ में स्थानीय इतिहास, राष्ट्रीय इतिहास और विश्व इतिहास के अध्ययन का महत्व।
- अन्य विद्यालयी विषयों के साथ इतिहास का सहसम्बन्ध।
- माध्यमिक स्तर पर इतिहास शिक्षण के लक्ष्य और उद्देश्य।

इकाई–2 इतिहास पाठ्यक्रम में सामग्री निर्धारण

- कालानुक्रमी पद्धति, वंश वृक्ष, जीवन वृतान्त या जीवनी सम्बन्धी पद्धति, सामयिक विषय सम्बन्धी संकेन्द्रीय या समकेन्द्रक पद्धति।
- इतिहास शिक्षण के स्रोत प्राथमिक स्रोत एवं द्वितीयक।

इकाई – 3 शिक्षण की विधियाँ एवं शिक्षण कौशल

- कहानी विधि, जीवन वृतान्त, विधि, समस्या समाधान विधि, परिवेक्षित अध्ययन विधि, योजना विधि, समाजीकृत अभिव्यक्ति विधि एवं स्रोत विधि।
- इतिहास शिक्षण में नवाचार – भूमिका निर्वाह तकनीक, नाटकीय अभिव्यक्ति तकनीक, और दलशिक्षण तकनीक।
- वर्णनात्मक, उदाहरण सहित दृष्टान्त, वादविवाद तकनीक।
- शिक्षणकौशल – प्रस्तावना, पुनर्बलन, उद्दीपन परिवर्तन, श्यामपट्ट लेखन, प्रश्नकौशल।

इकाई – 4 इतिहास शिक्षण में सहायक सामग्री का उपयोग

- श्यामपट्ट, मानचित्र, रेखाचित्र, समय–सारणी, प्रतिकृति, स्लाइड्स, फिल्म, सिक्के और अजायबघर व कठपुतली प्रदर्शन।
- श्रव्य–दृश्य सहायक सामग्री – स्लाइड प्रोजैक्टर, स्पीडायस्कोप, प्रोजेक्टर, टेपरिकार्डर, रेडियों, दूरदर्शन।
- इतिहास कक्ष की योजना।
- इकाई योजना, दैनिक पाठयोजना।

इकाई–5 इतिहास शिक्षण में पाठ्यक्रम निर्माण एवं मूल्यांकन

- इतिहास के पाठ्यपुस्तक व पाठ्यक्रम का निर्माण एवं मूल्यांकन।
- मूल्यांकन – मूल्यांकन के उद्देश्य, परीक्षण के विभिन्न प्रकार, निबन्धात्मक, लघूत्तरात्मक और वस्तुनिष्ठ (नीलपत्र) उपलब्धि परीक्षण, प्रश्नपत्र का नीलपत्र।

* इतिहास शिक्षक – शिक्षक के गुण व कार्य, व्यावसायिक क्षमता में अभिवृद्धि।

सत्रीय कार्य – इतिहास **20 अंक**

* लिखित परीक्षण – 10 अंक
* निम्नलिखित किसी एक विषय पर दत्त कार्य – 10 अंक
  (अ) दो सहायक सामग्रियों का निर्माण एवं कक्षा–कक्ष में उनका उपयोग।
  (ब) प्रयोगशाला का निर्माण एवं उनका रखरखाव।
  (स) ऐतिहासिक स्थलों का सर्वेक्षण, महत्व एवं प्रतिवेदन तैयार करना।
  (द) इतिहास के विभिन्न स्रोत – विश्लेषणात्मक निबन्ध।
  (य) इतिहास शिक्षण में संग्रहालयों की उपादेयता लेख।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1. Bining & Bining : Social Science teaching.
2. Ghate V.D. : Suggestion for the teaching of History in India.
3. K.D. Ghosh : Creative teaching of History P.U.P. 1951.
4. C.P. Hill : Suggestion on the teaching of History.
5. Johnson, H. : Teaching of History in Elementary and Secondary schools, Macmillan.
6. Vergeshwany, R.C. : Hand book of History teacher in India.
7. Choudhury K.P. : Effectione Teaching of History in India N.C.R.T.
8. NCERT : Handbook for History teachers.
9. गुरुशरण दास त्यागी : इतिहास शिक्षण।
10. बी.डी.घाटे : इतिहास शिक्षण – हरियाणा ग्रन्थ अकादमी चण्डीगढ़।

शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष

नवम प्रश्न पत्र (चयनित शिक्षण शास्त्र)

विद्यालय शिक्षण विषय – 7. अर्थशास्त्र शिक्षण

Course Code S.S. 107 (अ)–(ब) **पूर्णांक 100**

(बा.80+ आ. 20)

उद्देश्य :

1. विद्यार्थियों में अर्थशास्त्र की विषयवस्तु की आधारभूत समझ विकसिति करना।
2. विद्यालय स्तर पर अर्थशास्त्र के पाठ्यक्रम तथा अनुदेशन की योजना निर्माण की योग्यता विकसित करना।
3. अर्थशास्त्र शिक्षण हेतु सामूहिक गतिविधियों और योजनओं का संगठन करने की योग्यता विकसित करना।
4. अर्थशास्त्र में सहायक सामग्री एवं अनुदेशनात्मक सामग्री के निर्माण एवं प्रयोग हेतु आवश्यक कौशल विकसित करना।
5. विद्यार्थियों का राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के प्रति राष्ट्रीय योजनाओं एवं समितियों के सन्दर्भ में उचित दृष्टिकोण विकसित करना।
6. विद्यार्थियों में राष्ट्र के आर्थिक सन्दर्भों के प्रति जागरूकता विकसित करना तथा समस्याओं का विश्लेषण कर समाधान ढूंढना तथा आर्थिक सिद्धान्तों का प्रयोग करने की योग्यता विकसित करना।
7. विद्यार्थियों में निष्पत्ति एवं निदानात्मक परीक्षणों का उद्देश्यों के आधार पर निर्माण, प्रशासन, मूल्यांकन एवं निष्कर्ष निकालने की योजना विकसित करना।
8. विद्यार्थियों में विभिन्न प्रकार के आर्थिक सर्वेक्षण एवं क्षेत्र पर्यटन सम्पन्न करने की योग्यता विकसित करना।

पाठ्यवस्तु – **80 अंक**

इकाई –1

अर्थशास्त्र शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्य

- विद्यालय स्तर पर अर्थशास्त्र की पाठ्यचर्या (सिलेबस) के संगठन एवं व्यवस्थापन के उपागम :–
- अर्थशास्त्र के पाठ्यक्रम निर्माण के मापदण्ड।
- अर्थशास्त्र की पाठ्यचर्या निर्माण को निर्धारित करने वाले सामान्य घटक।
- राजस्थान राज्य के माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के अर्थशास्त्र की पाठ्यचर्या का आलोचनात्मक विवेचन।

इकाई–2

अर्थशास्त्र शिक्षण की विधियाँ

- अध्यापक केन्द्रित विधियाँ – पाठ्यपुस्तक विधि, व्याख्यान विधि।
- बाल केन्द्रित विधियाँ – योजना विधि, समस्या समाधान विधि, दलशिक्षण विधि, निरीक्षित अध्ययन विधि, खोज–उपागम विधि।
- शिक्षण में नवाचार – सूक्ष्मशिक्षण, अभिक्रमित अनुदेशन, दूरदर्शन द्वारा शिक्षण, अर्थशास्त्र शिक्षण में कम्प्यूटर का प्रयोग।
- अर्थशास्त्र शिक्षण में दृश्य श्रव्य सामग्री का स्थान एवं महत्व।

इकाई – 3

अर्थशास्त्र शिक्षण में दृश्य–श्रव्य सामग्री का महत्व

- अर्थशास्त्र शिक्षण अध्यापक के गुण
- कक्षा–कक्ष शिक्षण के सूत्र एवं सिद्धान्त।
- अर्थशास्त्र शिक्षण को युक्तियाँ एवं विधियाँ।

इकाई – 4

अर्थशास्त्र में पाठनियोजना – दैनिक एवं इकाई पाठ योजना

- पाठयोजना के उद्देश्य
- पाठयोजना के सिद्धान्त
- सहायक सामग्री का चयन

- पाठयोजना के सोपान – विषयवस्तु का विश्लेषण, उद्देश्यों का अधिगम अनुभवों के संदर्भ में निर्धारण, अध्यापक की भूमिका, पुनरावृत्ति एवं मूल्यांकन।

इकाई–5

अर्थशास्त्र शिक्षण में मूल्यांकन

- मूल्यांकन का अर्थ एवं उपयोगिता
- मूल्यांकन की विधाएँ – वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रशिक्षण, लघूत्तरात्मक एवं निबन्धात्मक परीक्षण।
- उद्देश्य आधारित परीक्षण का निर्माण, प्रस्तुतीकरण, प्रशासन एवं मूल्यांकन।
- विद्यालय स्तर पर अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तक का निर्माण एवं मूल्यांकन

सत्रीय कार्य – अर्थशास्त्र **20 अंक**

- लिखित परीक्षण – 10 अंक
- निम्नलिखित किसी एक विषय पर दत्त कार्य – 10 अंक
  (अ) दो सहायक सामग्रियों का निर्माण एवं कक्षा–कक्ष में उनका उपयोग।
  (ब) प्रयोगशाला का निर्माण एवं उनका रखरखाव।
  (स) बदलते परिवेश में विज्ञापनों का महत्व एवं आर्थिक दृष्टि से योगदान।
  (द) माध्यमिक स्तर की अर्थशास्त्र पुस्तक की समीक्षा।
  (य) आर्थिक समस्याओं पर आधारित सर्वेक्षण एवं प्रतिवेदन।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1. टीचिंग ऑफ सोशल स्टडी इन सैकण्ड्री स्कूल – वाइनिंग एवं वाइनिंग।
2. टीचर्स मेन्युअल इन इकोनोमिक्स : डॉ. एन हसन पब्लिसड, लॉ रीजनल कॉलेज ऑफ एजूकेशन अजमेर।
3. अर्थशास्त्र शिक्षण : रामपाल सिंह प्रकाशक – शब्द संचार अजमेर।
4. अर्थशास्त्र शिक्षण : हरनारायण सिंह एवं राजेन्द्रपाल सिंह प्रकाशक– लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा।
5. अर्थशास्त्र शिक्षण : श्रीशुक्ल प्रकाशक – नंदकिशोर एवं ब्रादर्स, बनारस।
6. अर्थशास्त्र शिक्षण : डॉ. कामना प्रसाद पाण्डे
7. अर्थशास्त्र शिक्षण : गुरूसरनदास त्यागी, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
8. अर्थशास्त्र शिक्षण : महेन्द्रपाल सिंह
9. सूक्ष्म अध्ययन : डॉ. आर. पी. कथूरिया, विकास प्रकाशन भोपाल।
10. सूक्ष्म अध्यापन : डॉ. आर. ए. शर्मा मार्डन पब्लिशर्स, मेरठ।
11. अभिक्रमिक अध्यापन : तेला व श्रीवास्तव।
12. अर्थशास्त्र के सिद्धान्त : आनन्द स्वरूप गर्ग।
13. भारतीय अर्थशास्त्र के सिद्धान्त : पी. सी. जैन
14. भारत का आर्थिक विकास : हरिश्चन्द्र शर्मा व एन.आर.सिंह।
15. अर्थशास्त्र के सिद्धान्त : सुन्दरम् एवं वैश्य।

शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष

नवम प्रश्न पत्र (चयनित शिक्षण शास्त्र)

विद्यालय शिक्षण विषय – 8. गृहविज्ञान शिक्षण

Course Code S.S. 107 (अ)–(ब) **पूर्णांक 100**

(बा.80+ आ. 20)

उद्देश्य :

1. छात्राऐं अनुशासन में प्रयुक्त महत्वपूर्ण विचारों को समझ सकेंगे।
2. विभिन्न कक्षाओं के लिए इकाई योजना व पाठयोजना तैयार कर सकेंगे।
3. विद्यालयी पाठ्यक्रम व पाठ्य–पुस्तकों का आलोचनात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे।
4. ज्ञान–प्राप्ति परख व सुधारात्मक परख तैयार कर सकेंगे, उन्हें प्रशासित (संचालित) करेंगे व परिणामों का विश्लेषण कर सकेंगे।
5. उपयुक्त शिक्षण सामग्री तैयार करेंगे व कक्षा में उनका कुशलता से उपयोग करेंगे।

पाठ्यवस्तु – **80 अंक**

इकाई –1 गृह विज्ञान का अर्थ महत्त्व और उद्देश्य

- गृहविज्ञान का इतिहास, दर्शन, अर्थ व क्षेत्र, माध्यमिक शिक्षा में गृहविज्ञान का स्थान, विद्यालय में अन्य विषयों के साथ इसके सम्बन्ध छात्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति के सन्दर्भ में गृहविज्ञान शिक्षा के उद्देश्य।
- गृहविज्ञान अध्यापक, आवश्यक गुण तथा जिम्मेदारियाँ।

इकाई–2 माध्यमिक विद्यालयों में गृह विज्ञान

- माध्यमिक विद्यालयों के लिए निर्धारित गृह–विज्ञान पाठ्यक्रम का अध्ययन, शिक्षण इकाईयों में गृह–विज्ञान पाठ्यक्रम का संगठन, सैद्धान्तिक व प्रयोगात्मक में सम्बन्ध, सत्र के लिए क्रमबद्ध योजना, निम्नांकित विषयों के अर्थ, क्षेत्र व महत्व।
- स्वास्थ्य विद्या व आरोग्य विद्या।
- घरेलु उपचार (देखभाल) व प्राथमिक चिकित्सा।
- भोजन के गुण व उन्हें पकाना।
- कपड़े धोने का स्थान
- सुई कार्य, पारिवारिक सिलाई कार्य व मरम्मत कार्य।
- गृह–स्वामिना, बजट बनाना, पारिवारिक खाते पारिवारिक अर्थव्यवस्था।

इकाई – 3 गृहविज्ञान की शिक्षण विधियाँ

गृहविज्ञान में प्रयुक्त अध्यापन विधियाँ, निरीक्षण, चर्चा, समूहचर्चा, प्रदर्शन, प्रयोगशाला, क्षेत्र–पर्यटन, प्रदर्शनी, भूमिका निर्वाह, त्यौहारों की उपयोगिता, संगोष्ठी। विधियों की प्रभावशीलता उनका चुनाव, प्रयोग व मूल्यांकन।

इकाई – 4 गृहविज्ञान की प्रयोगशाला एवं पुस्तकालय

- गृहविज्ञान विभाग, स्थापन, स्थान, उपकरण तथा साधन जैसे – पानी, बिजली, शिक्षण के लिए उपलब्ध साधनों के संगठन के लिए एकल, बहुद्देशीय व अनेकों कमरों की योजना। सुविधाओं को ग्रहण करने व उन्हें बढ़ाने के कार्य, उपकरणों के कार्य, क्षेत्रीय उपलब्धता (विशिष्ट स्थान पर उपलब्ध) अल्पव्ययी, गृह–विज्ञान के उपकरणों का प्रबन्ध, बजट बनाना, सम्पूर्ण विवरण सूची वस्तुओं के आदेश व अभिलेख रखना।
- गृहविज्ञान की पुस्तकालयी पुस्तके, मैंग्जीन्स, नियत समय पर निकलने वाली पत्रिकाऐं (साप्ताहिक, मासिक, वार्षिक) समाचार व नवीन साहित्य। अन्य दृश्य–श्रव्य उपकरण, फिल्म प्रतिमान, फिल्म स्ट्रिप, समाचार पट्ट, प्रदर्शन, फ्लैशकार्ड आसन चित्र, चार्ट्स, नमूने उदाहरण इत्यादि।
- चर्चा के द्वारा छात्रों की ज्ञानप्राप्ति का मूल्यांकन, व्यवहारिक अवस्था में परिवर्तन, आदतों में परिवर्तन, क्रियात्मक कार्य परीक्षा।
- व्यक्तिगत सन्तुष्टि द्वारा शिक्षण की प्रभावशीलता, प्रशासन व समुदाय का मूल्यांकन, परीक्षाओं में छात्रों के कार्य (प्रदर्शन) छात्रों का उत्तर परिवर्तन जो छात्रों में पाया गया।

इकाई–5 गृहविज्ञान का महत्त्व

विद्यालय और समुदाय – समुदाय व विद्यालय के गृहविज्ञान विभाग का योगदान, गृहविज्ञान क्लब की उपयोगिता, समुदाय व विद्यालय में गृहविज्ञान के क्रियाकलाप, भावी रुचियों के लिए गृहविज्ञान का संगठन व योजना, नेतृत्व गुणों का विकास, मुख्यसेविका और ग्राम सेविका के कार्य, विस्तार सेवाओं व सामुदायिक विकास में गृहविज्ञान की भूमिका।

सत्रीय कार्य – **20 अंक**

- लिखित परीक्षण – 10 अंक
- निम्नलिखित किसी एक विषय पर दत्त कार्य – 10 अंक

मध्यमस्तर के परिवार का मासिक आय–व्यय का बजट

गृहसज्जा व पुष्पसज्जा (प्रायोगिक कार्य)

अवशिष्ट पदार्थों से उपयोगी वस्तुओं का निर्माण।

(मेज पोश, क्रशन कवरं या ट्रे कवर)

फल एवं सब्जियों का संरक्षण।

(अचार व मुरब्बे)

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1. एलिजाबैथ, अट्किसॉन : गृहविज्ञान का शिक्षण।
2. जरडाइन, एवालैन ई. : घरेलु उद्योगों में प्रायोगिक कोर्स, गृहविज्ञान के रूप में प्रयुक्त प्रायोगिक विज्ञान छात्राओं के लिए, शिक्षकों के लिए सुझाव पुस्तिका (शिक्षा बोर्ड, इंग्लैण्ड)
3. दवेकर : गृहविज्ञान शिक्षण की योजना।
4. स्टेंफोर्ड, आई.ओ. : गृहविज्ञान अर्थव्यवस्था शिक्षण के आधार।
5. चतुर्वेदी, एन. : शिशुविधान परिचय।

शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष
नवम प्रश्न पत्र (चयनित शिक्षण शास्त्र)
विद्यालय शिक्षण विषय – 9. गणित शिक्षण

Course Code S.S. 107 (अ)–(ब) **पूर्णांक 100**

(बा.80+ आ. 20)

उद्देश्य :

1. दैनिक जीवन में गणित का महत्त्व समझाना और प्रयोग।
2. विभिन्न प्रकार से गणित के उपागमों को समझना व प्रयुक्त करना।
3. कक्षा–कक्ष हेतु गणित पाठयोजना की विधियों को जानना।
4. आवश्यकतानुसार पुस्तकालय प्रयोग के महत्त्व को जानना तथा पाठ्य सहगामी गतिविधियों को तैयार करना।
5. गणित के प्रति रुचि जागृत करने हेतु क्रिया–कलापों का आयोजन करना।
6. छात्रों व शिक्षकों को पुनर्बलन देना।

पाठ्यवस्तु – **80 अंक**

इकाई –1

- गणित का अर्थ, प्रकृति का ज्ञान।
- भारतीय व पाश्चात्य गणितज्ञों के योगदान का ज्ञान भास्कराचार्य, आर्यभट्ट, रामानुजन, पैथोगोरस आदि।
- गणित शिक्षण पाठ हेतु उद्देश्य व व्यवहारगत परिवर्तनों का ज्ञान।
- गणित शिक्षण की विधियाँ विश्लेषणात्मक, संश्लेषणात्मक, आगमन, निगमन, ह्यूरिस्टिक, प्रायोजना, एवं प्रयोगशाला विधि
- विभिन्न प्रविधियों को प्रयोग करना – मौखिक, लिखित, अभ्यास, गृहकार्य, स्वाध्याय तथा अभिक्रमित अनुदेशन।

इकाई–2

- पाठयोजना निर्माण का अर्थ, महत्व और प्रयोजन, पाठयोजना बनाने की उपादेयता।
- इकाईयोजना बनाने का उद्देश्य, वार्षिक योजना निर्माण।
- सूक्ष्म पाठयोजना का विकास, सहायक सामग्रियों का निर्माण और उनका महत्त्व जानना।
- गणित शिक्षण के श्रव्य–दृश्य साधन – उनका उपयोग।

इकाई – 3

- सैकण्डरी और सीनियर सैकण्डरी पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धान्त और उनकी उपयोगिता।
- माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान तथा केन्द्रीय शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रम का आलोचनात्मक अध्ययन करना।
- गणित अध्यापकों की शैक्षणिक और व्यावसायिक तैयारी।
- गणित शिक्षण में विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं व सन्दर्भ पुस्तकों का महत्व व ज्ञान।

इकाई – 4

- विभिन्न कठिनाइयों (पजल्स) और कौशल विकास हेतु गणित का उपयोग, कार्यक्रम बनाना, उत्तर ढूंढना, शब्द खोजना आदि।
- गणित प्रयोगशाला का निर्माण – वैदिक कालीन गणित में प्रयुक्त किए गए सरल सन्दर्भों की जानकारी। **विशेषतः** – अंकगणित के सन्दर्भ में।

इकाई–5

गणित शिक्षण का मूल्यांकन

- मूल्यांकन के सम्प्रत्यय का ज्ञान, परीक्षा व मूल्यांकन में अन्तर।
- मूल्यांकन की विशेषताएँ और कार्य।
- निदानात्मक परीक्ष्ज्ञण, उपलब्धि परीक्षण, अभिरुचि परीक्षण, अवलोकन, सारणी आदि की तैयारी करना।
- अच्छे परीक्षण की विशेषताएँ – प्रोत्साहन देने की प्रक्रिया।

सत्रीय कार्य – गणित **20 अंक**

- लिखित परीक्षण – 10 अंक
- निम्नलिखित किसी एक विषय पर दत्त कार्य – 10 अंक
  - (अ) गणित शिक्षण में कठिनाइयों (पजल्स) का महत्व, विभिन्न खेलों, पहेलियों का निर्माण एवं इनकी उपादेय
  - (ब) दो सफल गणितज्ञों के इतिहास की जानकारी – उनका कृतित्व एवं योगदान पर निबन्ध लेखन।
  - (स) किसी एक कक्षा के छात्रों के लिए निदानात्मक परीक्षण का निर्माण एवं त्रुटियों के समाधान हेतु सुझाव।
  - (द) दैनिक जीवन में गणित शिक्षण का महत्व, आधुनिक संसाधनों में इसका उपयोग और कम्प्यूटर शिक्षा में गणित शिक्षक का योगदान – लेख।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1.	अग्रवाल एस. एम.	:	Teaching of Modern Mathmatics, धनपत राम एण्ड सन्स – दिल्ली।
2.	अयंगर एण्ड कप्पूस्वामी	:	A Teaching of Mathmatics, in the Education, Universal paled
3.	Bitler and Wren	:	The teaching of Secondary mathmatics-mc Graw Hill Book Company
4.	जगत गुरु स्वामी	:	श्री भारती कृष्णा तीर्थ जी वैदिक गणित, मोतीलाल बनारसी दास पब्लिशर्स, दिल्ली।
5.	मंगल S.K.	:	Teaching of Mathmatics, प्रकाश Brof – लुधियाना।
6.	श्रीवास्तव एवं भटनागर	:	गणित शिक्षण – रमेश बुक डिपो जयपुर।
7.	कपूर J.N.	:	Modern mathmatics, for teachers आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली।

शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष

दशम प्रश्न पत्र

ज्ञान एवं पाठ्यक्रम

Course Code S.S. 108 | **पूर्णांक 100**

(बा.80+ आ. 20)

उद्देश्य :

1. आकलन द्वारा संचालित पाठ्यक्रम की समझ।
2. पाठ्यपुस्तकों के विभिन्न नमूनों का समीक्षात्मक विश्लेषण।
3. पाठ्यक्रम के विभिन्न आयामों की पहचान एवं उनका शैक्षिक उद्देश्यों के साथ सम्बन्ध।
4. शिक्षा के प्रमेयप्रधान आधार का परीक्षण।
5. आधुनिक छात्र–केन्द्रित शिक्षा के आधारों पर चर्चा।
6. पाठ्यक्रम रूपरेखा और पाठ्यांश के बीच सम्बन्ध का पहचान।
7. शासन, वैचारिकता और पाठ्यक्रम के सम्बन्ध की समझ।
8. सम्बन्धित शिक्षकों में शिक्षा एवं बालविकास सम्बन्धी मामलों को मूर्त रूप देने एवं उन पर निर्णय लेने की क्षमता में तत्सम्बद्ध जानकारी देने वाले तथ्यों की निष्पक्षता और समानता में अधिक समझ रखते हुए सहयोग।
9. समानता और निष्पक्षता जैसे आधुनिक मूल्यों को लेकर शिक्षा की समझ।

पाठ्यवस्तु – **80 अंक**

इकाई –1

ज्ञान एवं ज्ञानोद्भव

- शिक्षा की अवधारणा और उसका अर्थ, ज्ञान एवं शिक्षा और कौशल–शिक्षा का भेद, तर्क और विश्वास।
- ज्ञानजनन का क्रमिक अनुशीलन, समीक्षण, मिथक आधारित विश्वास और तर्क आधारित ज्ञान। समाज के विभिन्न ढाँचें और ज्ञान तथा उनका जुड़ाव और सम्बन्ध।

इकाई–2

छात्र–केन्द्रित शिक्षा

- आधुनिक छात्र केन्द्रित शिक्षा : – अर्थ, अवधारणा और उसका आधार।
- गान्धी, टैगोर, प्लेटो, ब्रूबर और फेरी के छात्र–केन्द्रित शिक्षा सम्बन्धी शैक्षिक विचार।

इकाई – 3

समाज, संस्कृति और आधुनिकता

- समाज, संस्कृति और आधुनिकता – औद्योगिकीकरण के द्वारा उपस्थापित ऐतिहासिक परिवर्तन, लोकतन्त्र एवं व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के विचारों के बीच समाज, संस्कृति और आधुनिकता का अर्थ, अवधारणा और सम्बन्ध। amsskar (Rodrigues, 2002) के विशेष सन्दर्भ में निष्पक्षता, समानता, समान अवसर, सामाजिक न्याय एवं सम्मान जैसे आधुनिक मूल्यों के सम्बन्ध को लेकर शिक्षा।

इकाई – 4

राष्ट्रीय सन्दर्भ –

- राष्ट्रीयता, वैश्विकता और धर्मनिरपेक्षता का अर्थ एवं अवधारण और उनके शिक्षा के साथ अन्तःसम्बन्ध (Tagore (2003) और कृष्णमूर्ति (1992) के विशेष सन्दर्भ में।

इकाई–5

पाठ्यपुस्तक व पाठ्यक्रम

- योग्यता की विचारधारा – शक्ति, विचारधारा और पाठ्यक्रम का सम्बन्ध (Apple, 2008) शक्ति, विचारधारा और पाठ्यक्रम, अर्थ, अवधारणा और महत्त्व।
- पाठ्यपुस्तक –चयन के मानदण्ड, पाठ्यपुस्तकों, बालसाहित्य एवं शिक्षक का समीक्षणात्मक विश्लेषण, आकलन की प्रक्रिया। पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तक के सम्बन्ध की समझ, सामग्री–संकलन, कार्य एवं कर्तव्यों का विकास, अध्ययन का बाह्य संसार से जोड़ना, कण्ठस्थीकरण से रचनात्मकता की ओर ले जाना, शिक्षक – एक अन्वेषक के रूप में। (अध्येताओं की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए सार्थक रणनीतियों का विकास)।

सत्रीय कार्य – **20 अंक**

- लिखित परीक्षण – 10 अंक
- सामाजिक समानता विषय पर आयोजित वाद–विवाद में प्रतिभागिता – 10 अंक

सन्दर्भग्रन्थ सूची

14. श्रीवास्तव, एच.एस. एवं चतुर्वेदी, एम.जी. (2010) पाठ्यचर्या और शिक्षण विधियाँ, शिक्षा प्रकाशन, जयपुर।
15. यादव, शियाराम, पाठ्यक्रम विकास अग्रवाल प्रकाशन 2011
16. पाण्डेय, दुर्गादत्त (1995) चिन्तन के विविध आयाम, प्रमानिक पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद (उ.प्र.)।
17. मिश्र, एच.एन. (1996) समकालीन दार्शनिक चिन्तन, किताबघर, कानपुर।
18. पाठक, आर.पी. एवं गुप्त्ज्ञ शैलजा (2010) शैक्षिक प्रबन्ध, राधा प्रकाशन, नई दिल्ली।
19. रमन बिहारी लाल (1995) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.)।
20. शर्मा, आर.ए, (2005) शिक्षा तकनीकी के तत्व एवं प्रबन्धन, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.)।
21. मिश्र भास्कर (1995) विद्यालय व्यवस्था, भावना प्रकाशन, नई दिल्ली।
22. शर्मा, आर.ए, (1995) शिक्षा प्रबन्धन, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.)।
23. शर्मा, वी.एस. (1998) विद्यालय प्रबन्धन, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.)।
24. जोशी, रजनी (1997) विद्यालय प्रशासन एवं प्रबन्धन, शारदा पुस्तक मंदिर, इलाहाबाद।
25. भटनागर, सुरेश (1998) शैक्षिक प्रबन्धन और शिक्षा की समस्यायें, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.)।
26. Schivest, W.H. (2012) Curriculum : Prospective paradigm and possility M.C. publication.
27. Hirst, Paul, H. Knowledge and the curriculum. Routledge publication.
28. Letha ram mohan (2009). Curriculum instrchon and evaluation. Agerwal publication, Agra.
29. Scolt, dand (2003). Curriculum Studies : Curriculum knowledge. Routledge falmes, M.Y.
30. Kelly, AV (2009). The curriculum : theory and practice sage publication Singapore.
31. Shulman L.S. (1986) those who understand : Knowledge growth in teaching educational researcher, 4-14
32. Sinha, S. (2000) Acquiring literacy in schools, seminar, 38-42
33. Sternberg, R.J. (2013), intelligence, competence, and expertise, in A.J. Elliot & C.S. Dweck (Eds), handbook of competence and motivation.
34. Tagore, R. (2003) Civilization and progress. in crisis in civilization and other essays. New Delhi : rupa & Co.
35. Pathak, A (2013) Social implications of schooling : Knowledge Pedagogy and consciousness, Aakar books.

शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष

एकादश प्रश्न पत्र

अधिगम आकलन

Course Code S.S. 109 **पूर्णांक 100**

(बा.80+ आ. 20)

उद्देश्य :

1. अधिकम आकलन के स्तरों यथा–परीक्षा आकलन, उपकरण निर्माण उनका अनुप्रयोग एवं परिणामों का विश्लेषण करने की प्रवीणता विकसित करना।
2. अधिगम आकलन के नवीन प्रतिमानों के अनुप्रयोग हेतु दक्षता लाना।
3. आकलन में प्रयुक्त सांख्यकीय एवं संगणक आधारित प्रकरणों के प्रभावी उपयोग की क्षमता विकसित करना।

पाठ्यवस्तु – **80 अंक**

इकाई– 1.

- मापन एवं मूल्यांकन – मापन मूल्यांकन एवं आकलन–सम्प्रत्यात्मक दृष्टि से अन्तर,मान्यताएं एवं उपयोग,प्रकार–योगात्मक,संरचनात्मक एवं निदानात्मंक मापक के स्तर– नामित क्रमित,अन्तरित एवं अनुपातिक।

इकाई–2

- आकलन किस का ? – अधिगम के आयाम और स्तर,तथ्यों एवं सम्प्रत्ययों से सम्बन्धित धारण एव प्रत्यास्मरण,विशेष कौशलों का अनुप्रयोग, समस्या समाधान तथा विविध परिस्थितियों में अधिगम का अनुप्रयोग,व्यक्ति अनुभवों के आधार पर संबंध निरूपण, विश्लेषण एवं उनपर चिन्तन,आकलन के विविध संदर्भ–विषयवस्तु आधारित एवं व्यक्ति आधारित संदर्भ।

इकाई–3

- विषय आधारित अधिगम का आकलन– विषय आधारित अधिगम का रचनावादी परिप्रेक्ष्य में स्पष्टीकरण, आकलन के उपकरण,कार्यो के प्रकार– परियोजना, दत्तकार्य तथा निष्पादन । परीक्षणों के प्रकार एवं उनकी निर्माण विधि। अधिगम प्रक्रिया का स्व,सहपाठी एवं शिक्षक द्वारा प्रेक्षण। स्वआकलन तथा सहपाठी आधारित आकलन पोर्ट फोलियो का निर्माण – आकलन के परिमाणात्मक एवं गुणात्मक पक्ष– उपयुक्त उपकरण।

इकाई–4

- उपयुक्त आकलन–उपकरण निर्माण हेतु शिक्षण की प्रवीणताएं – सन्दर्भ एवं अधिगमकर्त्ता आधारित आकलन उपकरणों को सुनिश्चित करने की प्रवीणता। अधिगमकर्त्ता को चिन्तन हेतु सक्रिय बनाने वाले कार्यो तथा प्रश्नों का निर्धारण। आकलन हेतु उपयुक्त निकर्षो का निर्धारण। छात्र पोर्ट फोलियो का निर्माण एवं उनके विविध अंशो का नामकरण अधिगम के लिए आकलन आधारित प्रतिपुष्टि।

इकाई–5

- प्रदत्त विश्लेषण,प्रतिपुष्टि एवं प्रतिवेदन– सांख्यिकीय प्रविधियां – आवृत्ति वितरण तालिका,केन्द्रवर्ती प्रवृत्ति,विचलन के मान, प्रतिशतांक,सामान्य संभाव्यता आधारित वितरण, सहसंम्बन्ध गुणांक एवं व्याख्या। प्रदत्तों का बिन्दुरेखीय प्रदर्शन। संरचनात्मक आकलन के घटक के रूप में प्रतिपुष्टि हेतु आकलन का प्रयोग, शिक्षकों द्वारा प्रतिपुष्टियां–लिखित टिप्पणियां। सहपाठी आधारित प्रतिपुष्टि,मार्किंग एवं ग्रेडिंग। अधिगमकर्त्ता का एक व्यापक पार्श्वचित्र विकसित करना। प्रतिवेदन प्रस्तुति एवं उनका प्रयोजन,छात्र प्रोन्नति परिसूचक के रूप में भावी शैक्षणिक निर्णयों का आधार बन सकने की दृष्टि से तथा अधिकमकर्त्ता का सम्पूर्ण पार्श्वचित्र विकसित करने की दृष्टि में।

सत्रीय कार्य – **20 अंक**

- लिखित परीक्षण – 10 अंक
- निम्नलिखित किसी एक विषय पर दत्त कार्य – 10 अंक
  1. (Blue Print Construction) ब्लू प्रिन्ट निर्माण।
  2. (Test Construction) परीक्षण निर्माण।
  3. केन्द्रीय एवं राज्य बोर्ड परीक्षा प्रणाली का अध्ययन एवं प्रस्तुति ।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1. गुप्ता,एस.पी.(2001) आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन,शारदा पुस्तक भवन,इलाहाबाद।
2. अस्थाना,विपिन,(1999) मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन,विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
3. भार्गव महेश (1990) आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन,भार्गव,बुक डिपो,आगरा।
4. पाण्डेय,के.पी.(2006) शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी।
5. पाठक,आर.पी.(2013) शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन में मनोवैज्ञानिक परीक्षण,कनिष्का प्रकाशन,नई दिल्ली।
6. लाल,रमन बिहारी एवं पलोड़ सुनीता (1995)शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन,आर.लाल बुक डिपो,मेरठ (उ.प्र.)
7. शर्मा,आर.ए.(1990) शैक्षिक एवं मानसिक मापन,आर.लाल बुक डिपो,मेरठ (उ.प्र.)
8. भटनागर,ए.वी.(2000)शैक्षिक एवं मानसिक मापन,आर.लाल बुक डिपो,मेरठ (उ.प्र.)
9. Mehta VI,First Mental Measurement Handbook for NCERT,New Delhi. The concept of Evaluation in Education,NCERT,NEW Delhi.
10. Pathak, R.P. (2010) Measurement and Evaluation in Education, Pearson Education, Knowledge Park, Noida (U.P.)
11. Edward (1969) Technique of Attitued Scale Construcation Valkcils felhter and Simmon Pvt. Ltd. Bombay.

शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष

द्वादश प्रश्न पत्र

समावेशी शिक्षा

Course Code S.S. 110 **पूर्णांक 50**

(बा.40+ आ. 10)

उद्देश्य :

1. समावेशित शिक्षा के आधुनिक परिप्रेक्ष्य का तर्काधार समझने की योग्यता विकसित करना।
2. शिक्षा में समावेशित शिक्षा की अवधारणा का प्रबल आधार खोजने की संवेदनशीलता लाना।
3. विशेष संवर्ग के बच्चो की शिक्षा की आवश्यकता को दृष्टिगत रखकर शैक्षणिक हस्तक्षेपों एवं नवाचारी युक्तियों के अनुप्रयोग की कुशलता विकसित करना।
4. राष्ट्रीय एवम् अन्तर्राष्ट्राय स्तर पर विशिष्ट शिक्षा के सन्दर्भ में चलाये जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों तथा विकलांगता को दूर करने हेतु सूचना–प्रौधोगिकी के योगदान से अवगत कराना।

पाठ्यवस्तु **40 अंक**

इकाई– 1.

- विशिष्ट शिक्षा – अवधारणा,उद्देश्य,प्रकार,महत्व एवं क्षेत्र विकलांग बालकों की शिक्षा का विकास।

इकाई 2.

- शैक्षिक इन्टरवेन्शन–एकीकरण की प्रक्रिया,विकलांगता के अनुसार कार्यात्मक योग्यताओं का आकलन विकलांगता एवं सहायक सेवाएं संस्थान कक्ष।

इकाई 3.

- पाठ्यक्रम अनुशीलन– अवधारणा,विकलांगता के सन्दर्भ में पाठ्यक्रम अनुशीलन,पाठ्यसहगामी क्रियाएं एवं संचालन विकलांगता एवं नवाचार।

इकाई 4.

- समावेशित शिक्षा– अवधारणा, उद्देश्य,तत्व,महत्व,कक्षा शिक्षण विधियां, समावेशित शिक्षा की समस्याएं एवं समाधान।

इकाई 5.

- विकलांग बालको की शिक्षा की शिक्षा हेतु संस्थाओं का योगदान– राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वयंसेवी संस्थाओं की भूमिका,विकलांगता और पुनर्वास परिषद्,विकलांगता को कम करने के लिए सूचना–प्रौधौगिकी का योगदान।

सत्रीय कार्य : – **10 अंक**

- लिखित परीक्षण – 5 अंक
- निम्नलिखित किसी एक विषय पर दत्त कार्य – 5 अंक

1. सुविधावंचित संवर्ग के किन्ही चयनित एक छात्र का व्यष्टि अध्ययन निर्माण।
2. समावेशित शिक्षा की समस्याओं एवं चुनौतियों पर आधारित समूह परिचर्चा एवं प्रतिवेदन निर्माण।
3. विकलांग बालकों की शिक्षा हेतु राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की स्वयंसेवी संस्था के प्रयासों पर आधारित दत्त कार्य।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1. शर्मा आर.ए.(2005) विशिष्ट शिक्षा का प्रारूप,लायक बुक डिपो,मेरठ।
2. विष्ट,आभा रानी(1992) विशिष्ट बालक का मनोविज्ञान और शिक्षा,विनोद पुस्तक मन्दिर,आगरा।
3. सिंह बी.बी.(1990) विशिष्ट शिक्षा,वैशाली प्रकाशन,गोरखपुर।
4. Gary Thomas and Mark Vaughan,(2004) Inclusive Education-Reading and Reflections'' Bletchley: Open University Press,Papper Book and 18.99 PP 215
5. Panda K.G.(2004) Managing Behaviour Problems in child, Vikas Publishing House Private Ltd. New Delhi.
6. Peshwaria R, (2004) Managing Behaviour Problems in child, Vikas Publishing House Private Ltd. New Delhi.

7. India Vision, The Report of the Committee fo India, Planning Commission 2020 Govt. of India Published Academic Foundation,New Delhi.
8. Thomas G. (1997) Inclusive Schools for An Inclusive Society, British Journal of Special Education.
9. Stainback S. and stainback W, (1990) Inclusive Education, Baltimore, Paul Brokers Publishing Company.

शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष

त्रयोदश प्रश्न पत्र (विशिष्ट चयनित शिक्षण शास्त्र)

1. शैक्षिक निर्देशन एवं उपबोधन

Course Code S.S. 111 — **पूर्णांक 100**

(बा.80+ आ. 20)

उद्देश्य :

1. निर्देशन एवं उपबोधन के मूलभूत तत्वों का कक्षागत शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के सम्बन्ध में बोध कराना।
2. निर्देशन की प्रक्रिया तथा विभिन्न स्तरों पर निर्देश कार्यक्रमों के आयोजन से परिचित कराना।
3. वृत्ति के विकास सम्बन्धित विभिन्न तत्वों से अवगत कराना।
4. उपबोधन सेवाओं की प्रविधियों से परिचित कराना।
5. निर्देशन एवं उपबोधन में प्रयुक्त मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की उपादेयता एवं औचित्य से अवगत कराना।

पाठ्यवस्तु – — **80 अंक**

इकाई –1

- **निर्देशन** – अवधारणा, आवश्यकता, उद्‌देश्य, क्षेत्र, मूलभूत सिद्धान्त, निर्देशन के प्रकार – शैक्षिक, व्यावसायिक तथा व्यक्तिगत। निर्देशन तथा परामर्श में अन्तर तथा अन्तर्सम्बन्ध।

इकाई–2

- **निर्देशन की प्रक्रिया तथा विभिन्न स्तरों पर कार्यक्रम** – समूह निर्देशन तथा व्यक्तिगत निर्देशन, निर्देशन की प्रविधियाँ, बुलेटिन बोर्ड, कक्षावार्ता, वृत्तिक सम्मेलन, वृत्तिक प्रदर्शनियाँ, विभिन्न स्तरों (प्राथमिक, माध्यमिक, महाविद्यालयों) पर निर्देशन कार्यक्रमों का आयोजन।

इकाई – 3

- **वृत्तिक विकास** – प्रकृति, प्रक्रिया, प्रभावित करने वाले कारक, वृत्तिक विकास में सूचनाओं का एकत्रीकरण तथा प्रसार, स्थानन सेवा तथा अनुवर्ती सेवा।

इकाई – 4

- **परामर्शन** – अवधारणा, आवश्यकता, उद्‌देश्य परामर्शन की प्रविधियाँ – निदेशात्मक तथा अनिदेशात्मक परामर्शन। परामर्शन की भूमिका तथा अच्छे परामर्शन के गुण।

इकाई–5

- **निर्देशन एवं परामर्शन में प्रयुक्त मनोवैज्ञानिक परीक्षण** – मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का अर्थ, आवश्यकता तथा उद्‌देश्य, वर्गीकरण – बुद्धि, व्यक्तित्व, रूचि, उपलब्धि तथा अभिक्षमता परीक्षण, निर्देशन एवं परामर्शन में परीक्षणों एवं परीक्षणेतर विधियों का उपयोग।

सत्रीय कार्य – — **20 अंक**

- लिखित परीक्षण – 10 अंक
- निम्नलिखित किसी एक विषय पर दत्त कार्य – 10 अंक
  1. वृत्तिक विकास में सूचनाओं के स्रोतों का संकलन तथा प्रस्तुतीकरण।
  2. विभिन्न स्तरों पर निर्देशन कार्यक्रमों का अवलोकन तथा प्रस्तुतीकरण।
  3. स्थानन सेवाओं की कार्यप्रणाली का अवलोकन।
  4. बुलेटिन बोर्ड बनाना।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1. शर्मा आर. ए. एवं चतुर्वेदी शिखा (2005) शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन तथा परामर्श, आर.लाल बुक डिपो मेरठ (उ.प्र.)।
2. भटनागर आर.पी. एवं जौहरी मंजू (2010) शिक्षा एवं मनोविज्ञान में निर्देशन तथा परामर्श, आर.लाल बुक डिपो मेरठ (उ.प्र.)।
3. परिहार, अमरजीत सिंह (2002) निर्देशन एवं परामर्श, आर.लाल बुक डिपो मेरठ (उ.प्र.)।
4. शर्मा आर. ए. (2005) निर्देशन एवं परामर्श के मूलतत्त्व, आर.लाल बुक डिपो मेरठ (उ.प्र.)।
5. पाठक, आर.पी, एवं भारद्वाज अमिता पाण्डेय (2012) पाठ्यचर्या, निर्देशन एवं तुलनात्मक शिक्षा का आधार, कनिष्का प्रकाशन, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली।
6. वर्मा, आर.पी. एवं उपाध्याय आर.वी. (1995) शैक्षणिक एवं व्यावसायिक निर्देशन, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
7. Jayaswal, S.R., (1995) Guidance & Counselling, Prakashan Kendra, Lucknow.
8. Traxller, Arthur E. (1957) Techniques of Guidance, Harper and Brother Publishers, N.Y.
9. Jones, J., (1965) Principles of Guidance, MC Graw Hill Book Co. N.Y.
10. Kochar, S.K. (1984) Guidance and Couselling in Collage and Universities, Sterling Publishers Pvt. Ltd.

शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष

त्रयोदश प्रश्न पत्र (विशिष्ट चयनित शिक्षण शास्त्र)

2. मूल्य शिक्षा

Course Code S.S. 111 **पूर्णांक 100**

(बा.80+ आ. 20)

उद्देश्य

1. मूल्य शिक्षा की अवधारणा एवं आवश्यकता से परिचित कराना।
2. मूल्यों के वर्गीकरण से अवगत कराना।
3. मूल्य शिक्षण की विभिन्न विधियों के प्रयोग में सक्षम बनाना।
4. व्यक्ति विकास में मूल्य शिक्षा के माध्यम से व्यावसायिक प्रतिबद्वता विकसित करना।

पाठ्यवस्तु – **80 अंक**

इकाई– 1

- **मूल्य शिक्षा –** स्वरूप, उद्देश्य तथा मूल्य परक शिक्षा का विकास,मानवीय मूल्यों की अवधारणा आवश्यकता, उद्देश्य तथा महत्व,शिक्षा नीतियों मे मूल्य शिक्षा।

इकाई–2.

- **मूल्यों का वर्गीकरण–** शैक्षिक,व्यावसायिक, सामाजिक, सौन्दर्यात्मक, नैतिक, अध्यात्मिक मूल्य के सन्दर्भ।

इकाई – 3

- **मूल्य शिक्षण की विधियां–** मूल्यों का आभ्यान्तरीकरण–विद्यालयी विषयों,पाठ्य सहगामी क्रियाओं द्वारा,भूमिका निर्वहन,मूल्य स्पष्टीकरण एवं विश्लेषण,कहानी प्रस्तुतीकरण तथा विधि।

इकाई–4

- **व्यक्तित्व विकास और मूल्य शिक्षा –** आत्मबोध, आत्मविश्लेषण, अन्तर्दशन, आत्मनियंत्रण, धैर्य, त्याग, रचनात्मकता, परोपकारिता, लिंग समानता के प्रति संवेदीकरण तथा वैज्ञानिक दृष्टि। शिक्षक के लिए व्यावसायिक आचार।

इकाई–5

- **राष्ट्रीय तथा वैश्विक विकास मे मूल्य शिक्षा –** राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य, सवैधानिक मूल्य–जनतान्त्रिक, समाजवादी,धर्मनिरपेक्ष,समानता,न्याय,स्वन्त्रता तथा बन्धुत्व। राष्ट्रीय एकीकरण तथा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास में मूल्यपरक शिक्षा की भूमिका।

सत्रीय कार्य – **20 अंक**

- लिखित परीक्षण – 10 अंक
- निम्नलिखित किसी एक विषय पर दत्त कार्य – 10 अंक
  1. पाठ्य–पुस्तकों में निहित मूल्यों का विश्लेषण आधारित प्रस्तुतीकरण
  2. मूल्य सम्बन्धित ग्रन्थावलोकन आधारित प्रस्तुतीकरण
  3. भूमिका निर्वहन मूल्य आधारित समस्याओं पर

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1. पाण्डेय,के.पी.(2005) शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार,विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी।
2. जैश्री,मूल्य,(2008) पर्यावरण और मानव अधिकार की शिक्षा,शिप्रा प्रकाशन,द्वितीय संस्करण, नई दिल्ली।
3. गुप्त,नत्थूलाल,(2005) मूल्यपरक शिक्षा और समाज,नमन प्रकाशन,नई दिल्ली।
4. चतुर्वेदी,रश्मि,खण्डाई,हेमन्त(2011) मूल्य शिक्षा, ए.पी.एच. पब्लिशिंग कारपोरेशन,नई दिल्ली।
5. झा,नागेन्द्र,(2012) प्राचीन एवं अर्वाचिन शिक्षा पद्वति,अभिषेक प्रकाशन,पीतमपुरा।
6. पाठक,आर.पी..(2011) प्राचीन भारतीय शिक्षा,कनिष्ठा प्रकाशन,अंसारी रोड़, दरियागंज,नई दिल्ली।
7. पाठक,पी.डी.(1995) शिक्षा सिद्वान्त विनोद पुस्तक मंदिर आगरा (उ.प्र.)
8. डागर वी.एस.(1990) भारतीय समाज और मानव मूल्य,हरियाणा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी चण्डीगढ।

9. पाठक,आर.पी. एवं भारद्वाज अमिता पाण्डेय (2012) भारतीय समाज में शिक्षा का उदयीमान परिदृश्य कनिष्का प्रकाशन,अंसारी रोड़,दरियागंज,नई दिल्ली।
10. पाण्डेय,रामशकल(1990) मूल्य शिक्षा शास्त्र आर.लाल बुक डिपो मेरठ (उ.प्र.)
11. शर्मा.आर.ए.(2000) मानव मूल्य एवं शिक्षा,आर.लाल बुक डिपो मेरठ (उ.प्र.)

शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष

त्रयोदश प्रश्न पत्र (विशिष्ट चयनित शिक्षण शास्त्र)

3. योग शिक्षा

Course Code S.S. 111 **पूर्णांक 100**

(बा.80+ आ. 20)

उद्देश्य –

1. छात्राध्यापकों को 'योग' की संकल्पना तथा अभ्यास ज्ञान प्रदान करना।
2. योग शिक्षा की अवधारणा से अवगत कराते हुए योग की विभिन्न पद्धतियों का ज्ञान कराना।
3. बलकों को योगासन, प्राणायाम के महत्त्व को बताते हुए योगसाधना और योग चिकित्सा के महत्त्व से परिचित कराना।
4. अच्छे स्वास्थ्य हेतु संतुलित भोजन तथा व्यायाम की आवश्यकता और उपयोगिता से अवगत कराना।
5. सन्तुलित वैयक्तिक और सामाजिक जीवन के निर्माण में योग किस प्रकार का योगदान दे सकेगा, इस बात की सम्भावनाओं का छात्रों को ज्ञान देना।
6. आधुनिक विद्वानों की कसौटी पर योग सिद्धान्तों को कसकर उनकी वैज्ञानिकता के विषय में परिचय करानां

पाठ्यवस्तु **80 अंक**

इकाई – 1

- भारत में योग परम्परा – अवधारणा, योग शिक्षा की आवश्कता तथा विविध आयाम। योग की विभिन्न पद्धतियां : ज्ञान योग, भक्ति योग, कर्मयोग, मानवजीवन में इनका उपयोग तथा महत्त्व।

इकाई – 2

- योग के विविध वर्ग (सम्प्रदाय) – हठ, राज, सांख्य, कर्म, भक्ति, ज्ञानालय, मन्त्रध्यान आदि। प्रत्येक का स्थूल परिचय।

इकाई – 3

- दार्शनिक आधार – पुरूष, व्यक्ति, संसार, द्वैत–अद्वैत, सत्व, रज, तम, मोक्ष, समाधि। अर्वाचीन भारतीय योगी तथा उनके दर्शकों का स्थूल परिचय–रामकृष्ण, विवेकानन्द, अरविन्द, रमण महर्षि।

इकाई – 4

- योगासन एवं प्राणायाम – आसन, प्राणायाम स्वरूप, प्रकार प्रक्रिया एवं महत्त्व। भारतीय दर्शन में सांख्ययोग परिचय, मन, बुद्धि, चित्त, अंहकार का स्वरूप और महत्त्व, योग साधना और योग चिकित्सा का जीवन में महत्त्व, ध्यान धारण का स्वरू‍ और महत्व। ध्यान का महत्त्व और उसे केन्द्रित करने की यौगिक विधियाँ।

इकाई – 5

- शारीरिक आधार – मानव–शरीर के तन्त्रों का परिचय। शरीर स्थिति (Posture) श्वसन क्रिया, विविध यौगिक प्रकारों का शरीर का प्रभाव।
- प्राणायाम का स्वरूप। प्राणायाम तथा चित्तवृत्तियों का यौगिक दृष्टि से सम्बन्ध उत्सर्जन अंग–शरीर शुद्धि की यौगिक विधियां शिथिलीकरण (शारीरिक तथा मानसिक) शिथिलीकरण का महत्त्वं। शारीरिक व्यायाम (Exercise) के शारीरिक प्रभाव–थकान।
- योगिक आहार के सिद्धान्त।
- कुण्डलिनी विचार। समाधि के शारीरिक दृष्टि के विचार।
- सामाजिक आधार – व्यक्ति की प्रकृति, परमात्मा तथा शारीरिक समाज के सम्बन्ध। सामाजिक स्वास्थ्य तथा समायोजन का महत्त्व। संसार की विद्यमान परिस्थिति में योग का योगदान। यम–नियमों का महत्त्व।

सत्रीय कार्य – **20 अंक**

- लिखित परीक्षण – 10 अंक
- निम्नलिखित किसी एक विषय पर दत्त कार्य – 10 अंक
    1. योगशिक्षा का दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक आधार पर शिक्षण प्रशिक्षण में इस शिक्षा की आवश्यकता विषय पर लेख।
    2. ''स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन निवास करता है।'' कथन की पुष्टि में योग शिक्षा व योगासनों का महत्त्व बताइए।
    3. योग के संदर्भ में भारतीय मनीषियों का अभिमत श्री रामकृष्ण, महर्षि अरविन्द, स्वामी विवेकानन्द तथा महर्षि रमण मे से किन्हीं दो का।
    4. वर्तमान औद्योगीकरण युग में विभिन्न योगासनों की प्रक्रिया विषय के आधार पर योगासनों के चित्र व (किन्हीं तीन के) मॉडल का निर्माण।

संदर्भग्रन्थ सूची –

1. पातंजलयोगसूत्र, हठयोगप्रदीपिका, शिवसंहिता तथा घरेण्ड संहिता – हिन्दी सटीक।
2. योगासन – कुवलयानन्द, पापुलर प्रकाशन, बम्बई।
3. यौगिक चिकित्सा – कुवलयानन्द तथा विशेषकर, स्वास्थ्य मन्त्रालय, नई दिल्ली।
4. सरल योग साधना – योगेन्द्र योग इन्स्टीट्यूट, बम्बईं।
5. बहिरंग योग – व्यासदेव, योग निकेतन, गंगोत्री।
6. योगवाशिष्ठ – भौखनलाल आत्रेय।
7. योगिक सूक्ष्म व्यायाम – धीरेन्द्र ब्रह्मचारी, विश्वायतन, योगाश्रम, जम्मू।
8. कल्याण – योगांक (1935) – गोरखपुर।
9. Asanas – Kuvalyanand Popular Prakashan, Bombay.
10. Pranayam – Kuvalayanand Popular Prakashan, Bombay.
11. Yogio Therapy – Kuvalayanand and Vinekar, Ministry of Health, New Delhi.
12. Yogic Exercise – Majumdar, Orient Longman, Bombay.
13. Yoga Hygience Simplified – Yogendra, Yoga Institute, Bombay.
14. Yoga and Personality – K. S. Joshi. Udayan Prakashan, allahabad.
15. Yoga Today – Dr. Yogendra (Editor), Friends of Yoga Society, Bombay.
16. Hath Yoga Simplifdied – yogendra Yoga Institute, Bombay.
17. Yoga Mimansa (Quarterly) Back Issues, Kaivalyedham Lonavia (poona).
18. Yoga Philosophy Y.N. Das Gupta, Calcutta.
19. Completed Illustrated Book on Yoga – Vishnu Devanand, Julian Press, London.
20. Yogic Assans – V.G. Rele, Taraporewala, Bombay.

शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष

त्रयोदश प्रश्न पत्र (विशिष्ट चयनित शिक्षण शास्त्र)

4. स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा

Course Code S.S. 111 **पूर्णांक 100**

(बा.80+ आ. 20)

उद्देश्य :–

1. छात्राध्यापकों को शारीरिक शिक्षा की अवधारण से अवगत कराते हुए उसके मनोवैज्ञानिक पक्षों से परिचित कराना।
2. विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा के विविध आयामों से परिचित कराना।
3. विविध क्रीड़ा प्रतियोगिताओं के आयोजन की क्षमता विकसित करना।
4. क्रीड़ा के विविध प्रकारों व उनके मापदण्डों से परिचित कराना।
5. छात्रों में स्वास्थ्य एवं शारीरिक सम्पुष्टि को बनाये रखने की योग्यता विकसित करना।
6. स्वास्थ्य संरक्षण के गुणों/आदतों को सृजित कर भावी नागरीकों को स्वस्थ राष्ट्र निर्माण योग्य बनाना।
7. छात्रों में सहस्तित्त्व एवं सहयोग की भावना को विकसित करना।

पाठ्य–वस्तु **80 अंक**

इकाई – 1

- स्वास्थ्य शिक्षा – अवधारणा, अच्छे स्वास्थ्य हेतु भोजन का महत्त्व, भोजन के पोषकतत्वों के कार्य तथा कुपोषण, आमिष एवं निरामिष भोजन, भोजन के मुख्य तत्त्व, संतुलित आहार। विभिन्न प्रकार के व्यायामों तथा आसनों का स्वास्थ्य के सन्दर्भ में महत्व। आसन सम्बन्धी विकृतियां एवं कारण, निराकरण एवं उपचार।

इकाई – 2

- शारीरिक शिक्षा – अवधारणा, उद्देश्य, महत्त्व एवं क्षेत्र, शारीरिक शिक्षा की आवश्यता तथा सम्पूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया में शारीरिक शिक्षा का स्थान। शारीरिक शिक्षा के मनोवैज्ञानिक पक्ष – खेल मनोविज्ञान, खेलों में उपलब्धि तथा अभिप्रेरणा, रूचियां तथा अभिवृत्ति, शिक्षक–छात्र संबंध, खेलभावना तथा आचार संहिता।

इकाई – 3

- विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा – विद्यालयों में खेल – प्रकार (व्यक्तिगत तथा सामूहिक खेल) तथा उनके सामान्य नियम, महत्त्व तथा विद्यालयीय, अन्तर वर्गीय, अन्तर सदन, अन्तर विभागीय स्तर पर तथा वार्षिक खेल–कूद प्रतियोगिताओं का आयोजन एवं महत्त्व।

इकाई – 4

- विविध गतिविधियाँ – समूह प्रतियोगिता का संगठन, प्रबन्ध तथा–प्रशासन, योग्यता परीक्षण, क्रीड़ायुद्ध, खेल आयोजन, प्रदर्शन, स्वास्थ्य दिवस, खेल दिवस, भ्रमण, मनोरंजन के लिए भ्रमण, खेल क्रेन्द्र, स्काटिंग बालिका उपदेशक, युवा आन्दोलन, पर्वतारोहण तथा अन्य समान्तर गतिविधियाँ।

इकाई – 5

- विविध क्रीड़ा विधि एवं मापन – मानक दौड़ क्षेत्र के निशान की विधि (400 मी) तथा अन्य संबंधित क्षेत्र एवं निशान।
- मुख्य खेल कूद के महत्वपूर्ण नियम तथा विभिन्न भेदों में प्रशिक्षण के मुख्य बिन्दु – हॉकी, फुटबॉल, बालीवाल, क्रिकेट, बास्केट बॉल, एथलीटस् (व्यायाम की विधि) कबड्डी तथा खो–खो।
- शारीरिक – शिक्षा प्रशिक्षण की विधियाँ, पाठ योजनाएँ कथा संगठन तथा प्रबन्ध।
- मनोविज्ञान, व्यायाम एवं पोषण का सामान्य परिचय।

सत्रीय कार्य – **20 अंक**

- लिखित परीक्षण – 10 अंक
- निम्नलिखित किसी एक विषय पर दत्त कार्य – 10 अंक
  1. शारीरिक शिक्षा की आधुनिक अवधारणा।
  2. शारीरिक शिक्षा की आधुनिक अवधारणा।
  3. शारीरिक शिक्षा के सिद्धान्त।

4. शारीरिक शिक्षा के सिद्धान्त।
5. शारीरिक शिक्षा के जैवकीय व मनोवैज्ञानिक आधार।
6. प्रमुख योगासन व उनका महत्व।

सन्दर्भग्रन्थ सूची –

1. शारीरिक शिक्षा का राष्ट्रीय योजना एवं भ्रमण (शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)।
2. माध्यमिक विद्यालय के लिए शारीरिक गतिविधियाँ, T.I.P.E.कान्दीवली बम्बई सभा
3. प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के लिए व्यायाम का पाठ्यक्रम राजस्थान सरकार।
4. जे.पी.थॉमस, शारीरिक शिक्षा पाठ।
5. जे.पी. थॉमस, शारीरिक शिक्षा का संगठन (प्रशिक्षण महाविद्यालयों के लिए पाठ्यपुस्तक) मद्रास।
6. वॉलटमर तथा सोलिंगर, शारीरिक शिक्षा का संगठन, भारतीय संस्करण।
7. जे.सी. विलियम, शिक्षा का सिद्धान्त।
8. एच.सी.बुक, खेल–कूद के नियम।
9. जे.आर.शर्मा, शारीरिक शिक्षा का सिद्धान्त।
10. औ. त्रियुनरायण एवं एस. हरिशर्मा, शारीरिक शिक्षा का विश्लेषण, A.C.P.E.कारलकुंडी–4
11. औ. त्रियुनरायण एवं एस. शर्मा, शारीरिक शिक्षा में विधियाँ, A.C.P.E.कारलकुंडी–4
12. ई.एस. राइस, शारीरिक शिक्षा का संक्षिप्त इतिहास।
13. पाठक, आर.पी. एवं उपाध्याय भुवनेश (2005) स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा, अभिषेक प्रकाशन, नई दिल्ली।
14. T.I.P.E. बम्बई, हमारी शारीरिक गतिविधियाँ।
15. जे.एल.रायोण, शारीरिक शिक्षा सहसम्बन्ध।
16. शिक्षा मन्त्रालय, शारीरिक शिक्षा के लिए विद्यालयी बालकों के शारीरिक शिक्षा की संदर्भ पुस्तक।
17. लायल, शारीरिक शिक्षा, शकुन्तला प्रकाशन, लखनऊ।
18. मोहन (ही.एम.ए.), शारीरिक शिक्षा के सिद्धान्त एवं तत्व ज्ञान मेट्रोपोलिटन बुक कम्पनी, दिल्ली।
19. कुवनन्नद स्वामी, योगासन, पापुलर बुक डिपो, बम्बई, 25

शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष

त्रयोदश प्रश्न पत्र (विशिष्ट चयनित शिक्षण शास्त्र)

5. शान्ति शिक्षा

Course Code S.S. 111 **पूर्णांक 100**

(बा.80+ आ. 20)

उद्देश्य –

1. शान्ति को वास्तविक स्वरूप से परिचित हो सकेंगे।
2. अशान्ति के कारणों एवं निवारक उपयों का ज्ञान हो सकेगा।
3. सामाजिक बुराईयों के कारणों को जानकर इन्हें दूर करने का प्रयास कर सकेंगे।
4. पारस्परिक समझ विकसित हो सकेगा।
5. विविधता के प्रति सम्मान की भावना उदित हो सकेगी।
6. लोकतांत्रिक प्रक्रिया के सम्मान की भावना उत्पन्न हो सकेगी
7. अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग एवं सुरक्षा की समझ विकसित हो सकेगी।
8. मानवाधिकारों के प्रति आदर की भावना विकसित हो सकेगी।
9. सामाजिक अनुकूलन में सहायता प्राप्त हो सकेगी।
10. सामाजिक विघटन को रोकने में समर्थ हो सकेंगे।

पाठ्यवस्तु – **80 अंक**

इकाई –1

शान्ति शिक्षा की अवधारणा एवं स्वरूप

- शान्ति की अवधारणा एवं आवश्यकता।
- शान्ति शिक्षा की अवधारणा, प्रवृत्ति एवं क्षेत्र।
- वैश्विक परिप्रेक्ष्य में शान्ति शिक्षा के सम्प्रत्यय।
- शान्ति शिक्षा का स्वरूप – महात्मा गांधी, नेल्शन मण्डेला एवं संयुक्त राष्ट्र संघ के 1995 के 28वें अधिवेशन के परिप्रेक्ष्य में।

इकाई–2

शान्ति शिक्षा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

- मानवाधिकारों की संपोषिका के रूप में शान्ति शिक्षा का उद्भव।
- शान्ति शिक्षा की विकास यात्रा।
- अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में शान्ति शिक्षा का उपस्थापन।
- अध्यापक शिक्षा द्वारा शान्ति शिक्षा को विकसित करने के उपाय।

इकाई – 3

सामाजिक परिवर्तन एवं सामाजिक बुराईयाँ

- सामाजिक परिवर्तन – अवधारणा, स्वरूप सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष।
- सामाजिक नियंत्रण – अवधारणा एवं आवश्यकता।
- सामाजिक नियंत्रण के प्राचीन एवं नवीन साधन।
- सामाजिक परिवर्तन के कारण उत्पन्न सामाजिक बुराईयाँ –
  - ➢ उपभोक्तावाद और लालच।
  - ➢ व्यक्तिवाद एवं स्वार्थ।
  - ➢ मूल्यों का ह्रास।
  - ➢ समुदाय का उपक्षय
  - ➢ संयुक्त परिवार का विघटन।
  - ➢ भोगवादी प्रवृतियों का विकास एवं शोषण।
  - ➢ युवाओं द्वारा दुराचरण।

    इन बुराईयों की पहचान तथा इन्हें दूर करने के उपाय।

इकाई – 4

द्वन्द्व प्रबन्धन एवं सहक्रियात्मक मूल्य

- द्वन्द्व की सामाजिक स्थिति एवं द्वन्द्व की मानसिक अवस्थिति।
- द्वन्द्व प्रबन्धन में प्रवृत्ति–निवृत्ति का स्थान।
- द्वन्द्व प्रबन्धन में सहायक सहक्रियात्मक मूल्य –
    - ➢ पारस्परिक समझ का विकास।
    - ➢ लोकतांत्रिक प्रक्रिया का ज्ञान।
    - ➢ अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग एवं सुरक्षा की भावना।
    - ➢ सहनशीलता/धैर्य।
    - ➢ विविधता का सम्मान।
    - ➢ आन्तरिक शान्ति एवं सामंजस्य।
    - ➢ मानवाधिकारों का ज्ञान।
    - ➢ मानव सम्मान।

      उक्त मूल्यों का अध्यापक शिक्षा द्वारा व्यवहारिक अनुप्रयोग।

इकाई–5

विश्वशान्ति और भारत

- सर्व शान्ति स्थापित करने में यजुर्वेदीय शान्ति पाठ का योगदान।
- ईशावास्योपनिषदीय शान्ति अवधारणा।
- शान्ति की संस्कृति को स्थापित करने में भारतीय वांग्मय में वर्णित आदेशों, उपदेशों एवं प्रार्थनाओं का योगदान।
- भारत के गुट निरपेक्ष सिद्धान्त का विश्वशान्ति में योगदान।

सत्रीय कार्य **20 अंक**

- लिखित परीक्षण – 10 अंक
- उपर्युक्त पाठ्य वस्तुओं में से किसी एक बिन्दु पर टर्म पत्र निर्माण – 10 अंक

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1. देव अर्जुन देव इंदिरा अर्जुन, दास सुप्रा, अनु. सिंह आदित्य नारायण – मानव अधिकार स्रोत ग्रन्थ, रा.शै.अनु.प्र. परिषद्, नई दिल्ली।
2. डॉ. सुरेन्द्र सिंह नेगी, नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता, आदित्य पब्लिशर्स, सागर, म.प्र.।
3. रा.अ.शि.परि.,दिल्ली, नई अध्यापक शिक्षा में नीतिगत परिदृश्य विवेचन व प्रलेखन।
4. के.जी. सैयदेन, प्रॉबलम्स ऑफ एजूकेशन रिकंस्ट्रक्शन, एशिया पब्लिशिंग।
5. पाण्डेय रामशकल, संस्कार शिल्पी, अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली।
6. डॉ. चौबे सरयू प्रसाद, शिक्षा मनोविज्ञान, अनुप्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर।
7. डॉ. माथुर एस.एस., समाज मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
8. सिंह अरुण कुमार एवं सिंह आशीष कुमार, व्यक्तित्व का मनोविज्ञान।
9. शर्मा विष्णु, पंचतन्त्र।
10. ईशावास्योपनिषद।
11. शुक्लयजुर्वेदीय शान्ति पाठ।
12. रा.अ.शि.परि. नई दिल्ली, गुणात्मक अध्यापक शिक्षा का पाठ्यचर्या प्रारूप।
13. भर्तृहरि, नीतिशतकम्।
14. वेदव्यास, महाभारत – शान्तिपर्व, गीताप्रेस गोरखपुर।
15. श्रीमद्भगवद्गीता।
16. कोठारी गुलाब, राजस्थान पत्रिका जयपुर संस्करण, राजस्थान पत्रिका, 13.02.2011
17. शर्मा राजेन्द्र, शिक्षा समाजशास्त्र, श्याम प्रकाशन, फिल्म कॉलोनी, जयपुर।
18. Vidya Shipra, Education Reforms New Trends and Innovations in Educational Development, Deep & Deep Publication, Pvt. Ltd., New Delhi.
19. Kur Balvinder, Peace Education, Deep & Deep Publication, Pvt. Ltd., New Delhi.
20. Pandey Saroj, Peace Education Self Istrucational, NCERT.
21. Kur Balvinder, Teaching of Peace Conflict Resolution, Deep & Deep Publication, Pvt. Ltd., New Delhi.
22. Joseph, What are today's Social Evils, Joseph Rowenree Foundation, U.K., 2008

शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष

त्रयोदश प्रश्न पत्र (विशिष्ट चयनित शिक्षण शास्त्र)

6. मानवाधिकार शिक्षा

Course Code S.S. 111 — **पूर्णांक 100**

(बा.80+ आ. 20)

उद्देश्य

1. भारत में मानवाधिकारों की अवधारणा से परिचित कराना।
2. भारतीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में मानवाधिकारों के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना।
3. विशिष्ट वर्गो के अधिकारों का अवबोध कराना।
4. मानवाधिकारों के सन्दर्भ में राजकीय एवं राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोगों की भूमिका तथा कार्यप्रणाली से परिचितकराना।
5. मानवाधिकारों के लिए कार्यरत विभिन्न संस्थाओं की भूमिका से अवगत कराना।

पाठ्य–वस्तु — **80 अंक**

इकाई– 1.

- **मानवाधिकार** – अवधारणा,आवश्यकता उद्देश्य तथा मानवाधिकारों का विकास।

इकाई –2.

- **भारतीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में मानवाधिकार** – मानवाधिकार सार्वभौमिक घोषणापत्र का परिचय, संविधान में वर्णित अधिकार–समानता,शिक्षा,जीवन,स्वतत्रंता तथा सम्मान,सामाजिक तथा आर्थिक अधिकार एवं कर्तव्य।

इकाई –3

- **विशिष्ट वर्गों के अधिकार** – बालकों तथा सुंविद्या वंचित वर्गों के अधिकार।

इकाई–4

- **भारत में मानवाधिकार सम्बन्धित प्रयास** – राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग,राज्य स्तरीय मानवाधिकार आयोग,बाल आयोग का संक्षित्प परिचय व कार्यप्रणाली।

इकाई–5

- **मानवाधिकार के लिए कार्यरत विभिन्न संस्थाएं** – यू.एन.ओ.जनसंचार के माध्यम, स्वयं सेवी संस्थाएं।

सत्रीय कार्य – — **20 अंक**

- लिखित परीक्षण – 10 अंक
- निम्नलिखित किसी एक विषय पर दत्त कार्य – 10 अंक
  1. संविधान में वर्णित मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता पर आधारित प्रस्तुतीकरण।
  2. स्वयं सेवी संस्थाओं की मानवाधिकार जागरूकता में भूमिका।
  3. जनसंचार माध्यमों की मानवाधिकार जागरूकता में भूमिका पर आधारित प्रस्तुतीकरण।
  4. विषय सम्बन्धित Slogans का एकत्रीकरण तथा प्रस्तुतीकरण।

संदर्भग्रंथ सूची

1. गुप्त नत्थूलाल, 2005 मूल्यपरक शिक्षा और समाज नमन प्रकाशन दिल्ली।
2. मौर्या गीता, 2011 मानव अधिकार अनुभव पब्लिशिंग हाउस,इलाहाबाद।
3. हूडा राम निवास,2007 मानव अधिकार शिक्षा के.एस.के.पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स,नई दिल्ली।
4. पाठक आर.पी.एवं भारद्वाज अमिता पाण्डेय 2012 भारतीय समाज में शिक्षा का उदयीमान परिदृश्य,कनिष्का प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. शास्त्री हनीफ खान 1995 वेदों में मानव अधिकार, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान,नई दिल्ली।
6. मानवाधिकार आयोग का प्रतिवेदन।

शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष

त्रयोदश प्रश्न पत्र (विशिष्ट चयनित शिक्षण शास्त्र)

7. पर्यावरण शिक्षा

Course Code S.S. 111 **पूर्णांक 100**

(बा.80+ आ. 20)

उद्धेश्य –

1. विविध अनुशासनात्मक उपगमों का ज्ञान पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं के संदर्भ में।
2. छात्राध्यापकों विद्यालयी पर्यावरण से अवगत कराना।
3. इकॉलॉजीकल गतिविधियाँ का संगठन और योजना के विकास के कौशलो की जानकारी।
4. छात्रों को पर्यावरण की सुरक्षा, के लिये सचेत रहने की क्षमता का विकास
5. प्रौढ अधिगम कर्त्ताओं द्वारा पर्यावरण सम्बन्धी जागरुकता लाने के लिये छात्राध्यापकों को समर्थ बनाना।
6. पर्यावरणीय सूचनाओं के लिये विभिन्न तकनीकी और सामग्रियों के प्रभावशाली प्रयोग की क्षमता का विकास करना।
7. छात्राध्यापकों को स्थानीय सर्वेक्षण, क्षेत्रीय पर्यटन, पर्यावरण सम्बन्धी खेल तथा रुचि के लिये समर्थ बनाना।

पाठ्यवस्तु **80 अंक**

इकाई – 1

- मानव और जैविक वातावरण
- पारिस्थिक, सामुदायिक और जैविक क्षेत्र
- आधुनिक सभ्यता की समस्यायें–

  (अ) जनसंख्या विस्फोट

  (ब) प्रदूषण हवा, जल, ध्वनि, अवशिष्ट

  (स) प्राकृतिक संसाधनों का उपयोगऔर जल, मिट्टी, ऊर्जा आदि की आवश्यकता।

इकाई–2 पर्यावरण शिक्षा की प्रकृति और क्षेत्र

- अर्थ, महत्व, उद्धेश्य और पर्यावरण शिक्षा का दर्शन
- क्षेत्र– विविध अनुशासनात्मक उपागम, विज्ञान, कला और मानविकी के संदर्भ में।
- पर्यावरणीय शिक्षा एक शिक्षण विषय के रूप में, इसका पाठ्यक्रम, N.C.E.R.T. द्वारा पर्यावरणीय अध्ययन पर आधारित पाठ्यपुस्तकों का निर्माण।
- विभिन्न विषयों के माध्यम से पर्यावरणीय शिक्षा।

इकाई 3 –पर्यावरण शिक्षा की योजना और क्रियान्विति।

- विद्यालयों में पर्यावरण शिक्षा

  (अ) प्राथमिक स्तर

  (ब) माध्यमिक स्तर

  1. पर्यावरण के प्रति विद्यालयी युवाओं की जागरूकता तथा प्रौढ शिक्षा कार्यक्रमों के द्वारा प्रौढ अधिगम कर्त्ताओं की जागरूकता।
  2. शिक्षकों के लिये पर्यावरणीय शिक्षा–

     (अ) प्रशिक्षण काल में

     (ब) सेवाकाल में।

इकाई 4 – पर्यावरण शिक्षा के लियें एक क्रियात्मक कार्यक्रम।

- समस्या समाधान और प्रायोजना।
- इकॉलॉजी क्लब, इकॉलॉजी प्रयोगशाला, पुस्तकालय और प्रकाशन
- क्षेत्रीय पर्यटन, श्रव्य–दृश्य मीडिया, खेल और नाटकीकरण।

इकाई 5 – भविष्य के प्रति दृष्टि

- पर्यावरणीय आचरण (इथिक्स)
- पर्यावरण और भविष्य की आवश्यकता

  भोजन, मकान एवं शिक्षा

- अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण विकास की आवश्यकता U.N.E.P. तथा अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग पर्यावरण विकास की दृष्टि से।

सत्रीय कार्य – **20 अंक**

- लिखित परीक्षण – 10 अंक
- उपर्युक्त पाठ्य वस्तुओं में से किसी एक बिन्दु पर प्रायोजना कार्य – 10 अंक

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. Budyko, M.I. Global Ecology, Progress Publishers, Moscow, 1980.
2. Feathers, F. and Mayur R. Optimistic outlooks, global Futures Network, Torono, Bombay, New York, 1983.
3. Fedorov, E. Man and, Nature, The Ecological Crisis & Social Progress, Progress Publishers, Moscow.
4. Laptev, 1980, The World of Man in the World of Nature, Progress Publishers, Moscow.
5. UNESCO, Trends in Environmental Education, UNESCO, Paris, 1977.
6. Verma V.A. Text Book of Plant Ecology, Emkay Publication’s, Delhi, 1972.
7. मित्तल सन्तोष, 21 वीं सदी में पर्यावरण एवं पर्यावरण शिक्षा, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ

शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष

त्रयोदश प्रश्न पत्र (विशिष्ट चयनित शिक्षण शास्त्र)

8. ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड

Course Code S.S. 111 पूर्णांक 100

(बा.80+ आ. 20)

उद्देश्य

1. छात्राध्यापक प्राचीन भारतीय विज्ञान से परिचित हो सकेंगे।
2. कर्मकाण्ड के वैज्ञानिक पक्ष से परिचित हो सकेंगे।
3. सनातन देवार्चन पद्धति एवं प्रक्रिया ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
4. वैदिक मन्त्रों का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
5. पंचांग देखने तथा मुहूर्त व लग्न निर्धारण में कुशल हो सकेंगे।

इकाई – 1

- संस्कृत वाङ्गमय द्वारा बताए गए जीवनोपयोगी, आवश्यक करणीय कार्य– उनका भू–शुद्धी, धार्मिक एवं वैज्ञानिक महत्व– यथा प्रातः स्मरण कर दर्शन, भूमि स्पर्श, कलशस्थापन, सूर्योपस्थान आदि का महत्व एवं इनसे सम्बन्धित वैदिक मन्त्रों का ज्ञान– उच्चारण।

इकाई – 2 भारतीय ज्योतिष व संस्कृति में गणपति पूजन का महत्व–

- गणपति स्तुति, ध्यान, आह्वान–वैदिक व पौराणिक मंत्रों को शुद्ध उच्चारण एवं कण्ठस्थीकरण गणपति का षेडषोपचार पूजन।
- स्वस्तिवाचन एवं सकंल्प स्वस्ति वाचन मंत्रों, मंगलाचरण मंत्रों का शुद्ध उच्चारण करना, इनसे होने वाले लाभ– का ज्ञान।

इकाई – 3

- षोडश मातृका, नवग्रह पूजन की जानकारी देना– (क) विविध मंत्रों का ज्ञानकण्ठस्थीकरण (ख) सूर्यादिनवग्रह मण्डलों की रचना– आकृति, रंग स्थान निर्धारण तथा वैदिक मंत्रों द्वारा पूजन विधि का ज्ञान। (ग) कलश स्थापना– स्थान निर्धारण सविधि वरुण पूजन आदि का ज्ञान।
- रक्षा विधान (क) प्रक्रिया एवं भूतापसर्वण (ख) जन्मांग बोध, इष्ट साधन, लग्न निर्धारण, जन्म कुण्डली निर्माण एवं ग्रह स्थापन।

इकाई – 4

- पंचांग परिचय– प्रमुख मुहूर्तों का ज्ञान, शुभ लाभ मुहुर्त देखना, लग्न निर्धारण, विवाह मुहूर्त का ज्ञान आदि।

इकाई – 5

- कर्मकाण्ड एवं ज्योतिष का छात्र जीवन में महत्व– आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक दृष्टि से।

सत्रीय कार्य – **20 अंक**

- लिखित परीक्षण – 10 अंक
- निम्नलिखित किसी एक विषय पर दत्त कार्य – 10 अंक

(1) भारतीय संस्कृति दर्शन में वर्णित कर्मकाण्ड की वर्तमान में उपयोगिता वैज्ञानिकता।

(2) नवग्रह पूजन विधि – एवं मण्डलों की रचना सचित्र, सवर्ण।

(3) जन्म कुण्डली का निर्माण – उसके फलादेश का विस्तृत लेखन।

(4) प्रातः स्मरणीय श्लाकों / गणपति पूजन मंत्रों का सस्वर एवं शुद्ध उच्चारण पाठ।

(5) विभिन्न प्रकार की कुण्डलियों का तुलनात्मक अध्ययन का अन्तर बताना।

सन्दर्भग्रंथ सूची –

1. नित्यकर्म पूजा पाठ : गीताप्रेस गोरखपुर
2. वृहद्ऽहोचक्रम् : अवधनारायण त्रिपाठी
3. शीघ्रबोध : श्रीकाशीनाथ
4. नित्यकर्म पूजा पद्धति : पं. धरणीधर।
5. पंचाग विज्ञानम् : डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा
6. पंचाग परिचय : डॉ. भास्कर शर्मा

शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष

चतुर्दश प्रश्न पत्र

विद्यालय प्रबन्धन एवं नेतृत्व

Course Code S.S. 114 पूर्णांक 100

(बा.80+ आ. 20)

उद्देश्य –

1. विद्यालय प्रबन्धन की अवधारणा एवं गुणवत्ता प्रबन्धन की युक्तियों के अनुप्रयोग हेतु कौशलों का विकास करना।
2. विद्यालय के भौतिक संसाधनों एवं व्यवस्था से अवगत कराना।
3. विद्यालय के मानवीय संसाधनों प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों की विशेषताओं एवं दायित्वों का आधुनिक सन्दर्भ में निहितार्थ विकसित करना।
4. समय–सारणी एवं पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं के नियोजन से सम्बन्धित कौशलों का विकास कराना।
5. विद्यालय के विभिन्न अभिलेख एवं पंजिकाओं के रखरखाव की व्यावहारिक परिस्थितियों में आवश्यकता एवं महत्त्व का अवबोध कराना।
6. पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण की अवधारणा एवं उनके आधार पर व्यावहारिक परिस्थितियों को बेहतर बनाना।

पाठ्यवस्तु – 80 अंक

इकाई –1

- विद्यालय प्रबन्धन की अवधारणा, नियम तथा सम्पूर्ण गुणवत्ता प्रबन्धन की अवधारणा (TQM), N.C.E.R.T. एवं NUEPA केन्द्र एवं राज्य स्तरीय शिक्षा निदेशालय सी.बी.एस.सी.बोर्ड।

इकाई–2

- **विद्यालय प्रबन्धन –** प्रबन्धन एवं प्रशासन में अन्तर, प्रबन्धन की युक्तियाँ – विद्यालय का संगठनात्मकं परिवेश, अष्टांगिक घटक (आक्टापेस) एवं उनके आधार पर शिक्षण – अधिगम की परिस्थितियों का गुणवत्ता आश्वासन। विद्यालय के भौतिक संसाधन – विद्यालय भवन एवं प्रकार, कक्षा–कक्ष तथा फर्नीचर और उसकी व्यवस्था वर्तमान सन्दर्भ में आधारभूत भौतिक संरचना का महत्व एवं उपयोग।

इकाई – 3

- विद्यालय के मानवीय संसाधान : प्रभावी प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों की विशेषताएं एवं दायित्व। शैक्षिक नेतृत्व की अवधारणा एवं प्रकार – रूपान्तरणकारी एवं क्रियान्वितिकारी नेतृत्व–विशेषताएं एवं प्रारूप।

इकाई – 4

- विद्यालय व्यवस्था में रणनीतिक नियोजन, क्रियान्वयन, अनुश्रवण एवं नियन्त्रण की युक्तियाँ।

इकाई–5

- विद्यालय में विभिन्न अभिलेख एवं रजिस्टरों की आवश्यकता, महत्त्व एवं रखरखाव, अनुशासन, पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण की अवधारणा, प्रकार एवं उपादेयता।

सत्रीय कार्य – 20 अंक

- लिखित परीक्षण – 10 अंक
- निम्नलिखित किसी एक विषय पर दत्त कार्य – 10 अंक
  1. विद्यालय का पार्श्वचित्र तैयार करना।
  2. विश्लेषणात्मक अध्ययन आधारित प्रतिवेदन प्रस्तुति।
  3. विद्यालय के विभिन्न अभिलेखों में से किसी एक के विश्लेषण के आधार पर उपयोग।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1. मिश्र, भास्कर, (1995) विद्यालय व्यवस्था, भावना प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. जोशी, रजनी (1997) विद्यालय में प्रशासन एवं प्रबन्धन, शारदा पुस्तक मंदिर, इलाहाबाद।
3. सुखिया, एस.पी. (2000) विद्यालय व्यवस्था, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा (उ.प्र.)।
4. पाठक, आर.पी. एवं गुप्ता शैलजा (2010) शैक्षिक प्रबन्धन, राधा प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. शर्मा, आर.ए. (2005) शिक्षा तकनीकी के तत्व एवं प्रबन्धन, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.)।
6. वर्मा, जे.पी. (2000) विद्यालय प्रबन्धन, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.)।
7. शर्मा, आर.ए. (1995) शिक्षा प्रबन्धन, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.)।
8. शर्मा, वी.एस. (1998) विद्यालय प्रबन्धन, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.)।
9. भटनागर, सुरेश (1998) शैक्षिक प्रबन्धन और शिक्षा की समस्याएं, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.)।
10. शर्मा एवं सक्सेना (2010) शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्धन, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.)।

शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष

पंचदश प्रश्न पत्र

शिक्षण अधिगम की तकनीकी

Course Code S.S. 115 **पूर्णांक 50**

(बा.40+ आ. 10)

उद्देश्य –

1. शिक्षण की अवधारणा, चर प्रकार एवं सूत्रों का शिक्षण की व्यावहारिक परिस्थितियों में निहितार्थ समझना।
2. शिक्षण की अवस्थाओं एवं स्तरों का शैक्षणिक परिस्थितियों में अनुप्रयोग हेतु कौशल विकास सुनिश्चित करना।
3. शिक्षण के प्रतिमानों एवं उसके आधारभूत घटकों के उपयोग हेतु दक्षता विकसित करना।
4. शिक्षण के विविध रचनाकौशलों के प्रयोग की क्षमता का विकास करना।
5. शैक्षिक तकनीकी एवं उससे सम्बन्धित स्वरूपों के अनप्रयोग में दक्षता विकसित करना।

पाठ्यवस्तु – **40 अंक**

इकाई –1

- **शिक्षण की अवधारणा –** अभिप्राय, विशेषताएँ, चर तथा प्रकार्य, विभिन्न रूप–अनुबन्धन, प्रशिक्षण, अनुदेशन एवं मतारोपण तथा इनमें अन्तर, अनुसिद्धान्त, सूत्र, अधिगम की अवधारणा एवं उसका शिक्षण से सम्बन्ध।

इकाई–2 शिक्षण की अवस्थाएं एवं स्तर–

- **अवस्थाएं** – शिक्षण से पूर्व, शिक्षण के समय और शिक्षण के बाद (अभिप्राय, विशेषताएँ एवं संक्रियाओं के सन्दर्भ में) तथा इनमें अन्तर।
- **स्तर** – स्मृति, अवबोध एवं विमर्शी स्तर (अभिप्राय, अन्तर्निहित अधिगम सिद्धान्त, शिक्षण तथा परीक्षण सम्बन्धी रचनाकौशल के सन्दर्भ में) तीनों में अन्तर।

इकाई – 3 शिक्षण के प्रतिमान –

- अभिप्राय, आधारभूत तत्त्व, आवश्यकता, प्रकार – सामाजिक अन्तक्रिया स्रोत, सूचना प्रक्रिया स्रोत, व्यक्तिगत स्रोत एवं व्यवहार परिवर्तन स्रोत के आधार पर। कुछ महत्वपूर्ण शिक्षण प्रतिमान – आधारभूत शिक्षण प्रतिमान, सम्प्रत्यय सम्प्राप्ति प्रतिमान (आग्रहण एवं चयन प्रतिमान) तथा पृच्छा प्रशिक्षण प्रतिमान।

इकाई – 4 शिक्षण रचना कौशल एवं युक्तियाँ –

- अभिप्राय, अन्तर एवं प्रकार – प्रभुत्ववादी (व्याख्यान, प्रदर्शन, अनुवर्गशिक्षण, टीम शिक्षण एवं अभिक्रमित अधिगम) और जनतान्त्रिक (परिचर्चा, परियोजना, विचारावेश, दत्तकार्य एवं भूमिका निर्वाह), सूक्ष्मशिक्षण – अभिप्राय, उद्देश्य, प्रक्रिया, अवस्थाएं, लाभ एवं सीमाएं। अनुरूपित शिक्षण – अभिप्राय, उद्देश्य, प्रक्रिया, लाभ एवं सीमाएं।

इकाई–5 शैक्षिक तकनीकी –

- अभिप्राय, उद्देश्य, उपागम – कठोरतन्त्र, कोमलतन्त्र एवं प्रणाली उपागम, शिक्षण अधिगम में अनुप्रयोग, विभिन्न रूप – शिक्षण तकनीकी, अनुदेशनात्मक तकनीकी एवं व्यवहारजन्य तकनीकी। अनुदेशनात्मक उद्देश्य – अभिप्राय वर्गीकरण एवं उनका लेखन।

सत्रीय कार्य – **10 अंक**

- लिखित परीक्षण – 5 अंक
- निम्नलिखित किसी एक विषय पर दत्त कार्य – 5 अंक
  1. इकाई आधारित व्यष्टिपरक दत्त कार्य।
  2. शिक्षण प्रतिमान आधारित पाठयोजना निर्माण।
  3. व्यूहरचना आधारित प्रतिवेदन निर्माण एवं प्रस्तुतीकरण।
  4. इकाई 4–5 के लिये निर्धारित शीर्षकों पर चयनित रचना कौशलों एवं शैक्षिक तकनीकी के माध्यमों पर आधारित प्रस्तुतियाँ एवं उन पर समीक्षात्मक चर्चा।

सन्दर्भग्रन्थ सूची –

1. पाठक एवं उपाध्याय, शैक्षिक प्रौद्योगिकी एवं क्रियात्मक अनुसंधान अभिषेक प्रकाशन पीतमपुरा, दिल्ली।
2. पाठक, आर.पी., शैक्षिक प्रौद्योगिकी के नवीन आयाम, राधा प्रकाशन, अंसारी रोड़, दरियागंज, दिल्ली।
3. पाठक, आर.पी. (2011) शैक्षिक प्रौद्योगिकी, पियर्सन एजुकेशन, नॉलेज पार्क –नोएडा (उ.प्र.)।
4. पाठक, आर.पी. एवं भारद्वाज, अमिता पाण्डेय (2011) शैक्षिक प्रौद्योगिकी एवं क्रियात्मक अनुसंधान, कनिष्का प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. पाठक, आर.पी. (2011) एजुकेशनल टेक्नोलाजी, पिर्यसन एजुकेशन, नॉलेज पार्क, नोएडा (उ.प्र.)।
6. पाण्डेय, के. पी. (1992) अभिक्रमित अधिगम की टेक्नोलॉजी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी (उ.प्र.)।
7. शर्मा, आर.ए. (2000) शिक्षा तकनीकी के आधार, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.)।
8. सक्सेना, एन.आर. स्वरूप (1995) शिक्षण की तकनीकी, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.)।
9. शर्मा, आर.ए. (2005) सूचना सम्प्रेषण एवं शैक्षिक तकनीक, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.)।
10. पाठक, रमेश प्रसाद (2014) शैक्षिक तकनीकी के आयाम, विकास पब्लिशिंग हाउस, प्रा. लि., नई दिल्ली।
11. Pathak, R.P. (2003) New Dimensions of Educational Technology, Radha Prakashan, New Delhi.

शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष

षोडश प्रश्न पत्र

शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान

Course Code S.S. 116 — **पूर्णांक 50**

(बा.40+ आ. 10)

उद्देश्य

1. शैक्षिक अनुसंधान के विभिन्न स्वरूपों की अवधारणा से परिचित कराना।
2. क्रियात्मक अनुसंधान के प्रकारों एवं आवश्यकता से अवगत कराना।
3. क्रियात्मक अनुसंधान की प्रक्रिया में अन्तर्निहित सोपानों के प्रयोग का अवबोध विकसित कराना।
4. क्रियात्मक अनुसंधान के परिणामों को सांख्यिकी एवं अन्य उपयुक्त विधियों द्वारा विश्लेषित करने की क्षमता का विकास कराना।
5. क्रियात्मक अनुसंधान में परियोजना निर्माण, क्रियान्वयन एवं प्रतिवेदन लेखन क्षमता का विकास कराना।

पाठ्यवस्तु — **40 अंक**

इकाई– 1. शैक्षिक अनुसंधान

- अवधारणा एवं विभिन्न स्वरूप–मौलिक,व्यवह्त एवं क्रियात्मक अनुसंधान (अभिप्राय, उद्देश्य एवं सीमाएं) तथा तीनों में अन्तर। क्रियात्मक अनुसंन्धान– विशेषताएं, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य,महत्व एवं क्षेत्र।

इकाई–2. क्रियात्मक अनुसंधान की आवश्यकता एवं अनुप्रयोग

- विद्यालय,कक्षा एवं शिक्षकों के सन्दर्भ में। क्रियात्मक अनुसंन्धान के प्रकार– व्यक्तिगत,प्रतिभाग आधारित,विद्यालय एवं जनपद स्तरीय।

इकाई–3 क्रियात्मक अनुसंधान की प्रक्रिया

- समस्या को पहचानना, समस्या का परिभाषीकरण एवं सीमांकन, सम्भावित कारणों का पता लगाना, क्रियात्मक परिकल्पना निर्माण, क्रियात्मक परिकल्पना के क्रियान्वयन हेतु कार्ययोजना विकास एवं परिणाम मूल्यांकन क्रियात्मक अनुसंधान अभिकल्प– विशेषताएं संरचनात्मक घटक,प्रकार–व्यवहारिक एवं प्रतिभाग आधारित तथा उनमें अन्तर एवं समानताएं।

इकाई–4 क्रियात्मक अनुसंधान में प्रयुक्त सांख्यिकी

- प्रदत्तों का रेखाचित्रीय प्रस्तुतिकरण (वृत्तारेख स्तम्भारेख,स्तम्भाकृति,संचयी आवृति वक्र एवं संचयी प्रतिशत वक्र) केन्द्रवर्ती मानों के वर्गीकृत एवं अवर्गीकृत प्रदत्तों की गणना विधि (मध्यमान, मध्यांकमान एवं बहुलांकमान) प्रामाणिक विचलन (अवर्गीकृत एवं वर्गीकृत) की गणना, सहसम्बन्ध– अभिप्राय,प्रकार,सहसम्बन्ध गुणांक एवं स्पीयमैन अनुस्थिति अन्तर विधि द्वारा गणना।

इकाई–5 क्रियात्मक अनुसंधान परियोजना निर्माण

- प्रारूप,अपेक्षित सावधानियॉ,महत्वपूर्ण बिन्दु विद्यालयीय परिस्थितियों में प्रयोग।
- क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन लेखन – आवश्यकता घटक प्रारूप अपेक्षित सावधानियॉ, विद्यालय परिस्थिति से सम्बन्धित किसी क्रियात्मक अनुसंधान की परिस्थिति की समस्या पर प्रतिवेदन लेखन।

सत्रीय कार्य – — **10 अंक**

- लिखित परीक्षण – 5 अंक
- निम्नलिखित किसी एक विषय पर दत्त कार्य – 5 अंक

1. किसी विद्यालयीय समस्या पर आधारित प्रतिवेदन लेखन।
2. किसी प्रदत्त आधार सामग्री पर सांख्यिकी विधियों द्वारा परिणाम मूल्यांकन।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1. सक्सेना एन.आर.स्वरूप एवं ओबराय एस.सी.(1996) शिक्षण की तकनीकी,सूर्या पब्लिकेशन,मेरठ(उ.प्र.)
2. रूहेला,एस.पी.(1973) शिक्षण तकनीकी,राज प्रकाशन,नई दिल्ली।
3. सुखिया,एस.पी.(1985) शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व विनोद पुस्तक मन्दिर,आगरा,उ.प्र.
4. तिवारी,गोविन्द (1990) शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार,विनोद पुस्तक मंदिर आगरा,उ.प्र.
5. पाठक एवं उपाध्याय (2005) शैक्षिक प्रौद्योगिकी एवं क्रियात्मक अनुसंधान अभिषेक प्रकाशन पीतमपुरा,दिल्ली।
6. पाठक, आर.पी.(2007) शैक्षिक प्रौद्योगिकी के नवीन आयाम,राधा प्रकाशन,अंसारी रोड़, दरियांगज दिल्ली।
7. भारद्वाज,अमिता पाण्डेय (2014) विद्यालयीय शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान,आंकाक्षा पब्लिशिंग हाउस,दिल्ली।
8. पाठक,आर.पी.एवं भारद्वाज अमिता पाण्डेय (2012) शैक्षिक प्रौद्योगिकी एवं क्रियात्मक अनुसंधान कनिष्का प्रकाशन,नई दिल्ली।
9. लाल,रमन बिहारी एवं पलोड़ सुनीता (2000) शैक्षिक मूल्यांकन एवं क्रियात्मक अनुसंधान आर.लाल बुक डिपो,मेरठ उ.प्र.।
10. मिश्रा,सध्या (2015) शैक्षिक प्रौद्योगिकी एवं क्रियात्मक अनुसंधान मापन एवं मूल्यांकन,कनिष्का प्रकाशन,नई दिल्ली।

विद्यालयीय गतिविधियों, क्षेत्र सम्बद्ध गतिविधियों एवं ई.पी.सी. सम्बद्ध गतिविधियों का आयोजन

विद्यालयीय गतिविधियाँ एवं क्षेत्र सम्बद्ध आयोज्य गतिविधियाँ :–

- विद्यालय सम्बद्ध गतिविधियों के अन्तर्गत निम्नलिखित गतिविधियाँ आयोजित की जा सकती हैं।
- प्रातः कालीन सभा में भाग लेना।
- समय सारिणी का निर्माण।
- विद्यालय अभिलेख पञ्जिकाओं का निर्माण।
- शिक्षक अभिभावक सम्मेलन में सहभागिता एवं प्रतिवेदन।
- विद्यालयीय प्रशासन एंव प्रबन्धन में सहयोग तथा स्वानुभव अभिलेख।
- विविध राष्ट्रीय अभियानों में सक्रिय प्रतिभागिता।
- विद्यालय पुस्तकालय संधारण एवं संचालन व प्रतिवेदन।
- संस्कृत संभाषण शिविर आयोजन।
- विद्यालयीय उत्सवों एंव समारोहों सहभागिता व प्रतिवेदन।
- वृक्षारोपण कार्यक्रम में सहभागिता ।
- विद्यालयीय / विश्वविद्यालयीय / महाविद्यालयीय स्वच्छता एवं सौन्दर्यीकरण कार्यक्रमों में सहभागिता।
- विश्वविद्यालयीय / महाविद्यालयीय / विभागीय उत्सवों एवं कार्यक्रमों में सहभागिता व प्रतिवेदन लेखन।
- छात्र निर्देशन एंव उपबोधन कार्यक्रम में सहभागिता।
- विश्वविद्यालयीय / महाविद्यालयीय / विभागीय स्तर पर राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रमों में सहभागिता एवं प्रतिवेदन लेखन।
- शिक्षण सामग्री आधारित प्रदर्शनी का आयोजन।
- जन जागरूकता हेतु नाट्य कार्यक्रमों का आयोजन।
- राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम संचालन एंव प्रतिवेदन लेखन।
- वार्षिक खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन एवं प्रतिवेदन लेखन।

उपर्युक्त गतिविधियों में से पाँच (05) गतिविधियों में सम्बद्ध विद्यालय स्तर तथा पाँच (05) गतिविधियों में सम्बद्ध विश्वविद्यालय / विभाग / महाविद्यालय स्तर पर सक्रिय सहभागिता तथा प्रतिवेदन लेखन सभी प्रशिक्षणार्थियों के लिए अनिवार्य होगा। चयनित गतिविधियों को क्रमशः शिक्षाशास्त्री के दोनों वर्षों (प्रथम व द्वितीय) में दोनों स्तरों (सम्बद्ध विद्यालय स्तर पर तथा विश्वविद्यालय / विभाग / महाविद्यालय स्तर पर) न्यूनतम 5–5 की संख्या में सभी छात्रों को अनिवार्य रूप से पूर्ण करना होगा।

व्यावसायिक अभिक्षमता विकास हेतु आयोज्य शैक्षिक गतिविधियाँ :–

ई.पी.सी.–3 सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी का अवबोध

सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी के ज्ञान की प्रायोगिक परीक्षा एवं प्रायोजना कार्य निम्नलिखित पाठ्य बिन्दुओं पर आधारित होंगे। इसके लिए महाविद्यालय / विभाग स्तर पर कक्षाओं का आयोजन अनिवार्य होगा तथा इसमें बाह्य प्रायोगिक परीक्षा भी आयोजित होगी इसका आयोजन वि.वि. द्वारा नियुक्त बाह्य परीक्षक द्वारा किया सकेगा। आन्तरिक परीक्षण निम्नोक्त पाठ्य बिन्दुओं पर आधारित परियोजना कार्य द्वारा पूरा किया जा सकेगा।

कम्प्यूटर – अभिप्रायः घटक – इनपुट, आउटपुट,सेन्ट्रल प्रोसेसिंग (C.P.U) कार्यप्रणाली–एप्लीकेशन तथा सिस्टम सॉफ्वेयर कम्प्यूटर नेटवर्क–अभिप्राय आवश्यकता एवं प्रकार (LAN,MAN&WAN) शैक्षिक उपयोगिता।

इन्टनेट– अभिप्राय,कार्यविधि,इन्टरनेट प्रोटोकॉल(फाइल ट्रांसफर प्रोटोकॉल एवं FTP हाहपर टैक्यट ट्रांसफर प्रोटोकॉल FTTP) शैक्षिक उपयोग।

ई.मेल–अभिप्राय,कार्यविधि एवं शैक्षिक उपयोग –

कप्म्यूटर आधारित अधिगम–

ई–अधिगम–अभिप्राय,विशेषताएँ विभिन्न प्रारूप (अवलम्ब– Support मिश्रित– Blended सम्पूर्ण– Complete) शैलियॉ (एसिन्क्रोनस एवं सिन्क्रोनस सम्प्रेषण शैलियॉ) लाभ एवं दोष।

कम्प्यूॅटर सहायक अनुदेशन (CAT) अभिप्राय,मान्यताएं,प्रयुक्त तकनीकी(हार्डवयेर एवं कार्सवेयर) एव शैक्षिक उपयोग।

कम्प्यूॅटर प्रबंधित अनुदेशन (CBI) अभिप्राय एवं शैक्षिक उपयोग।

सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी – अभिप्राय,प्रकार (परम्परागत एवं आधुनिक) शैक्षिक उपयोगिता।

सम्प्रेषण– अभिप्राय प्रक्रिया,विभिन्न माध्यम,प्रकार,बाधकतत्व।

टेलिकानफ्रेंसिग – अभिप्राय प्रकार (ऑडियो,वीडियो एवं कम्प्यूटर) लाभ।

एम.एस.ऑफिस –

एम.एस.वर्ड (M.S.Word) **–** अभिप्राय,डाक्यूमेंट विन्डो (घटक,टूलबार,बटन,स्टेन्डर्ड एवं फार्मेटिंग टूलबार बटन) डाक्यूमेंट (क्रियेट,ओपन एवं सेव) टेक्स्ट,एडिट,कट,कॉपी,पेस्ट,फार्मेटिंग)।

एम.एस.पावर पाइन्ट (M.S.Power Point) – अभिप्राय,घटक,स्लाइड निर्माण,अभिकल्पन एवं प्रस्तुतीकरण,शैक्षिक उपयोग।

एम.एस.एक्सल (M.S.Excel) – अभिप्राय,अभिप्राय,घटक,स्प्रेडशीट,वर्कशीट,शैक्षिक उपयोग।

ई.पी.सी.–4 (अ) छात्र व्यक्तित्व अवबोध

शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष ई.पी.सी.–4 (छात्र व्यक्तित्व अवबोध) के विकास हेतु – बालविकास प्रक्रिया वृद्धि और विकास, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, बालविकास पर सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिवेष का प्रभाव, वैयक्तिक विभिन्नताएँ, व्यक्तित्व विकास, व्यक्तित्व के प्रभावक तत्व। बाल–केन्द्रित शिक्षा, खेलविधि का प्रभाव आदि विषयों में से किन्हीं दो पर प्रायोजना कार्य/समूह–परिचर्चा/वाद–विवाद तथा प्रतिवेदन लेखन।

ई.पी.सी.–4 (ब) आत्मबोध

शिक्षाशास्त्री द्वितीय वर्ष ई.पी.सी.–4 (आत्मबोध) के सम्पादन हेतु शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया, प्रेक्षण कार्य, मूल्यांकन कार्य, निर्णय प्रक्रिया, स्वतंत्र निर्णय लेना, अध्यापन व्यवसाय, सामाजिक–दायित्व और आयु, अध्यापकीय गुण, आत्म–नियन्त्रण, आत्म–सम्प्रत्यय, व्यक्तित्व का मनोवैज्ञानिक स्वरूप आदि विषयों में से किन्हीं दो पर समूह परिचर्चा, वाद–विवाद का आयोजन तथा प्रतिवेदन लेखन।